खंड 2

पर्यावरण-व्यवहार संबंध

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 पर्यावरण-व्यवहार संबंध के सिद्धांत*

इकाई की रूपरेखा

3.0 प्रस्तावना

3.1 पर्यावरण-व्यवहार संबंध की प्रकृति और कार्य

3.2 पर्यावरण मनोविज्ञान के सिद्धांत

- 3.2.1 ऐतिहासिक प्रभाव
- 3.2.2 उत्तेजन सिद्धांत
- 3.2.3 उद्दीपन भार सिद्धांत
- 3.2.4 व्यवहार बाध्यता सिद्धांत
- 3.2.5 अनुकूलन स्तर सिद्धांत
- 3.2.6 पर्यावरणीय तनाव सिद्धांत
- 3.2.7 पारिस्थितिक सिद्धांत

3.3 पर्यावरण-व्यवहार संबंध के सिद्धांतों की आलोचनात्मक तुलना

3.4 पर्यावरण मनोविज्ञान में शोध

3.5 सारांश

3.6 मुख्य शब्द

3.7 समीक्षा प्रश्न

3.8 संदर्भ एवं अन्य पाठ्य सामग्री

3.9 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप समक्ष होंगेः

- पर्यावरण-व्यवहार संबंध की प्रकृति और कार्यों की व्याख्या करने में;
- पर्यावरण-व्यवहार संबंध से संबंधित विभिन्न सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों का वर्णन करने में;
- यह चर्चा करने में कि पर्यावरण-व्यवहार संबंध कैसे मानव व्यवहार को नियंत्रित करता है; और
- विभिन्न संस्कृतियों में पर्यावरण मनोविज्ञान में शोध प्रवृत्तियों की सराहना करने में।

*शुवब्रत पोद्दार, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल, पश्चिम बंगाल

3.0 प्रस्तावना

हम अधिकांशतः पर्यावरण मनोविज्ञान को एक बहु-विषयक प्रतिमान के रूप में संदर्भित करते हैं जिसका अध्ययन के अन्य क्षेत्रों में उल्लेख मिलता है। 1960 के दशक में पर्यावरण की अधोगति से बेचैन विद्धानों के कारण इस विषय का उद्‌भव हुआ। विकास और लोगों के मौजूदा आचरण में पर्यावरण एक प्रमुख कारण था। भौतिक पर्यावरण और मानव व्यवहार के बीच संबंधों की जाँच करने के लिए विद्धानों ने वैज्ञानिक पद्धतियों का विकास किया। इसने विभिन्न प्रतिमान और सिद्धांत भी विकसित किए। यह इकाई पर्यावरणीय मनोविज्ञान की प्रकृति और कार्यक्षेत्र पर चर्चा करेगी। यह पर्यावरणीय व्यवहार के सिद्धांतों और प्रतिमानों की भी व्याख्या करेगी।

3.1 पर्यावरण-व्यवहार संबंध की प्रकृति और कार्य

यह वास्तव में आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि 'पर्यावरण' शब्द में विशिष्टता का अभाव है। इतिहासकारों, जीवविज्ञानियों, वास्तुविदों, समाजशास्त्रीयों और मनोवैज्ञानिकों आदि ने अपने विषयों में रुचि के चरों को परिभाषित करने के लिए विशिष्ट शब्द का उपयोग किया है। इतिहासकारों ने पर्यावरणीय युगचेतना, जीवविज्ञानियों ने पारिस्थिकीय आवास, वास्तुविदों ने डिज़ाइन की विशेषताओं और अर्थशास्त्रियों ने मांग-आपूर्ति के अनुपात के द्वारा मानव व्यवहार पर भारी प्रभावों की व्याख्या की है। जबकि ''पर्यावरण'' शब्द में विशिष्टता का अभाव है, फिर भी उन मान्यताओं के बारे में स्पष्टता संभव है जो इसके अध्ययन का आधार है। जिन मान्यताओं को हम सभी पर्यावरणीय विज्ञान में अन्तर्निहित मानते हैं, इसके विशिष्ट अभिमुखीकरण से स्वतंत्र, वे हैं:

1) पृथ्वी ही हमारे पास एक उपयुक्त आवास है;
2) पृथ्वी के संसाधन सीमित हैं;
3) पृथ्वी एक ग्रह के रूप में मानव जीवन से गहराई से प्रभावित रही है और अब भी प्रभावित हो रही है।
4) मनुष्यों द्वारा भूमि उपयोग के प्रभाव संचयी होते हैं;
5) पृथ्वी पर सतत् जीवन पारिस्थितिक तंत्र की विशेषता है, न कि व्यक्तिगत जीवों या उनकी आबादी की।

इन मान्यताओं में निहित व्यक्तियों और उनके पर्यावरण के बीच मौजूद नाजुक संबंधों को समझने, अनुभव करने और बनाए रखने में न केवल बहुविषयक बल्कि अन्तःविषयक रणनीतियों, पद्धतियों और दार्शनिक परिप्रेक्ष्यों के लिए भी एक आवाहन है।

1) हमारे पास पृथ्वी ही एकमात्र उपयुक्त आवास स्थल है, और इसके संसाधन सीमित हैं। पृथ्वी के पूरे इतिहास में जीवन के विभिन्न रूप आरंभ हुए, विकसित हुए, फले-फूले और समाप्त हो गये। इसमें मनुष्यों का वर्तमान प्रभुत्व

एक बहुत ही नया विकास है। लेकिन, इस वर्तमान प्रभुत्व के बावजूद हमें दो मूलभूत सत्यों का सामना करना होगाः

क) मनुष्य भी भूगभिक, मौसम विज्ञान-संबंधी या अन्तर तार्किय प्रलय, प्राकृतिक जैविक प्रक्रियाओं, आन्तरिक झगड़ों के माध्यम से, या पृथ्वी के संसाधन जब अपने वर्तमान स्वरूप में मानव जीवन का समर्थन नहीं कर पाएंगे, विलुप्ती का शिकार होंगे।

ख) हालांकि ब्रह्मण्डीय समुद्र में अन्य आवास योग्य द्वीप हो सकते हैं लेकिन वे ब्रह्मंड में इतनी अधिक दूरी पर स्थित हैं कि मानव अस्तित्व के लिए लगभग अप्रासंगिक हैं।

इन निश्चिताओं के बावजूद पृथ्वी हम जीवित लोगों के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमें इन अवसरों और सीमाओं के साथ जीना सीखना चाहिए जो पृथ्वी प्रदान करती है, इस कठोर तथ्य के साथ कि गतिशील मानव अस्तित्व को जारी रखा जा सके। पर्यावरण मनोविज्ञान का नया उभरता हुआ क्षेत्र सूचना प्रदान करने का वादा करता है जो पृथ्वी पर निरंतर मानव अवधि की अनुभूति देगा।

2) जीवन के रूप में पृथ्वी ने इस ग्रह को गहराई से प्रभावित किया है। इस ग्रह के परिदृश्य में मानव योगदान हर जगह हैंः ऊँची गगनचुंबी इमारतें, राजमार्गों के जटिल संजाल और बिजली के तारों के जाल, मानव निर्मित झीलें और ऊँची उड़ान भरने वाले जेट विमानों के वाष्प पथ मानव उपस्थिति की निरंतर याद दिलाते हैं। इसके अधिक सूक्ष्म सकें तक वायुमंडल की रासायनिक संरचना की बदलती गुणवत्ता, पृथ्वी की ऊपरी सतह में भूगर्भिक परिवर्तन, जल विज्ञान प्रक्रियाओं में अभियांत्रिकीय परिवर्तन और ग्रह को आच्छादित करने वाले जल में रासायनिक परिवर्तन हैं।

वनों की कटाई, भूमि की जुताई, राजमार्गों की काली सड़कें और पार्किंग स्थल न केवल पृथ्वी को दृष्टिगत रूप से प्रभावित करते हैं बल्कि वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा, पृथ्वी की सतह के प्रकाश को प्रतिबिंबित और अवशोषित करने वाली विशेषताओं और जल निकासी प्रारूप को भी बदलते हैं। ये परिवर्तन ऊष्णता और शीतलन की दर को, और इसलिए, पृथ्वी और उसके वायुमंडल के तापमान को प्रभावित करते हैं। मनुष्यों ने, इस प्रकार, मौसम और जलवायु को प्रभावित किया है। मनुष्य कैसे पृथ्वी की प्राकृतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं इसकी अधिक गहरी समझ हमारे लिए अधिक बुद्धिमान और जीवन-रक्षक व्यवहार को बढ़ावा देगी।

पर्यावरण मनोविज्ञान में 'पर्यावरण' शब्द को विश्व की एक मूर्त्त और कल्पित व्याख्या के रूप में संदर्भित किया जाता है, जिसमें वास्तुशिल्प-संबंधी और सामाजिक परिवेश, दोनों, शामिल हैं। इसमें प्राकृतिक पर्यावरण, सामाजिक परिवेश और निर्मित पर्यावरण के साथ-साथ अधिगम और सूचनात्मक पर्यावरण को भी सम्मिलित किया गया है। यह एक अन्तःविषयक क्षेत्र है जो मनुष्यों और उनके परिवेशों पर प्रकाश डालता है। यह हमारे पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों के लिए शारीरिक और

मानसिक रूप से हमें अनुकूलित करने की क्षमता से भी संबंधित है। इसके अलावा, पर्यावरणीय मनोविज्ञान एक बहु-विषयी प्रतिमान है जो अन्य विषयों के लोगों के ज्ञान से बहुत कुछ ग्रहण करता है। यह भूगोलवेत्ताओं, अर्थशास्त्रियों, मानव वैज्ञानिकों, शिक्षकों आदि के निष्कर्षों पर निर्भर करता है। पर्यावरण मनोविज्ञान मानव कारक विज्ञान या संज्ञानात्मक श्रमदक्षता शास्त्र, या पर्यावरण सामाजिक विज्ञान के रूप में भी लोकप्रिय है।

यह अलग-अलग मुद्दों की जाँच-पड़ताल करता है जो अत्यंत महत्वपूर्ण के हैं। कुछ मुद्दे यहाँ सूचीबद्ध हैं:

- सामान्य संपत्ति संसाधन प्रबन्धन
- मानव निष्पादन/प्रदर्शन पर पर्यावरणीय तनाव का प्रभाव
- पुनर्स्थापनात्मक पर्यावरण की विशेषताएँ
- मानव सूचना प्रसंस्करण
- स्थायी संरक्षण व्यवहार को प्रोत्साहन देना

पर्यावरण मनोविज्ञान का मानना है कि हमें विकास और लोगों के मौजूदा आचरण में पर्यावरण की व्याख्या एक प्रमुख कारक के रूप में करनी चाहिए।

1) पर्यावरण मनोविज्ञान पर्यावरण पर अधिक ध्यान देता है जिसने केवल सूक्ष्म स्तर के उद्दीपनों/उत्तेजनाओं और घटनाओं, जैसे लोगों के घरों, आस-पड़ोस व कार्य-स्थलों और सामुदायिक पतिस्थितियों पर ध्यान केन्द्रित करता है।

2) कर्ट लेविन का क्रियात्मक शोध उन्मुखीकरण (1946) अधिक व्यवहारिक लक्ष्य के साथ लोगों के और उनके पर्यावरणीय अंतःक्रिया के लिए वैज्ञानिक लक्ष्य निर्धारित करता है। यह प्रभावी नियोजन के माध्यम से लोगों के उनके पर्यावरण के साथ संबंधों को सुधारता है और संवर्धित करता है।

3) पर्यावरण मनोविज्ञान मानव व्यवहार और पर्यावरण के अध्ययन के लिए बहु-विषयी दृष्टिकोण है। चूंकि यह लोगों के भौतिक पर्यावरण के साथ संबंधों की गुणवत्ता का विश्लेषण और वृद्धि करने पर केन्द्रित है, इसमें वास्तुकला, शहरी नियोजन, मनोविज्ञान, मानव विज्ञान, समाजशास्त्र, भूगोल और अन्य क्षेत्रों के परिप्रेक्ष्य भी शामिल हैं।

सुचित्रण/चित्रांकन व्यवसायों के लिए पर्यावरण मनोविज्ञान का मौलिक महत्व मानव व्यवहार और निर्मित पर्यावरण में अनुभवों के बीच संबंधों को समझने के लिए अवधारणात्मक और अनुभवजन्य ज्ञान प्रदान करने की संभावित क्षमता में निहित है' (होरायंगकुरा, 2012)।

इस प्रकार, हम पर्यावरण मनोविज्ञान को लोगों और उनके भौतिक परिवेश (निर्मित और प्राकृतिक पर्यावरण सहित) के बीच लेन-देन और अन्तर्संबंधों, प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग एवं दुरुपयोग और संधारणीयता से संबंधित व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1) पर्यावरण मनोविज्ञान की मान्यताएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

2) पर्यावरण-व्यवहार संबंध का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

3.2 पर्यावरण मनोविज्ञान में सिद्धांत

एक ओर पर्यावरणीय मनोविज्ञान की अन्तःविषयी प्रकृति प्रशंसनीय है क्योंकि यह एक ही घटना को समझने के लिए विभिन्न परिप्रेक्ष्यों का इस्तेमाल करती है, जिससे यह आशा की जाती है कि कुछ ''सुरंग-दृष्टि'' सिद्धांतों और प्रयोज्य समाधानों का मार्ग प्रशस्त होगा। यह बहुलता ही इस ज्ञान के व्यवस्थित अनुप्रयोग और अच्छी तरह से व्यक्त एकीकृत सिद्धांतों के विकास में कठिनाइयों को जन्म देती है।

3.2.1 ऐतिहासिक प्रभाव

कई सिद्धांतों ने मनोविज्ञान के विषय के भीतर और बाहर से पर्यावरण मनोवैज्ञानिकों की सोच को प्रभावित किया है। इनमें से कुछ सिद्धांत बहुत व्यापक हैं, जबकि अन्य का ध्यान अधिक केन्द्रित है; कुछ में अनुभवजन्य आधार की कमी है और अन्य आंकड़ों पर अधिक आधारित हैं। पर्यावरण-व्यवहार संबंधों के वर्तमान सिद्धांतों पर विचार के लिए संदर्भ प्रदान करने के लिए हम उनमें से कुछ की समीक्षा करेंगे। इन परिप्रेक्ष्यों में शामिल हैं: भौगोलिक निर्धारणवाद, पारिस्थितिक जीवविज्ञान, व्यवहारवाद और गेस्टॉल्ट मनोविज्ञान।

कुछ इतिहासकारों और भूगोलवेत्ताओं ने पर्यावरणीय विशेषताओं के आधार पर संपूर्ण सभ्यताओं के उत्थान और पतन का वर्णन करने का प्रयास किया है। उदाहरण के लिए, टोयंबी (1962) ने प्रतिपादन किया कि पर्यावरण (विशेष रूप से स्थलाकृति, जलवायु, वनस्पति, पानी की उपलब्धता आदि) इसके निवासियों के लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। अत्यधिक पर्यावरणीय चुनौती सभ्यता को विनाश की ओर ले जाती है, जबकि नगण्य चुनौती संस्कृति को गतिहीनता की ओर ले जाती है। इस प्रकार, टोयंबी ने प्रस्तावित किया कि पर्यावरणीय चुनौतियों का एक मध्यवर्ती स्तर सभ्यताओं के विकास को बढ़ाता है और अत्यन्त कम या अत्यधिक स्तर का प्रभाव कमज़ोर करने वाला होता है। पर्यावरणीय चुनौती और व्यवहारात्मक प्रतिक्रिया की अवधारणा हालांकि ऐसे भौगोलिक निर्धारणवादियों की सोच में निहित है, परन्तु यह अक्सर पर्यावरणीय मनोविज्ञान में विभिन्न सिद्धांतों में एक या दूसरे रूप में प्रकट होती है।

एक उदाहरण के रूप में, बैरी, चाइल्ड, और बेकन (1959) ने सुझाव दिया कि कृषि आधारित, ग़ैर-खानाबदोश संस्कृतियां, शिशु के पालन-पोषण की प्रथाओं में उत्तरदायित्व, आज्ञाकारिता और अनुपालन पर ज़ोर देती हैं। जबकि खानाबदोश संस्कृतियां अक्सर स्वतंत्रता और संसाधन सम्पन्नता पर ज़ोर देती हैं। वे सुझाव देते हैं कि ये अन्तर, इस तथ्य का परिणाम हैं कि जो लोग संगठित, ग़ैर-गतिशील समुदायों में एक साथ रहते हैं और कार्य करते हैं उन्हें एक अधिक संरचित संगठन की आवश्यकता होती है और इसलिए वे आज्ञाकारिता और अनुपालन के महत्व पर ज़ोर देते हैं। खानाबदोश लोग द्वारा बदलते पर्यावरण और उसकी अप्रत्याशित माँगों का सामना करने की तैयारी में स्वतंत्रता और संसाधन सम्पन्नता को मन में बैठाते हैं। इस प्रकार, यह तर्क दिया गया है कि पर्यावरण संस्कृतियों के विकास के लिए एक मंच तैयार करता है जिसमें जीवित रहने का सबसे अच्छा संयोग होता है।

यह इस बात से अलग नहीं हैं कि पृथक-बस्ती संस्कृति अपने निवासियों में कौशल का एक संग्रह/समूह विकसित करती है जो पृथक-बस्ती के लिए सबसे उपयुक्त होता है। यदि कोई सड़क पर लड़ाई करने की कला में कुशल नहीं है तो शायद सड़कों के पर्यावरण में उसके जीवित रहने या बचने की संभावना नहीं है। हम इस इकाई में बाद में देखेंगे कि कुछ लोगों ने इस तर्क को एक निर्वायक बिन्दु तक पहुँचाया और किस प्रकार अन्य संस्थागत पर्यावरण उनके निवासियों में विकसित होते हैं जो इन पर्यावरणों के लिए स्पष्ट रूप से जीवित रहने को प्रमाणित करते हैं परन्तु एक व्यापक पर्यावरण में उचित समायोजन प्रदान नहीं करते।

पारिस्थितिक सिद्धांतों के विकास, जीवों और उनके पर्यावरण के बीच जैविक और समाजशास्त्रीय पारस्परिक निर्भरता से संबंधित सिद्धांतों ने भी पर्यावरण मनोविज्ञान में सोच को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। पारिस्थितिक विज्ञान के विकास के साथ जीवों को अब पर्यावरण से अलग नहीं देखा गया बल्कि वे इसके अभिन्न अंग के रूप में दर्शाए गए हैं। जीव-पर्यावरण पारस्परिकता की यह धारणा अब कई वर्तमान पर्यावरण-व्यवहार सिद्धांतों में प्रकट होती है। पर्यावरण और उसके निवासियों का अभी भी अक्सर अलग-अलग घटकों के रूप में अध्ययन किया जाता है लेकिन कोई भी उनकी पारस्परिक निर्भरता पर संदेह नहीं करता है। ये विभिन्न घटक एक संपूर्ण प्रणाली का निर्माण करते हैं और इन घटकों के बीच अन्तःक्रिया को परिवर्तन के लिए उत्तरदायी माना जाता है।

3.2.2 उत्तेजन सिद्धांत

उत्तेजन सिद्धांत आमतौर पर कार्य निष्पादन/क्रियान्वन/प्रदर्शन पर उत्तेजन के प्रभाव से संबंधित होते हैं। वे उत्तेजन के मध्यवर्ती स्तरों पर कार्य प्रदर्शन को अधिकतम बनाते हैं लेकिन यह उत्तेजन के बढ़ने या घटने पर गिर जाते हैं। इस संबंध को कभी-कभी 'उल्टा-यू' संबंध के के रूप में संदर्भित किया जाता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कार्य निष्पादन को सरल या जटिल कार्यों पर मापा जाता है या नहीं (चित्र 3.1 देखें) और इसे अधिकाशतः यरकेस-डोडसन नियम के रूप में संदर्भित किया जाता है। ये संबंध अन्य निष्कर्षों के रूप हैं कि मनुष्य उत्तेजना के मध्यवर्ती स्तरों को तलाश करते हैं (बर्लीन, 1974) और टोयन्बी के उस दावे की याद दिलाते हैं जिसका इस इकाई में पहले उल्लेख किया गया था कि

संस्कृतियाँ केवल ऐसे पर्यावरण में विकसित होती हैं जो मध्यवर्ती स्तर की चुनौतियाँ प्रदान करता है।

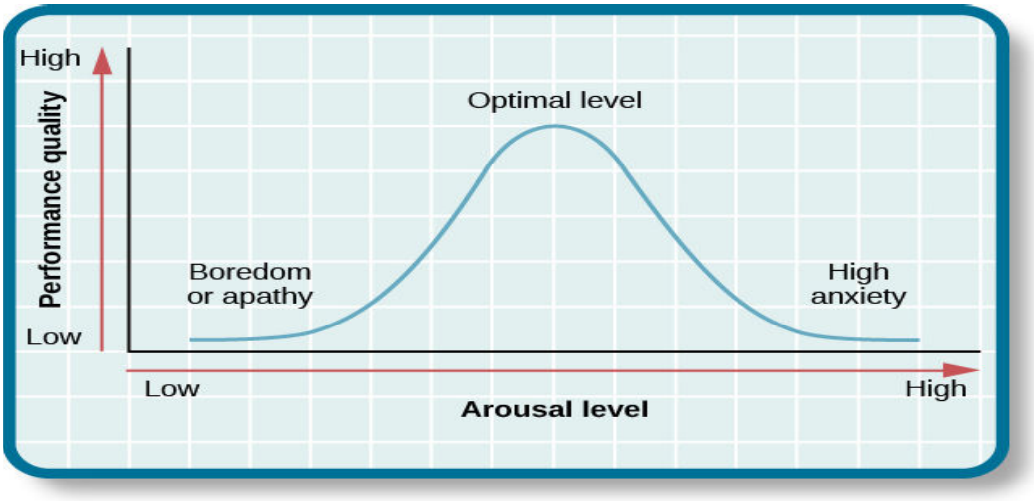

चित्र 3.1 यरक्स डोडसन नियम

इस सिद्धांत ने यह भी दर्शाया है कि कार्य निष्पादन के परिवर्तन तापमान में वृद्धि के साथ वक्रीय गति को दर्शाते हैं। इन निष्कर्षों की एक व्याख्या यह भी है कि परिवेश/पर्यावरण के तापमान में वृद्धि से उत्तेजन के स्तर में वृद्धि होती है। प्रारंभ में, उच्च उत्तेजना स्तर कार्य निष्पादन में वृद्धि की ओर ले जाता है लेकिन जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है अति उत्तेजन होता है जिससे कार्य निष्पादन में कमी आती है। इसी तरह, यह दिखाया गया है कि व्यक्तिगत स्थान पर आक्रमण से उत्तेजना में वृद्धि होती है (मिडिलमिस्ट, नोल्स एंड मैटर, 1976) और कार्य निष्पादन में कमी (इवांस व हॉवर्ड, 1972; मेकब्राइड, किंग व जेम्स, 1965)। शोर-शराबे के स्तर में वृद्धि को उत्तेजन और कार्य निष्पादन में बदलाव से संबंधित पाया गया है (इंवास व कोहेन, 1987)। इस प्रकार उत्तेजन में बदलाव से जुड़े कई चर कार्य निष्पादन में बदलावों से संबंधित हैं और कार्य निष्पादन का उत्तेजन से संबंध लगातार वक्रीय रहा है।

उत्तेजन के परिप्रेक्ष्य का उपयोग करने वाले अन्य सिद्धांतकारों ने पर्यावरणीय उत्तेजना के लिए शरीर-क्रियात्मक प्रतिक्रियाओं को चित्रित किया है। हृदय गति, रक्त चाप, श्वसन दर, त्वचा प्रतिक्रिया और ऐड्रेनलिन स्त्राव में परिवर्तन आदि पर्यावरण में परिवर्तन के साथ होते दर्शाए गए हैं। पर्यावरण के तापमान में वृद्धि से रक्त वाहिका फैलाव, पसीना आना, हृदय गति में वृद्धि और चरम स्थितियों में रक्तचाप कम हो जाता है और मस्तिष्क को अर्प्याप्त ऑक्सीजन की आपूर्ति होती है। इसने व्यक्तिगत स्थान में लंघन को पुरुषों में परिपक्वता की कम अवधि और उसके देर से शुरू होने को जोड़कर देखा है और शोर के संपर्क में आने से रक्तचाप, हृदय की लय और अमाशय में पाचक रसों का प्रवाह बदल जाता है।

हेब (1972) जैसे तंत्रिका वैज्ञानिकों ने उत्तेजन को मस्तिष्क के सक्रिय करने वाले जालीदार तंत्र की बढ़ी हुई गतिविधि से जोड़ा है। फिर भी, अन्य सिद्धांतकारों ने उत्तेजन को प्रेरक पेशी की गतिविधि में परिवर्तन या उत्तेजन के आत्मजान के समान माना है। उदाहरण के लिए, बर्लिन (1974) ने उत्तेजन को एक छोर पर नींद और दूसरे छोर पर उत्तेजना के सातत्य के रूप में परिलक्षित किया है, और मेहर

बीयन और रसेल (1974) ने लोगों की अपने पर्यावरण के प्रति संवेदात्मक प्रतिक्रियाओं में एक प्रमुख घटक के रूप में उत्तेजन की पहचान की है।

उत्तेजन से संबंधित अभिविन्यास से स्वतंत्र कई संगतियाँ स्पष्ट हैं:

1) पर्यावरण में परिवर्तन के साथ उत्तेजन में जुड़े परिवर्तन

2) सुखद उद्दीपन के साथ-साथ अप्रिय उद्दीपन उत्तेजन को बढ़ाता है अर्थात 100 डिग्री फ़ारेनहाइट से ऊपर एक कक्ष का तापमान और अप्रिय शोर उत्तेजन को उसी तरह प्रभावित करता है जैसे रोलर कॉस्टर की सवारी और ऐसी अन्य उद्दीपन की स्थितियां उत्तेजन को प्रभावित करती हैं।

3) उत्तेजन में परिवर्तन लोगों को अपनी आन्तरिक स्थितियों के बारे में जानकारी लेने (स्क्केटर व सिंगर, 1962) के साथ-साथ दूसरों से जानकारी लेने के लिए प्रेरित करता है (फ़ेसटिंगर, 1954)।

4) लोग उत्तेजन के मध्य स्तर का सकारात्मक मूल्यांकन करते है।

5) अधिकतर, व्यक्तियों द्वारा पर्यावरण को मध्यम उत्तेजन के स्तर पर लाने के लिए अधिक ऊर्जा का व्यय किया जाता है।

कार्य निष्पादन को उत्तेजन के मध्यवर्ती स्तरों पर सरल और जटिल, दोनों, कार्यों के लिए सर्वोत्तम होने का अनुमान लगाया गया है। मध्य/सामान्य स्तर से ऊपर उत्तेजन कार्य निष्पादन को गिरावट की ओर ले जाता है।

उत्तेजन स्तर को प्रभावित करने वाले कारक

इस बिन्दु को आगे बढ़ाते हुए, विभिन्न शोधकर्ताओं ने उत्तेजन के स्तर पर विभिन्न पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव की पहचान करने का प्रयास किया है:

क) तापमान: परिवेश के तापमान में वृद्धि से उत्तेजन के स्तर में वृद्धि होती है। आमतौर पर उत्तेजन से कार्य निष्पादन में वृद्धि होती है लेकिन जैसे-जैसे यह बढ़ता है और अति उत्तेजन होता है कार्य निष्पादन में कमी आती है। परिवेश के तापमान में वृद्धि से निम्नलिखित शरीर-क्रियात्मक परिवर्तन होते हैं: रक्त वाहिकाओं का फैलाव, आंख की पुतली का फैलाव, पसीना आना, हृदय गति में वृद्धि। चरम् स्थितियों में रक्त चाप कम हो जाता है और मस्तिष्क तक अर्प्याप्त ऑक्सीजन पहुंचती है।

ख) वैयक्तिक दूरी में लघंन: इस स्थिति में उत्तेजन में वृद्धि होती है और कार्य निष्पादन में कमी आती है (मिडिल मिस्ट, नोल्स और मैटर, 1976)।

ग) शोर का स्तर: शोर के स्तर में वृद्धि से उत्तेजन में वृद्धि और कार्य निष्पादन में कमी होती है (इंवास और कोहेस, 1987)। यह रक्तचाप, हृदय की लय और अमाशय में पाचक रसों के प्रभाव को बदल देता है।

उत्तेजन और तंत्रिका प्रणाली

इसने उत्तेजन को मस्तिष्क की जालीदार सक्रिय तंत्र प्रणाली की बढ़ी हुई गतिविधि और पर्यावरण में परिवर्तन के साथ उत्तेजन से संबंधित परिवर्तनों से जोड़ कर देखा। सुखद और साथ-ही-साथ अप्रिय उद्दीपन उत्तेजन को बढ़ाता है, यानि अगर

कमरे का तापमान 100 डिग्री फ़ारेनहाइट से ऊपर हो। उत्तेजन में परिवर्तन लोगों को अपनी आंतरिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। लोग मध्यम स्तर के उत्तेजन को सकारात्मक रूप से देखते हैं। पर्यावरण को मध्यम स्तर के उत्तेजन तक लाने के लिए व्यक्ति काफ़ी अधिक व्यय करते हैं।

3.2.3 उद्दीपन भार सिद्धांत

उद्दीपन भार सिद्धांत की केन्द्रीय धारणा है कि मनुष्यों के पास सूचना को संसाधित करने की सीमित क्षमता है। जब निविष्टियां उस क्षमता से अधिक हो जाती हैं तो लोग कुछ निविष्टियों को अनदेखा कर देते हैं और अन्य निविष्टियों पर अधिक ध्यान देते हैं (कोहेन, 1978)। ये सिद्धांत अपने परिवेश की मुख्य विशेषताओं पर ध्यान देने और उनसे निपटने के लिए जीव की क्षणिक क्षमता के संदर्भ में पर्यावरणीय उद्दीपन के प्रति प्रतिक्रियाओं के लिए ज़िम्मेदार हैं। कार्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण उद्दीपन ध्यान के केन्द्र में होते हैं जबकि अन्य हाशिये पर। उदाहरण के लिए, भारी यातायात के दौरान गाड़ी चलाते समय हम अपने आसपास के वाहनों व सड़क के संकेतों पर ध्यान देते हैं और हम कार रेडियो पर भाष्यकार, पिछली सीट पर बैठे लोगों और आकाश में बादलों पर कम ध्यान देते हैं। यदि कम महत्वपूर्ण उद्दीपन हमारे तत्कालिक काम में बाधा डालते हैं तो उन्हें अनदेखा करने से कार्य निष्पादन में वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए, बच्चों की लड़ाई को अनदेखा करने से आप एक बेहतर और भीड़भाड़ में सुरक्षित वाहन चालक बन जायेंगे। यदि, तथापि कार्य के लिए कम महत्वपूर्ण उद्दीपन महत्वपूर्ण हैं, तो कार्य निष्पादन इष्टतम् नहीं होगा। उदाहरण के लिए, सड़क के संकेतों को अनदेखा करना क्योंकि आप अधिक महत्वपूर्ण ट्रकों, कारों आदि पर ध्यान दे रहें हैं तो यह आपके घर पहुंचने के रास्ते से आपको तीस मील दूर ले जा सकता है।

कभी-कभी पर्यावरण से निपटने के लिए जीव की क्षमता पर अधिक भार पड़ता है या यह समाप्त भी हो जाती है। जब ऐसा होता है तो हम केवल सबसे महत्वपूर्ण जानकारी पर ध्यान देते हैं, अन्य सभी सूचनाओं को एक तरफ़ कर दिया जाता है। एक बार ध्यान की क्षमता समाप्त हो जाने के बाद छोटी बातों पर ध्यान देना भी कष्टदायक हो सकता है। इस प्रकार व्यवहारात्मक बाद के प्रभावों, जैसे निर्णय में त्रुटियाँ, हताशा के लिए सहनशीलता की कमी, दूसरों की मदद की ज़रूरत की अनदेखी आदि, को इन सिद्धांतों द्वारा समझाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, भीड़ के समय थका एक चालक उस बिन्दु तक पहुंच सकता है जहां वह ट्रैफिक-लाइट के लाल से हरे होने पर ध्यान ना दे (या इससे भी बदतर, हरे से पीले या लाल होने पर ध्यान ना दे), भले ही यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्दीपन है। हताशा के प्रति सहनशीलता की कमी से ''लगातार हॉर्न बजाना'' और ''मार्ग/वीथिका को अचानक बदलना'' हो सकता है और ब्रेक-डाउन लेन में मोटर चालकों को नज़रअंदाज किया जा सकता है, यदि उन्हें तिरस्कार के साथ ना भी देखा जाए।

उद्दीपन भार सिद्धांत उद्दीपन-वंचित पर्यावरण में व्यवहारात्मक प्रभावों को भी समझा सकता है (उदाहरण के लिए, पंडुब्बियों और कारगारों में होने वाले कुछ मानव व्यवहार)। यह दृष्टिकोण बताता है कि कम उद्दीपन अधिक उद्दीपन की तरह प्रतिकूल हो सकता है। नीरस रहने की स्थिति से उत्पन्न तथाकथित केबिन ज्वर को भी कम उद्दीपन के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है।

वोहलविल (1966) ने तर्क दिया है कि पर्यावरण को तीव्रता, नवीनता, जटिलता, लौकिक भिन्नता, आश्चर्य और असंगति के आयामों के मापन के रूप में दर्शाया जाना चाहिए जो सभी उद्दीपन भार में योगदान देते हैं। बाद के व्यवहारों को व्यवस्थित और तुलनीय तरीकों से उद्दीपन के गुणों से संबंधित किया जा सकता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

1) उत्तेजन सिद्धांतों की मूल मान्यताएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) उद्दीपन भार सिद्धांतों के मूल आधार की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.2.4 व्यवहार बाध्यता सिद्धांत

व्यवहार बाध्यता सिद्धांत पर्यावरण द्वारा जीव पर लगाई गई वास्तविक या कथित सीमाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। इन सिद्धांतों के अनुसार पर्यावरण अपने निवासियों के व्यवहार को रोक सकता है, उनमें हस्तक्षेप कर सकता है या उन्हें सीमित कर सकता है (रोडिन और बॉम, 1978; स्टॉकोल्स, 1978)।

व्यवहारात्मक बाध्यता प्रतिमान/उपागम का विकास ब्रेहम (1965) के प्रतिक्रिया सिद्धांत से हुआ है जिसमें कहा गया है कि मनुष्यों में अपनी व्यवहारात्मक स्वतंत्रता को बनाए रखने की एक बुनियादी इच्छा है। एक पर्यावरण बाध्य करने वाला हो जाता है जब कोई चीज़ किसी व्यक्ति को उसके इरादों को प्राप्त करने से रोकती है या सीमित करती है। कुछ पर्यावरणीय स्थितियाँ जैसे शोर, भीड़भाड़, तापमान, एक जगह की स्थिति या विशेषताएँ जैसे खराब मौसम, बाधाएं, नियंत्रण जैसे वस्तुनिष्ट अनुभव आदि, व्यक्ति के लिए बाध्यता वाले माने जा सकते हैं। ऐसे में व्यक्ति स्थिति के स्वयं को नियंत्रण के बाहर अनुभव करता है। स्थिति को नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होने की यह भावना मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है (ब्रेहम, 1986)। वोर्टमेन और ब्रेहम (1975) का सुझाव है कि यदि विफलता या नियंत्रण की क्षति/अभाव लम्बे समय तक बिना किसी बहाली की संभावना के बनी रहती है तो व्यक्ति कोई भी महत्वपूर्ण प्रयास करना बन्द कर देगा और इस प्रकार एक असहाय अवस्था में प्रवेश करेगा।

ऐलन और ग्रीनबर्गर (1980) ने इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर कार्य किया और सुझाव दिया कि असहाय स्थिति में प्रवेश करने से पहले एक व्यक्ति अपने भौतिक पर्यावरण को बदलने का प्रयास करेगा, यदि सामाजिक पर्यावरण को बदलने के पिछले प्रयास सफल साबित नहीं हुए हों। उदाहरण के लिए, शोरगुल वाली कक्षा के पर्यावरण में पढ़ाने का प्रयोग करते समय शिक्षक शरारती विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर जाने के लिए कहने से पहले उन्हें शांत रहने का अनुरोध करते हैं। यह बदलाव यदि वैयक्तिकरण या किसी अन्य सामाजिक परिवर्तन के रूप में व्यक्त किया जाता है तो वह सामाजिक रूप से स्वीकृत और सौम्य तरीके से होगा, अन्यथा पर्यावरण को जानबुझकर क्षति पहुँचाने जैसे कड़े कारणों का भी सहारा ले सकता है। दंगों के दौरान विद्यालय के उपस्कर और स्विच बोर्ड को तोड़ना, सार्वजनिक संपत्ति को तोड़-फोड़ करना या उसे लूटना आदि कथित नियंत्रण के इन नकारात्मक रूपों के कुछ उदाहरण हैं।

यह भी सुझाव दिया गया है कि सीमा प्रणालियाँ एक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण हैं और कोई भी व्यक्ति एक निश्चित मात्रा में नियंत्रण हासिल करने के लिए कुछ नियामक/विनियामक प्रणाली स्थापित करता है। उदाहरण के लिए, जब कोई बातचीत के दौरान हमारे व्यक्तिगत स्थान का अतिक्रमण करता है तो हम एक कदम पीछे हटकर या अपनी बाँहें एक दूसरे पर चढ़ाकर जैसे व्यवहार प्रदर्शित करके उसे पुनः प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। हम कभी-कभी अतिक्रमण की संभावना को रोकने या कम करने के लिए एक व्यवस्था का आविष्कार कर सकते हैं। खाली उद्यान की बेंच के एक किनारे पर बैठना या यात्रा करते समय गलियारे की सीट पाने का प्रयोग करना अतिक्रमण को रोकने के उदाहरण है। हममें से बहुत कम लोग बीच की सीट में बैठेंगे या ऐसा अगर हम करते भी हैं तो हम अपने दोनों तरफ़ अपना निजी सामान फैला देते हैं।

व्यक्ति के दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू पर्यावरण को नियंत्रित करने की भावना है जो कल्याण की भावना को प्रेरित करती है। जब लोग शोरगुल की स्थिति में नियंत्रण का अनुभव करते हैं, जैसे इयर प्लग लगाकर (ग्लास व सिंगर, 1972); वे कम आक्रामक हैं (डोनरस्टीन व विल्सन, 1976); मोजर व लेवीलेबॉयर, 1985); और वे अधिक बार सहायक होते हैं (शेरोड व डाव्स, 1974)। इसके विपरीत, नियंत्रण की क्षति की अनुभूति मानव व्यवहार, हित और स्वास्थ्य पर नकारात्मक परिणामों की अभिव्यक्ति की ओर ले जाती है (बार्न्स, 1981)।

ऐवेरिल (1973) ने नियंत्रण की तीन श्रेणियों पर चर्चा की हैः (क) व्यवहारात्मक नियंत्रण जो कर्त्ता को विक्षुब्ध करने वाली पर्यावरणीय घटनाओं को बदलने का अवसर प्रदान करता है, (ख) संज्ञानात्मक नियंत्रण के माध्यम से व्यक्ति अपने पर्यावरण को कम ख़तरनाक/भयसूचक अनुभव के लिए पुनर्मूल्यांकन तकनीक को अपनाता है, और (ग) निर्णय नियंत्रण कर्ता को सर्वोत्तम संभव विकल्प चुनने का अवसर प्रदान करता है।

नियंत्रण घटक के संदर्भ में मानव व्यवहार को समझाने में व्यवहार बाध्यता प्रतिमान बहुत प्रभावी है। हालांकि यह दृष्टिकोण स्वयं में पर्यावरण-व्यवहार संबंधों को प्रभावी तरीके से नहीं समझा सकता है।

3.2.5 अनुकूलन स्तर सिद्धांत

अनुकूलन स्तर सिद्धांत मानते हैं कि हममें से प्रत्येक के पास एक निश्चित स्तर के पर्यावरणीय उद्दीपन की न्यूनतम सीमा है। इस न्यूनतम सीमा में मामूली वृद्धि या गिरावट उत्तेजन, अधिभार, कम भार या तनाव का केन्द्रबिन्दु है। व्यवहार में बदलाव इसलिए होगा यदि उद्दीपन भार हमारे द्वारा अनुभव किये गये अनुकूलन स्तरों से बाहर है। इस दृष्टिकोण के प्रमुख समर्थकों में सम्मिलित हैं हेलसन (1964) और वोहलविल (1974)। जबकि सभी पर्यावरण मनोवैज्ञानिक पर्यावरण के साथ मनुष्यों के अन्तर्संबंध पर बल देते हैं, अनुकूलन स्तर के सिद्धांतकार विशेष रूप से दो प्रक्रियाओं के बारे में बात करते हैं जो इस संबंध को बनाती हैं – अनुकूलन और परिवर्तन की प्रक्रियाएं। जीव या तो अनुकूलन करते हैं (यानि, पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिक्रिया बदलते हैं) या वे समायोजन करते हैं (यानि, उस पर्यावरण को बदलते है जिसके साथ वे अन्तःक्रिया कर रहे हैं)। परिवेश के तापमान में कमी के अनुकूलन में रोंगटे खड़े हो जाना, माँसपेशियों की कठोरता, प्रेरक पेशी गतिविधि में वृद्धि, वाहिकाओं का सिकुड़ना शामिल हैं। समायोजन में आग पर एक और लठ्ठा फेंकना या तापस्थापी का चालू करना सम्मिलित है। इनमें से कोई भी प्रक्रिया जीव को उसके पर्यावरण के साथ संतुलन में लौटा देती है।

वोहलविल (1974) ने उद्दीपन को तीव्रता, विविधता और प्रारुप के तीन आयामों के साथ तीन श्रेणियों में विभाजित कियाः संवेदी, सामाजिक और गति से संबंधित। इनमें से, सकारात्मक प्रतिक्रियाओं और कार्य निष्पादन के लिए उत्तेजन या उद्दीपन का इष्टतम या मध्यम स्तर वांछनीय है। उदाहरण के लिए, यदि अलगाव ओर मिलनसारिता एक सामाजिक संपर्क पैमाने के दो ध्रुव हैं तो उनमें से किसी एक को किसी कर्ता द्वारा कुछ समय के लिए वांछित माना जा सकता है जो उस जोखिम के स्तर पर निर्भर करता है जिसका वह सामना कर रहा है। आजकल की कामकाजी युवा पीढ़ी द्वारा कुछ समय अकेले या जिसे ''मेरा समय'' के रूप में जाना जाता है जिसमें या तो शांत गमन स्थल या एक दूर-दराज की जगह पर समय बिताने के विचार शायद इसी सिद्धांत से जन्म ले रहे हैं।

इस दृष्टिकोण का एक और महत्व यह है कि यह अनुकूलन स्तर में व्यक्तिगत अन्तरों को पहचानता है (अर्थात् उद्दीपन/उत्तेजन का वह स्तर जिसका व्यक्ति आदी हो गया है और एक पर्यावरण में उसकी अपेक्षा/इच्छा करता है)। इस प्रकार, यह दृष्टिकोण एक ही पर्यावरण में दो व्यक्तियों की विभिन्न प्रतिक्रियाओं की व्याख्या कर सकता है। उदाहरण के लिए, संवेदना की उच्च आवश्यकता वाले व्यक्ति को एक तड़क-भड़क समारोह सुखद लग सकता है लेकिन निम्न स्तर की संवेदना को पसंद करने वाले व्यक्ति को भारी लग सकता है। इसी तरह, कुछ लोग अन्तिम समय में त्यौहार की खरीददारी के भीड़ भरे माहौल में आनन्दित होते हैं, जबकि अन्य एक ही दुकान में दो या दो से अधिक खरीददारों के होने में भी असुविधा अनुभव करते हैं। अनुकूलन स्तर में ये व्यक्तिगत अन्तर काफ़ी भिन्न व्यवहारों को जन्म देते हैं। जिस व्यक्ति को उच्च संवेदना की आवश्यकता होती है वह शोर गुल वाली पार्टियों की तलाश करेगा, जबकि निम्न स्तर की संवेदनाओं को पसंद करने वाला व्यक्ति उनसे बचेगा या उनके भीतर भी एकांत की तलाश करेगा। हम उनके व्यवहार के कुछ अन्तरों को उनके अनुकूलन स्तर के अन्तर के रूप में बता सकते हैं। एक अन्य अध्ययन में यह देखा गया कि महत्वपूर्ण कार्यों पर

ध्यान केन्द्रित करते समय लगातार शोरगुल की उपस्थिति के साथ-साथ इसके पूर्ण अभाव से भी कर्ता परेशान थे। इस प्रकार एक सराहनीय कार्य निष्पादन के लिए उद्दीपन का एक इष्टतम स्तर वाछनीय है। उदाहरण के लिए, कुछ छात्र अध्ययन करते समय या महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कुछ सुखदायक संगीत या मंत्र सुनना पसंद करते हैं।

हालांकि, अलग-अलग व्यक्तियों में उनके अनुभव और एक उपलब्ध पर्यावरण के साथ निकटता के आधार पर इष्टतम स्तर में कुछ भिन्नताएँ हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति के लिए एक चूड़ियों के कारखाने की गर्मी और तापमान पहली बार प्रवेश करने पर असहनीय या भारी लग सकते हैं जबकि वहाँ के मजदूर इससे भली-भांति प्रतिरक्षित हैं। इसी प्रकार, पहाड़ी क्षेत्रों के लोग जब निचले क्षेत्रों में रहते हैं तो उनमें उस स्थान के मूल निवासियों की तुलना में ठंडे तापमान के लिए उच्च प्रतिरोध होता है। इष्टतम स्तर में इस भिन्नता को अनुकूलन कहा जाता है। वोहलविल (1974) के अनुसार, अनुकूलन एक उद्दीपन सातत्य के साथ निर्णयात्मक या संवेदात्मक प्रतिक्रियाओं के वितरण में एक मात्रात्मक बदलाव है जो एक उद्दीपन से निरंतर संपर्क का परिणाम है। डुबोस (1980) अनुकूलन को उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हैं जो लोगों को अपने पर्यावरण के साथ समायोजन करने की अनुमति देती है, पर्यावरण की अनुभूति में बदलाव और इसके द्वारा निर्मित समस्याओं को काबू करने के लिए मुकाबला करने की पद्धतियाँ बनाने की अनुमति देती है। अनुकूलन में शरीरक्रियात्मक और साथ-साथ मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं शामिल हैं। आँख द्वारा प्रकाश और अंधकार में अनुकूलन की घटना प्रकाश के तीव्र उद्दीपन के लिए शरीरक्रियात्मक अनुकूलन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। एक व्यक्ति जो पहले रेलवे स्टेशन के पास के क्षेत्र में रहता था वह नगर के केन्द्र में अपने नये घर में अधिक शांत अनुभव कर सकता है। यह नई परिस्थितियों के मूल्यांकन के लिए अनुकूलन के मनोवैज्ञानिक मानदंड स्थापित करने का एक उदाहरण है।

चरम पर्यावरणीय उद्दीपन से मुक्त होने वाले तनाव से निपटने में रक्षात्मक पुनर्मूल्यांकन की प्रक्रिया बहुत उपयोगी साबित हो सकती है। इस पुनर्मूल्यांकन में उन पर्यावरणीय परिस्थितियों का, जिन्हें कष्टदायक या ख़तरनाक माना जाता था, समय बीतने के साथ सहनीय या कम ख़तरनाक के रूप में पुनर्मूल्यांकन किया जा सकता है। रक्षात्मक पुनर्मूल्यांकन स्वयं उत्पन्न होते हैं, वे पर्यावरणीय दबावों के बजाए व्यक्ति की भीतर की ज़रूरतों से उभरते हैं। भेड़ों के झुंड पर किये गये एक अध्ययन में देखा गया किया जब भेड़ों का बाड़ा राजमार्ग के पास होता था तब भेड़ें किसी भी मोटर वाहन के आने पर इधर-उधर भागती थीं हालांकि समय बीतने के साथ आने वाले वाहनों को कम ख़तरनाक अनुभव किया और उन्होंने अपनी चराई को जारी रखा। मूल्यांकन-केन्द्रित रणनीतियाँ तब होती हैं जब व्यक्ति अपने सोचने के तरीकों को संशोधित करते हैं। उदाहरण के लिए, इन्कार करना या समस्या से स्वयं को दूर करना। लोग अपने लक्ष्यों और मूल्यों को बदलकर, जैसे किसी स्थिति को हास्यापद के रूप में या तौर पर देखकर, किसी समस्या के बारे में सोचने के तरीके को भी बदल सकते हैं। इसलिए, रक्षात्मक मूल्यांकन में अतीत के अधिक प्रभावी ढंग से व्याख्या करना या उन्हें कम हानिकारक और ख़तरनाक तरीके से देखकर वर्तमान नुकसानों और ख़तरों से निपटने के लिए प्रयास सम्मिलित हैं।

कभी-कभी कर्ताओं को व्यवहारात्मक अनुकूलन का सहारा लेते देखा जा सकता है। इस प्रकार के अनुकूलन को उस प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक व्यक्ति पर्यावरणीय उद्दीपन के प्रति देता है और उसके अनुरुप अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। उदाहरण के लिए, भारत में विवाह के बाद दुल्हन द्वारा रीति-रिवाज़ों के साथ (अपने परिवार से अलग होने के कारण) समायोजन करना। इसी तरह, जब कोई व्यक्ति किसी नये देश में प्रवास करता है तो उसे नये देश की परंपराओं का अनुपालन करने के लिए अपनी परंपराओं में कटौती करनी पड़ती है।

अनुकूलन का सिद्धांत व्यक्ति के अपने पर्यावरण के साथ एक सक्रिय और गतिशील संबंध प्रस्तुत करता है। हालांकि, इस सिद्धांत की अभिधारणाओं को सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह व्यक्तियों में अनुकूलन स्तरों में भिन्नता की व्याख्या नहीं करता है इसलिए पर्यावरण के संबंध में व्यवहार की सटीक भविष्यवाणी मुश्किल होती है।

3.2.6 पर्यावरणीय तनाव सिद्धांत

पर्यावरणीय तनाव सिद्धांत व्यक्ति के जैविक अनुकूलन पर पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव का अध्ययन करता है। तनाव को किसी भी घटना के लिए मन और शरीर की प्रतिक्रिया में बदलाव के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह परिवर्तन सुखद, अप्रिय या ऊबाऊ हो सकता है। तनाव तब होता है जब पर्यावरण की मांगे एक व्यक्ति की मुकाबला करने की क्षमता से अधिक हो जाती है। मुकाबला तनावपूर्ण या बाध्य करने वाली स्थिति पर नियंत्रण हासिल करने का एक प्रयास है। मनोवैज्ञानिक तनाव प्रतिमान के अनुसार शोरगुल, तापमान, भीड़, दैनिक परेशानियों जैसी पर्यावरणीय स्थितियां शरीरक्रियात्मक, भावनात्मक और व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाओं को भड़का सकती हैं जिसके बहुत सारे नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं (लाज़ारस, 1996)। ऐसी परिस्थिति या पर्यावरण में उद्दीपन तनावकारक होते हैं और इसके अनुरुप व्यवहार तनाव प्रतिक्रिया है। चार सामान्य प्रकार के पर्यावरणीय तनाव कारकों की पहचान की गई हैः प्रलयकारी घटनाएँ, तनावपूर्ण जीवन की घटनाएँ, दैनिक परेशानियां और परिवेश-संबंधी तनाव कारक (बॉम, सिंगर व बॉम, 1982; केम्पबेल, 1983; लाज़ारस व कोहेन, 1977)। प्रलयकारी घटनाएं अचानक आने वाली आपदाएँ होती हैं जिनके लिए पीड़ितों से प्रमुख अनुकूली प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता होती है। बाढ़, भूकंप, विस्फोट, युद्ध और कारावास प्रलयकारी तनाव कारकों के कुछ उदाहरण है। तनावपूर्ण जीवन की घटनाएँ लोगों के जीवन में प्रमुख घटनाएँ हैं जिनके लिए व्यक्तिगत या सामाजिक अनुकूलित प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता होती है। इनमें पारिवारिक स्थिति में बदलाव (विवाह/तलाक), आर्थिक परिस्थितियाँ या नौकरी में बदलाव शामिल हैं। दैनिक परेशानियाँ सामान्य जीवन की घटनाएँ हैं, जैसे अन्तर्वैयक्तिक समस्याएँ, पर्यावरणीय घटनाएँ (शोरगुल, भीड़भाड़) आदि जो निराशा, तनाव या चिड़चिड़ाहट पैदा कर सकती हैं। परिवेशी तनावकारक भौतिक पर्यावरण की अधिक अविरल, अपेक्षाकृत स्थिर और दुस्साध्य स्थितियाँ है, जिनकी तरफ़ तब तक ध्यान नहीं जाता जब तक वे किसी महत्वपूर्ण लक्ष्य में सीधे हस्तक्षेप न करें या स्वास्थ्य के लिए ख़तरा पैदा ना करें (कैम्पबेल, 1983)।

तनाव सिद्धांत जीव-पर्यावरण अन्तःक्रिया में शरीरक्रियात्मक विज्ञान, भावना और संज्ञान की मध्यस्थता की भूमिका पर ज़ोर देते हैं। पर्यावरणीय विशेषताएँ इन्द्रियों के माध्यम से जीव पर प्रभाव डालती हैं, जिससे उस समय तक तनाव प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है जब पर्यावरणीय विशेषताएँ एक इष्टतम स्तर से अधिक हो जाती हैं तब एक जीव इस तरह से प्रतिक्रिया करता है जिससे तनाव कम हो। तनाव प्रतिक्रिया का एक भाग स्वचालित है। प्रारंभ में, तनाव कारक के लिए एक ख़तरे की सूचना मिलती है जिसमें विभिन्न शरीरक्रियात्मक प्रक्रियाओं को बदल दिया जाता है। उसके बाद प्रतिरोध होता है, जैसा कि जीव सक्रिय रूप से तनावकारक से निपटने का प्रयास करता है। अन्ततः जैसे-जैसे मुकाबला करने वाले संसाधनों की कमी होती है थकावट की स्थिति उत्पन्न होती है (सैली, 1956)।

हालांकि मनोवैज्ञानिकों ने तनाव प्रतिक्रिया के अतिरिक्त पहलुओं के साथ अधिकाधिक सरोकार दर्शाया है। उदाहरण के लिए, लाज़ारस (1966) ने मूल्यांकन प्रतिक्रिया पर ध्यान केन्द्रित किया है। उनके अनुसार लोगों को तनाव होने और उनके व्यवहार प्रभावित होने से पहले पर्यावरण का ख़तरे के रूप में संज्ञानात्मक रूप से मूल्यांकन होना चाहिए। भीड़ के समय परेशान गाड़ी चालक को इस मानदंड से तब तक तनाव नहीं होगा जब तक कि यह व्यक्ति यातायात घनत्व का एक ख़तरे के रूप में मूल्यांकन नहीं करता। संभावित तनावपूर्ण स्थिति का सामना होने पर व्यक्ति स्थिति का मूल्यांकन करता है। मूल्यांकन में स्थिति के मूल्यांकन (प्राथमिक मूल्यांकन) के साथ-साथ माध्यमिक मूल्यांकन भी सम्मिलित है यानि इससे निपटने की संभावनाओं का सारग्राही मूल्यांकन करना। 'कोपिंग' या सामना करना शब्द अनुकूली या रचनात्मक रणनीतियों को संदर्भित करता है जो तनाव के स्तर को कम करने में सहायता करता हैं। अनुकूलन और मुकाबला प्रतिमान तनावपूर्ण परिस्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन करने में बहुत सहायक होते हैं। यदि व्यक्ति सकारात्मक तरीके से तनाव का सामना करने में सक्षम है तो यह व्यक्ति के कार्य निष्पादन को बढ़ाता है। बॉम और पोलुस (1987) ने अध्ययन किया कि शोर और भीड़भाड़ की तनावपूर्ण स्थितियों ने भी सकारात्मक सामना करने की रणनीतियों के कर्ताओं के उत्तेजन स्तर को बढ़ाया जिससे उनके कार्य निष्पादन में वृद्धि हुई। हालांकि, यदि व्यक्ति रचनात्मक तरीके से तनाव से निपटने में सक्षम नहीं है तो कार्य निष्पादन में कमी, मनोदैहिक शिकायतों और मनोवैज्ञानिक या शारीरिक विफलताओं जैसे नकारात्मक परिणाम देखे जा सकते हैं।

कुल मिलाकर, पर्यावरणीय तनाव प्रतिमान मानवीय कार्य निष्पादन और व्यवहार पर तनाव के प्रभाव को समझने में सहायता करता है। यह सर्वग्राही तरीके से मानव व्यवहार पर पर्यावरणीय तनाव कारकों के व्यक्तिगत और संयुक्त प्रभाव की भी व्याख्या करता है।

3.2.7 पारिस्थितिक सिद्धांत

पारिस्थितिक सिद्धांतकारों की सोच के केंद्र में जीव-पर्यावरण उपयुक्तता की धारणा है (बारकर, 1963, 1968)। पर्यावरण कुछ व्यवहारों को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन या विकसित होते हैं। व्यवहार के परिवेश, जैसा कि बार्कर ने उन्हें नाम दिया, का मूल्यांकन अन्तरनिर्भर पर्यावरणीय विशेषताओं और होने वाले व्यवहारों के बीच उपयुक्तता की अच्छाई के संदर्भ में किया जाता है।

पारिस्थितिक सिद्धांत स्पष्ट करते हैं कि एक व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच एक सहजीवी संबंध होता है। यानि वे एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। मानव व्यवहार और प्रतिक्रियाएं प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरणीय परिवेश से संबंधित हैं और मामूली बदलाव या संशोधन मानव व्यवहार की विशेषताओं में बदलाव ला सकते हैं। पारिस्थितिक अनुभूति को उस प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जाता है जिसके द्वारा लोग अपने पर्यावरण से संबंधित होते हैं और उसके प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। यह जीवों और उनके पर्यावरण को पारस्परिक के रूप में वर्णित करता है। यह अवधारणा बताती है कि पर्यावरण केवल स्वयं का प्रतिनिधित्व करता है और किसी व्यक्ति की स्वयं की अनुभूति पर्यावरण की अतिरिक्त जाँच-पड़ताल की अनुमति देती है (क्लेटन व मायार्स, 2009, पृष्ट 75)।

अनिवार्य रूप से यह दृष्टिकोण बाहरी कारकों के प्रति प्रारंभिक मानवीय प्रतिक्रियाओं को स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं की श्रेणी में रखता है। यह इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक शिशु स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं के एक समुच्चय के साथ पैदा होता है जो उसे जीवित रहने में सहायता करती हैं। एक स्थानिक पर्यावरण (क्षेत्रीयता, निजी स्थान, भीड़भाड़) में एक साथ रहने वाले लोगों के बारे में सिद्धांत पारिस्थितिक दृष्टिकोण के उदाहरण हैं। पारिस्थितिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यवहार इसके भौतिक और सामाजिक परिवेश का परिणाम है।

बार्कर और राइट (1955) ने मानव व्यवहार को समझने के लिए पारिस्थितिक सिद्धांतों पर अपने कार्य का उदाहरण दिया और व्यवहारात्मक परिवेश पर ध्यान केन्द्रित किया। एक व्यवहारात्मक परिवेश एक स्व-संदर्भित (आन्तरिक रूप से अन्तर्निर्भर और स्वयं परिभाषित) इकाई है जिसमें कक्षा, पुस्तकालय, मन्दिर, मनोरंजन-संबंधी क्षेत्र आदि जैसे व्यवहार के एक या एक से अधिक स्थायी प्रारुप होते हैं। बार्कर (1951) ने कई छोटे बालकों के जीवन में एक दिन का दस्तावेज़ीकरण किया और यह देखा कि बिना किसी संकेत के भी कैसे अभिव्यक्ति के उनके तरीके और बाहरी व्यवहार उस समय नाटकीय रूप से बदलते प्रतीत होते हैं जब उनकी घटनाएँ भिन्न होती हैं। यह देखा गया कि बच्चों ने अचेतन रूप से, वे जिस प्रकार की घटनाओं का सामना कर रहे थे, उसके आधार पर भिन्न-भिन्न मुकाबला करने की रणनीतियों और व्यवहारों को प्रकट किया।

उदाहरण के लिए, जब हम चलचित्र (फिल्म) देखने या मॉल में जाते हैं तो हमारे ध्वनि स्वर एक उच्च स्तर पर होते हैं, जबकि हम एक पुस्तकालय में स्वचालित तरीके से धीमी आवाज़ में बोलते हैं। इसका पुस्तकालय में शान्तिप्रद वास्तुकला और मल्टीप्लेक्स या मॉल की अराजक व्यवस्था से लेना-देना है। जेम्स जे. गिबसन (1979) और ऐलेनोर गिबसन (1969, 1997) के पारिस्थितिक अनुभूति के सिद्धांत में कहा गया है कि हालाँकि दो व्यक्ति एक विशेष पर्यावरण में एक साथ हो सकते है लेकिन उनकी अनुभूति व्यापक रूप से भिन्न हो सकती है। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य एक अलग प्रतिक्रिया का अनुभव करता है।

बार्कर ने तर्क दिया कि कुछ कार्यप्रणालियाँ हैं जो परिवेश में अनुकूलक व्यवहार का पथ प्रदशित करते हैं और लोगों को एक परिवेश में व्यवहार की भविष्यवाणी करने में मदद करते हैं। उन्होंने इन कार्यप्रणालियों को परिपथ कहा और उन्हें चार प्रकारों में विभाजित किया:

क) कार्यक्रम परिपथः पाठ्यक्रम, खेल कार्यक्रम, अनुसूची

ख) लक्ष्य परिपथः एक पतिस्थिति में लोगों के कुछ लक्ष्य होते हैं। इसलिए वे उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक विशेष तरीके से व्यवहार करते हैं।

ग) विचलन का विरोध करने वाले परिपथः ये वे व्यवहार हैं जो या जिनका अनुपालन लोग निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए करते हैं।

घ) वीटो करने वाले परिपथः ये होते हैं तब लोगों को व्यवहार की पतिस्थिति से बाहर रखा जाता है।

बार्कर का व्यवहारात्मक स्थिति का सिद्धांत प्रकृति में प्रासंगिक है। यह एक ही स्थिति में लोगों के बीच व्यवहारों की समानता पर बल देने का प्रयास करता है और उन नियमों का वर्णन करता है जो मौजूद प्रतीत होते हैं। व्यवहारात्मक स्थिति के सिद्धांत का यौगिक मैनिंग सिद्धांत है जिसका उपयोग मानव भीड़ को समझाने के लिए किया गया है। इस सिद्धांत के अनुसार एक व्यक्ति का व्यवहार एक स्थिति में मौजूद सामाजिक भूमिकाओं की आपूर्ति और माँग से निर्धारित होता है। एक व्यक्ति को अधिक भीड़ का अनुभव होगा जब एक स्थिति में अधिक लोग हों (अर्थात् जब पतिस्थिति में रहने वालों की संख्या स्थिति के सामान्य कामकाज के लिए आवश्यक से अधिक हो), ना कि कम लोग हों (हुई व बैटसन, 1990); बार्कर, (1968, पृष्ठ 185)। यह सिद्धांत कम लोगों की पतिस्थिति के प्रभाव के मुख्य पहलुओं को संश्लेषित करता हैः सामान्य शब्दों में, बेहतर मानव व्यवहार-संबंधी पतिस्थिति की तुलना में कम मानवों की व्यवहार-संबंधी पतिस्थिति अपने निवासियों पर विविध कार्यों में अधिक और मज़बूत बलों/दबावों को अधिरोधित करती है; हालांकि, बलों/दबावों को अधिक प्रचलित रूप से अन्दर की ओर अन्य निवासियों की ओर निर्देशित किया जाता है। कम लोगों की व्यवहारात्मक पतिस्थिति में अधिक मज़बूत आन्तरिक अन्तर निर्भरता और सहयोगशीलता होती है; वे इष्टतम लोगों की पतिस्थिति की तुलना में अधिक मज़बूत मानक/घटक है। मैनिंग सिद्धांत जिसे स्टाफ़िंग सिद्धांत के रूप में जाना जाता है, इस विचार पर केन्द्रित है कि जब कई व्यवहार-संबंधी पतिस्थितियों के लिए कम लोग उपलब्ध होते हैं तो एक व्यक्ति पर ज़िम्मेदारियों को ग्रहण करने का दबाव बढ़ जाता है।

सिनापोमॉर्फ़ी, जो एक व्यवहार-संबंधी पतिस्थिति और उसके भीतर के व्यक्ति के बीच उपयुक्तता का परिमाण है, स्टाफ़िंग सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। जब कोई स्थान सिनापोमॉर्फ़ी में उच्च होता है तो लोगों की संख्या और उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों के प्रकार व्यवहार-संबंधी पतिस्थिति द्वारा प्रदान किये जाने वाले कार्यों से मेल खाते हैं, और व्यक्ति अधिकतम उत्पादकता प्राप्त कर सकते हैं।

पारिस्थितिक दृष्टिकोण के फ़ायदे और नुकसान, दोनों हैं। इस सिद्धांत की उच्च बाहरी वैधता है क्योंकि इसका वास्तविक जीवन व्यवहारात्मक पतिस्थितियों में परीक्षण किया गया है। हालांकि, बाहरी चरों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण विभिन्न भविष्यवाणियों और परिणामों के बीच एक सटीक कार्य-कारण संबंध स्थापित करना मुश्किल हो सकता है। पारिस्थितिक सिद्धांत मानव व्यवहार को समझने में बहुत उपयोगी साबित हुआ है और इसे अधिक भीड़भाड़/जमावड़े से बचने और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवासीय क्षेत्रों के अभिन्यास और सुचित्रण/सुसज्जा का आकलन करने में लागू किया जा सकता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

1) अनुकूलन स्तर सिद्धांतों के प्रमुख समर्थकों के नाम बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) ब्रेहम के प्रतिक्रिया सिद्धांत के विचार को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) परिवेशी तनाव कारक क्या होते है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) पारिस्थितिक सिद्धांतों के मूल आधार की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 पर्यावरण-व्यवहार संबंध के सिद्धांतों की आलोचनात्मक तुलना

प्रत्येक सैद्धांतिक स्वरूप/उद्देश्य के अपने लाभ और लागत हैं। उत्तेजन, उद्दीपन/संदीपन भार और अनुकूलन-स्तर दृष्टिकोण, सभी समग्र उद्दीपन स्तर के तहत भौतिक और सामाजिक पर्यावरणीय विशेषता को एक विस्तृत विविधताओं की समाहित करने की क्षमता का लाभ साझा करते हैं। इस प्रकार, शोरगुल, चरम तापमान, कमरे का रंग, मौखिक सूचना दर और भीड़भाड़ जैसे विविध कारकों को पर्यावरणीय उद्दीपन स्तरों में योगदान देने वाले घटकों/अवयवों के रूप में

अवधारणाबद्ध किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ये तीनों दृष्टिकोण उन संभावित प्रतिकूल प्रतिक्रियाओं की भविष्यवाणी करने में उपयोगी होते हैं जब पर्यावरणीय उद्दीपन कुछ इष्टतम स्तर से भटक जाता है। पर्यावरण-व्यवहार संबंधों के शरीरक्रियात्मक और संवेदात्मक मध्यस्थों की पहचान करने में उत्तेजन दृष्टिकोण सबसे सार्वजनिक व उपयोगी है, अर्थात उत्तेजन में वृद्धि या कमी शरीरक्रियात्मक और मनोवैज्ञानिक उत्तेजन के अनुरूप परिवर्तन उत्पन्न करती है और कार्य का निष्पादन/क्रियान्वन और आक्रामकता जैसे व्यवहार में अनुमानित बदलाव पैदा करती है।

उद्दीपन भार दृष्टिकोण सूत्रयुग्मक/अन्तर्ग्रंथनी है। यह सूचना प्रसंस्करण क्षमताओं में संज्ञानात्मक स्तर पर ध्यान केन्द्रित करता है और अधिक उत्तेजन (ग़ैर-उत्तेजन के सामाजिक/व्यवहारात्मक परिणामों के बारे में भविष्यवाणियाँ करता है – अत्यधिक चौकस मांगों का प्राथमिक बनाम गौण कार्यों को करने और विभिन्न सामाजिक उद्दीपनों को ध्यान देने की संभावना पर अवकल प्रभाव होता है।

अनुकूलन स्तर सिद्धांत यह भविष्यवाणी करता है कि किसी विशेष उद्दीपन स्तर के परिणाम उस विशिष्ट स्तर पर निर्भर करते हैं जिसके लिए एक व्यक्ति अनुकूलित हो गया है। सामान्यता-विशिष्टता आयाम एक सैद्धांतिक समझौताकारी समन्वयन है। अधिक सामान्य सिद्धांत समान पर्यावरणीय परिस्थितियों में बड़ी संख्या में लोगों की सकल प्रतिक्रियाओं की व्याख्या करते हैं लेकिन ऐसा करते हुए वे उन परिस्थितियों के प्रति लोगों की प्रतिक्रियाओं में कुछ संभावित महत्वपूर्ण व्यक्तिगत अन्तरों को छुपा देते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तेजन सिद्धांत शांत स्थितियों की तुलना में शोरगुल में औसतन खराब कार्य-निष्पादन की सटीक भविष्यवाणी कर सकता है लेकिन कुछ व्यक्ति ऐसे भी हो सकते हैं जो अपने अनुकूलन स्तर के कारण शोरगुल वाली स्थिति में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। अधिक विशिष्ट सिद्धांत इन व्यक्तिगत अन्तरों में कुछ की व्याख्या करते हैं लेकिन अपने दायरे में अधिक सीमित हैं। इस प्रकार अधिकांश लोगों के लिए इष्टतम पर्यावरणीय परिस्थितियों के बारे में अनुमान लगाने में कठिनाइयाँ पैदा होती हैं। उदाहरण के लिए, अनुकूलन स्तर सिद्धांत कार्य-निष्पादन के बारे में कई भविष्यवाणियाँ कर सकता है क्योंकि लोग शोरगुल के समान स्तर पर हैं। इन तीनों दृष्टिकोणों में उनकी अवधारणाओं के मापन की विश्वसनीयता और प्रमाणिकता के संबंध में सीमाएँ हैं। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, शरीरक्रियात्मक (जैसे हृदय गति, त्वचा प्रतिक्रिया) और मनोवैज्ञानिक उत्तेजन (जैसे आत्मसूच्य भावनात्मक स्थिति) के एक साथ प्राप्त मापन कभी-कभी विरोधाभासी परिणाम देते हैं। इसके अलावा, उद्दीपन भार और अनुकूलन स्तर के व्यवस्थित और प्रमाणिक मापन प्राप्त करना मुश्किल है।

नतीजतन, सभी तीन दृष्टिकोणों में यह अनुमान लगाने में कठिनाई होती है कि इष्टतम उद्दीपन स्तर क्या हैं और ठीक किस समय ये स्तर इष्टतम से महत्वपूर्ण रूप से भटक जाते हैं। यह विभिन्न उद्दीपन स्तरों के लिए व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाओं की भविष्यवाणी करने की क्षमताओं को सीमित करता है।

तनाव दृष्टिकोण में उपरोक्त सभी तत्वों को सम्मिलित किया गया है। हम भौतिक और सामाजिक पर्यावरणीय परिस्थितियों के संदर्भ में तनाव को परिलक्षित कर

सकते हैं जो कुछ इष्टतम स्तर (जैसे एक शोरगुल और भीड़भाड़ वाला उपमार्ग) से भटक जाते हैं और इस प्रकार ये मानवीय कामकाज के लिए संभावित रूप से विघटनकारी होते हैं। हम तनाव को शरीरक्रियात्मक प्रतिक्रियाओं (जैसे उत्तेजन और स्वास्थ्य), संवेदात्मक प्रतिक्रियाओं (जैसे, व्यक्तिपरक असुविधा), और पर्यावरणीय परिस्थितियों के प्रति संज्ञानात्मक प्रतिक्रियाओं (जैसे, मूल्यांकन के रूप में तनाव को अवधारणाबद्ध कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण तनाव के सामान्य निर्माण/रचना के तहत पर्यावरण-व्यवहार संबंधों के कई महत्वपूर्ण मध्यस्थों पर पर्यावरणीय परिस्थितियों की एक विस्तृत विविधता के प्रभावों को समझने के लिए भी उपयोगी है। व्यावहारात्मक सामना करना और उसके परिणामों की भविष्यवाणी करने का इस दृष्टिकोण का एक अतिरिक्त लाभ है। निस्संदेह, यह मापन की ऊपर चर्चित समस्याओं से ग्रस्त हैं। उदाहरण के लिए, वस्तुनिष्ठ रूप से यह निर्धारित करना मुश्किल है कि कौन सी स्थितियाँ तनावपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, हेवी मेटल बनाम जैज़ संगीत; साथ-ही-साथ उनके प्रति प्रतिक्रिया में व्यक्तिगत अन्तरों को निर्धारित करना भी कठिन है। उदाहरण के लिए, किशोर बनाम उनके माता-पिता। फिर भी पर्यावरण मनोविज्ञान में तनाव दृष्टिकोण का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है।

व्यवहारात्मक बाध्यता दृष्टिकोण का दायरों सबसे अधिक सीमित है (अर्थात यह उन स्थितियों में प्राथमिक रूप से उपयोगी है जहाँ नियंत्रण की हानि/क्षति की अनुभूति या नियंत्रण का ख़तरा हैं)। हालांकि, जब ऐसी स्थितियाँ मौजूद होती हैं तो प्रतिक्रिया और अधिगत असाहयता की अवधारणाएँ ऐसी स्थितियों के लिए व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाओं की उपयोगी भविष्यवाणियाँ करती हैं।

पारिस्थितिक दृष्टिकोण में व्यवहार पतिस्थिति की अवधारणा के साथ सबसे व्यापक दायरा है और यह विभिन्न स्थितियों में बड़ी संख्या में लोगों के व्यवहार को समझने के लिए एक उपयोगी वर्णनात्मक दृष्टिकोण है। हालांकि यह सामान्यता व्यवहार पतिस्थिति में व्यक्तिगत अन्तरों को परिभाषित व निरूपित करने के लिए इस दृष्टिकोण की क्षमता को सीमित करती है। इसका एक और हानि यह है कि क्षेत्र अवलोकन पद्धति पर इसकी निर्भरता व्यवहार के निर्धारकों के संबंध में कारणात्मक निष्कर्षों की अनुमति नहीं देती है।

3.4 पर्यावरण मनोविज्ञान में शोध

इवांस (1996) ने अपने लेख में पर्यावरण मनोविज्ञान में वर्तमान शोध प्रवृत्तियों को संक्षेप में दोहराया है। उन्हें लगता है कि पिछले एक दशक में पर्यावरण मनोविज्ञान ने मनोविज्ञान के भीतर एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में अपनी व्यवहार्यता खो दी है। उत्तरी अमेरिका में आरंभिक उत्साह कम हो गया है और व्यवहारात्मक वैज्ञानिकों, वास्तुविदों और सज्जाकारों के बीच बहुत कम सहयोगी विचार आ रहे हैं। हालांकि, संतोषजनक पहलू यह है कि पर्यावरण मनोविज्ञान में उत्पन्न शोध को मुख्याधारात्मक मनोविज्ञान में पूरी तरह से अपनाया लिया गया है।

''पर्यावरण मनोविज्ञान की लोकप्रियता का अनुमान विभिन्न सुविधाजनक बिन्दुओं से लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, इस क्षेत्र में तीन प्रमुख पत्रिकाओं, *इनवायरमेंट एंड बिहेवियर, जरनल ऑफ़ एनवायरमेंटल साइकोलोजी,* और *जरनल ऑफ़ आर्किटेम्यर प्लानिंग एंड रिसर्च* की सदस्यता दर सबसे उच्च स्तर पर है। उत्तर अमेरिका में पर्यावरण मनोविज्ञान के पाठ्यक्रम बड़ी संख्या में छात्रों को

आकर्षित कर रहे हैं। पर्यावरण मनोविज्ञान पर कई पाठ्यपुस्तकों ने नये संस्करण प्रकाशित किये हैं (बॉम, फिशर, बॉम व ग्रीन, गिफ़ोर्ड; 1990 के दशक में अमेरिका में दो नये ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं (मैकएन्ड्रयू; वीच व आर्केलिन)। इसके अतिरिक्त, इटली में बॉन्स और सेचियारोली पुस्तक प्रकाशित होती है'' (इवांस, 1996)।

भारत में त्रिपाठी (1997) ने मूल भारतीय भाषा में पर्यावरण मनोविज्ञान पर एक पाठ्यपुस्तक प्रकाशित की है। भारत में पर्यावरण मनोविज्ञान पर स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों को प्रस्तुत किया जाता है और प्रमुख विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में छात्र इस क्षेत्र/विषय में अच्छी दिलचस्पी दिखा रहें हैं (जैन, 1987; नागर, 1998) और पर्यावरण मनोविज्ञान पर लेख मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं में कई दृश्यमान संस्करणों में शामिल किये गये हैं (जैन और पलसाने, 2004; नागर, 1999; नागर और शर्मा, 2005)। हालांकि, भारतीय संदर्भ में पर्यावरण मनोविज्ञान के विभिन्न सामान्य विषयों पर संपादित संस्करणों में संगोष्ठियों और कार्यवाहियों में प्रस्तुत लेखों को संकलित करने की प्रवृत्ति के साथ-साथ उपसर्ग ''पर्यावरण'' को जोड़ने पर भी कभी-कभी ध्यान दिया जाता है (अग्रवाल और सक्सेना, 2003; जैन, 1997)। फिर भी इन सभी प्रयासों को कुल मिलाकर पर्यावरण मनोविज्ञान की लोकप्रियता और बढ़ती दृश्यता का सूचक माना जा सकता है।

पर्यावरण और व्यवहार पर केम्ब्रिज और गॉवर की *एथनोस्केप* श्रृंखला को पाठकों से भारी समर्थन मिला है और प्रत्येक श्रृंखला के कई संस्करण छपने की कगार पर हैं (इवांस, 1996)। *द हैंडबुक ऑन इनवायरेलंटल साइकोलॉजी* पूरी बिक चुकी है (ऑल्टमैन व स्टोकोल्स, 1987) और अब इसे क्राइगर प्रकाशन द्वारा दुबारा छापा गया है। इवांस (1996) ने अपने लेख में बताया कि सामाजिक और स्वास्थ्य-संबंधी मनोविज्ञान दोनों की पुस्तिकाएँ और मनोवैज्ञानिक-शरीरक्रिया विज्ञान की नई पुस्तिका में पर्यावरणीय विषयों पर अध्याय हैं। संज्ञानात्मक विज्ञानों में संज्ञानात्मक मानचित्रण एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है। संज्ञान पर समर्पित विभिन्न पत्रिकाओं में स्थानिक स्मृति, मार्ग तलाशने और पर्यावरणीय संज्ञान के संगणकीय प्रतिमान पर अधिक से अधिक लेख सम्मिलित किये जा रहे हैं। इसके अलावा, पर्यावरणीय शिक्षा शैक्षणिक पाठ्यक्रम में एक प्रमुख उपक्षेत्र के रूप से उभर रही है। बाल मनोविज्ञान और जीवनकाल विकास के क्षेत्र में शोध अध्ययनों ने तत्कालिक व पृष्ठभूमि पतिस्थिति और स्वस्थ विकास के साथ इसके संबंधों व अंतःक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करना शुरू कर दिया है।

वास्तुविदों की शिक्षा में मानव व्यवहार और व्यवहारात्मक विज्ञान से कुछ संसर्ग शामिल हैं। यह विचार कि भौतिक चित्रांकन/सुचित्रण की विशेषताएँ उपयोगकर्ताओं को प्रभावित करती हैं, डिज़ाइनरों द्वारा कमोबेश स्वीकार किया जाता है। हालांकि अभ्यासरत/प्रयोगरत वास्तुविदों ने व्यवहारात्मक विज्ञान के अधिकांश ज्ञान को स्वीकार नहीं किया है। किंतु कुछ विशिष्ट क्षेत्रों, जैसे अभ्यांतर/आंतरिक सज्जा और भू-दृश्य वास्तुविदों ने पर्यावरणीय मनोविज्ञान से प्रेरित ज्ञान के कई पहलुओं में काफ़ी रुचि दिखाई है और व्यवहारात्मक वैज्ञानिकों के साथ सहयोग किया है। कई देशों में आपराधिक मनोविज्ञान का नया क्षेत्र आपराधिक न्याय प्रणाली में योगदान दे रहा है। यह नया कार्यक्षेत्र पर्यावरण मनोविज्ञान के प्रमुख विषयों को शामिल करता है जिसमें स्थान सिद्धांत, क्षेत्रीय व्यवहार, पर्यावरण संज्ञान, कारागर अध्ययन, आदि सम्मिलित हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप में अंतरिक्ष में जीवन को समझने और बाहरी अंतरिक्ष में यात्रियों और कर्मियों के आवास के लिए कार्यक्रम विकसित करने के प्रयास काफ़ी स्पष्ट है (इवांस, 1996)। मानव कारक अभियांत्रिकी के क्षेत्र में कार्यस्थल में स्वास्थ्य और सुरक्षा के मुद्दे ध्यान आकर्षित कर रहे हैं और इसमें पर्यावरणीय मनोविज्ञान से निविष्टियों का उपयोग किया जाता है। भीतरी वायु की गुणवत्ता और कार्यस्थल में तनाव ऐसे विषय हैं जो नये सिरे से रुचि पैदा कर रहे हैं। अपने वास्तविक विकास से पहले विभिन्न स्थानों के प्रति मानवीय प्रतिक्रिया शोधकर्त्ताओं को आकर्षित कर रही है। कम्पयूटर सिमुलेशन तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है और पर्यावरण मनोविज्ञान के अधिक व्यवहारिक अनुप्रयोगों का विश्लेषण किया जा रहा है। भीड़भाड़, शोर, प्रदूषकों के साथ-साथ प्राकृतिक और तकनीकी आपदाओं जैसे पर्यावरणीय तनावों पर शोध व अध्ययन किया जा रहा है। और स्वास्थ्य एवं संज्ञान के साथ इसके संबंधों की जाँच की जा रही है। आपातकालीन स्थितियों के दौरान लोगों के स्वाभाविक व्यवहार ने मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की है जो आपातकालीन नियोजन नीतियों की ओर ले जाती है ताकि उनके हानिकारक प्रभावों को कम किया जा सके। विभिन्न तनाव कारकों पर अध्ययन, घर से कार्यस्थल तक परिस्थितियों के परे प्रभाव और इसके उल्टे क्रम पर भी शोधकर्त्ताओं का ध्यान जा रहा है।

एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों का अध्ययन करना है। इंवास (1996) ने बताया है कि वैश्विक परिवर्तन के मानवीय आयाम अमेरिका में एक महत्वपूर्ण प्राथमिक क्षेत्र के रूप में उभरें हैं और पॉल स्टर्न व उनके सहयोगियों जैसे कई पर्यावरण वैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र में एक नया निबंध प्रकाशित किया है। *एनुवल रिव्यू ऑफ़ साइकोलोजी* के अतिरिक्त *जरनल ऑफ़ एनवायरमेंटल साइकोलोजी* ने हाल ही में इस विषय पर एक विशेष अंक प्रकाशित किया है। कई शोधकर्ता वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तनों और मनोविज्ञान के बीच संबंधों पर अपने अध्ययन में ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। पारिस्थितिक रूप से विनाशकारी व्यवहारों को रोकने के तरीके की व्याख्या करने के लिए यह क्षेत्र कार्यवाहक प्रतिमानों और प्रेरक सिद्धांतों से अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है।

विकासशील देशों में लोग प्रतिकूल परिस्थितियों में रह रहे हैं। अधिकतर लोग दिन-प्रतिदिन की पर्यावरणीय समस्याओं से पीड़ित है, जिसमें घटिया आवास और गन्दे व तंग पर्यावरण से घिरे अस्वच्छ जीवन की स्थिति सम्मिलित हैं। शोध का केंद्रबिन्दु पर्यावरण मनोविज्ञान के ढाँचे के भीतर गरीबी और निम्न पर्यावरण गुणवत्ता को जोड़कर देखना है। भारतीय संदर्भ में गरीबी पर कई अध्ययन किये गये हैं। हालांकि अधिकांश अध्ययनों में भौतिक पर्यावरणीय विशेषताओं की भूमिका को या तो अनदेखा कर दिया जाता है या उन पर बल नहीं दिया जाता है। इस अंतर को अनुभव किया गया है और भारतीय गांवों के भौतिक पर्यावरणीय पहलुओं का अध्ययन करने और उनके सामुदायिक संबंधों और स्वास्थ्य उपायों के साथ उनके परस्पर संबंध पर जाँच करने के लिए कुछ मामूली प्रयास किये गए हैं (त्रिपाठी, 1993)। इसके अतिरिक्त, मनोवैज्ञानिकों द्वारा भारतीय मलिन बस्ती पर बहुत कम प्रयास और शोधकार्य किया गया है (संधु, 1987; नागर एवं मिश्रा, 2001)। उदाहरण के लिए, उन मलिन बस्ती के निवासियों के पुर्नवास के प्रभाव की जाँच करने के लिए एक अध्ययन की योजना बनाई गई थी जो पहले प्रतिकूल

पर्यावरणीय परिस्थितियों के संसर्ग में थे। इस अध्ययन का केन्द्रबिन्दु पर्यावरण की गुणवत्ता, भीड़भाड़ और स्वास्थ्य पर था (नागर, 2005)। इस अध्ययन के प्रमुख परिणाम ने संकेत दिया कि मलिन बस्ती के निवासियों, जिन्हें सरकार द्वारा मलिन बस्ती में इकाइयों का स्वामित्व प्रदान किया गया था, ने अपने व्यक्तिगत और साझा आवास और पड़ोस के पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाने की प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया और अपने समकक्षों की तुलना में, जो अनाधिकृत रूप से रह रहे थे या झुग्गी-झोपड़ी स्वरूपी इकाइयों के स्वामित्व के पात्र नहीं थे, बेहतर स्वास्थ्य की सूचना दी। ऐसा प्रतीत होता है कि झुग्गी-झोपड़ी स्वरूपी इकाई के स्वामित्व की भावना आस-पड़ोस की पर्यावरणीय गुणवत्ता को बचाने और सुधारने में एक महत्वपूर्ण कारक है।

पर्यावरणीय मनोवैज्ञानिकों को आर्थिक विविधताओं और हाशिये पर रहने वाले समुदायों, जैसे आदिवासी ग्रामीणों आदि, पर शोध करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वर्तमान युग में शुरू हुई उत्संस्करण और तकनीकी प्रगति की प्रक्रिया के प्रति लोगों ने कैसे प्रतिक्रिया दी यह शोध की एक महत्वपूर्ण दिशा तथा विषय है। इसी तरह कुछ शोध, भीड़भाड़ वाले भीतरी शहर के क्षेत्रों में किये जाते हैं जहाँ सामुदायिक समूह, भीड़भाड़ और पर्यावरण की गुणवत्ता सामाजिक समर्थन, सहिष्णुता और स्वास्थ्य-संबंधी उपायों से जुड़ी होती है (नागर तथा शर्मा, 2005)। इसके अतिरिक्त, भारतीय संदर्भ में पर्यावरण-व्यवहार संबंधों की हमारी समझ को बढ़ाने के लिए ऐसे अधिक सुव्यवस्थित अध्ययनों की आवश्यकता है जिनमें आवास के प्रकारों, निम्न पर्यावरणीय गुणवत्ता, संसाधनों की कमी और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी के आयामों, विकसित-अविकसित गांवों और आदिवासी-ग़ैर आदिवासी और विभिन्न जातीय समूहों जैसी भौतिक पर्यावरणीय विशेषताओं को सम्मिलित किया जाए।

पर्यावरणीय समस्याओं के प्रबंधन पर पारंपरिक समझ का लाभ उठाने के लिए सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट अध्ययनों की भी आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, पारंपरिक भारतीय ग्रंथों में भौतिक पर्यावरण के महत्व और मानव के आवश्यक दृष्टिकोणों और व्यवहारों का व्यापक उल्लेख है। आधुनिक विकास की पश्चिमी अनुधारणा का उल्लेख करने के लिए व्यक्ति ने वर्तमान समय में ऐसी समृद्ध परंपरा की अपेक्षा की है। विकास का लोकप्रिय प्रतिमान बिना किसी सीमा के पर्यावरणीय संसाधनों के दोहन को आवश्यक बना देता है। भौतिक संसाधनों के इस तरह के दोहन ने पहले ही पर्यावरणीय संसाधनों की उपलब्धता और इस पृथ्वी पर मानव आबादी के लिए उनकी आवश्यकता में असंतुलन पैदा कर दिया है। तथ्य यह है कि वर्तमान पर्यावरणीय समस्याएँ विकास के आधुनिक प्रतिमान का अनुसरण करने का परिणाम हैं। संसाधनों की उपलब्धता और आवश्यकता के बीच संतुलन बनाने के लिए विकास के एक नये प्रतिमान की आवश्यकता हो सकती है। मानव आबादी की जीवनशैली अब पूरी तरह से प्रौद्योगिकी और परिष्कार पर निर्भर हैं। लेकिन फिर भी पर्यावरण-समर्थक व्यवहार सबसे महत्वपूर्ण है। स्पष्टतः इस देख-रेख के लिए उचित अभिवृत्तियाँ, उपलब्ध संसाधनों के उचित प्रबंधन, पर्यावरणीय संसाधनों के उचित प्रबंधन और थोड़ी सी असुविधा की कीमत पर पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार की आवश्यकता है।

इसलिए पर्यावरण मनोवैज्ञानिकों की ज़िम्मेदारी पारंपरिक विचारों सांस्कृतिक भावनाओं का वैज्ञानिक पद्धतियों में रूपांतरण करने की है जो पर्यावरण के अनुकूल हैं और आम लोगों द्वारा आसानी से अनुकूलित की जा सकती हैं। वर्तमान अध्ययनों ने तंत्रिका विज्ञान और वास्तुकला के बीच अन्तःक्रिया पर ज़ोर दिया है (कराकस व यिलडिज, 2020)। जैव-सूचना विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आभासी क्षेत्र (पिकोन व पोटे, 2003) और तांत्रिका विज्ञान सहित विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विकास (एबरहार्ड, 2007, रॉबिन्सन व पल्लासमाँ, 2015; ज़िसेल, 2006) और इन क्षेत्रों के बीच अन्तःविषयी सहयोग से नये परिप्रेक्ष्यों, आधार-सामग्री/दत्त-सामग्री संग्रह उपकरणों और मापन तकनीकों का उदय हुआ जिसने अंततः मानव-निर्मित पर्यावरण में अन्तःक्रिया पर ज्ञान का विस्तार किया। उपरोक्त चर्चा पर्यावरण मनोविज्ञान में वर्तमान शोध प्रवृत्तियों और शोध के भविष्य की दिशा के केवल एक नमूने का प्रतिनिधित्व करती है। विभिन्न पर्यावरणीय प्रावधानों के प्रति प्रतिक्रियाओं में समानता और अन्तर को समझने के लिए विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न जातीय आधारों पर अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। पर्यावरण-व्यवहार संबंधों की जटिलता को समझने के लिए परिनियामक और मध्यस्थ चरों की पहचान की जा सकती है और अधिक सटीक परीक्षण किया जा सकता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 4

1) पर्यावरण-व्यवहार संबंधों के लिए उद्दीपन भार दृष्टिकोण और पर्यावरणीय तनाव दृष्टिकोण की आलोचनात्मक तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरण मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्तमान शोधों का एक विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 सारांश

इस इकाई में हमने जो कुछ सीखा है उसे संक्षेप में बताने के लिए यहाँ एक त्वरित पुनर्कथन प्रस्तुत है:

- मानव-पर्यावरण संबंधों के विभिन्न पहलुओं को शामिल करते हुए कई प्रमुख सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य पर्यावरण मनोवैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करते हैं।

- उत्तेजन सिद्धांत यह मानते हैं कि प्रत्येक कार्य-निष्पादन के लिए पर्यावरणीय उद्दीपन के इष्टतम स्तर की आवश्यकता होती है। इस स्तर में परिवर्तन उत्तेजन को जन्म देता है जिसका कार्य-निष्पादन के साथ एक वक्रिय संबंध होता है।

- उद्दीपन भार सिद्धांत पर्यावरणीय उद्दीपन और मानव व्यवहार के बीच संबंध की व्याख्या करते हैं। यह इस विचार को रेखांकित करता है कि यदि किसी व्यक्ति की पर्यावरणीय उद्दीपन से निपटने की क्षमता अधिक बढ़ती है तो यह व्याकुलता को जन्म देती है।

- व्यवहार बाध्यता दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि यदि किसी व्यक्ति को लगता है कि भौतिक पर्यावरण पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है तो लाचारी की भावना आ जाती है। इससे व्यक्ति के सामान्य व्यवहार प्रारुप में एक प्रतिबंध उत्पन्न होता है।

- अनुकूलन स्तर दृष्टिकोण इस बात पर ज़ोर देता है कि यदि पर्यावरणीय उद्दीपन से निपटने की व्यक्ति की न्यूनतम सीमा में भिन्नता है तो इससे तनाव होगा और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य खराब होगा।

- पर्यावरण तनाव दृष्टिकोण व्यक्ति के शरीरक्रियात्मक अनुकूलन स्तरों पर विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों और कारकों के प्रभाव का अध्ययन करता है। यह स्पष्ट रूप से तनाव कारकों की अवधारणा और स्वस्थता के संदर्भ में मानव व्यवहार पर उनके प्रभाव को प्रतिपादित करता है।

- पारिस्थितिक सिद्धांत बताते हैं कि मानव और पर्यावरण एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक सहजीवी संबंध साझा करते हैं। मानव व्यवहार सीधे तौर पर भौतिक पर्यावरण की विशेषता से जुड़ा हुए हैं यह इस सिद्धांत की मुख्य अवधारणा है।

- पर्यावरण मनोविज्ञान के क्षेत्र में शोध ने न केवल विकसित देशों में, बल्कि विकासशील देशों में भी प्रमुखता प्राप्त की है। हालांकि अधिक संस्कृति-विशिष्ट अध्ययनों की आवश्यकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, तंत्रिका विज्ञान आदि के क्षेत्र में और साथ-ही-साथ अन्तःविषयी दृष्टिकोण ने शोध को नई दिशाएँ दी हैं।

3.6 मुख्य शब्द

उत्तेजन सिद्धांत : यह सिद्धांत पर्यावरणीय उद्दीपन के साथ-साथ शरीरक्रियात्मक प्रतिक्रियाओं के कार्य-निष्पादन पर उत्तेजन के प्रभाव के बारे में है।

उद्दीपन भार सिद्धांतः यह सिद्धांत सूचना को संसाधित करने के लिए किसी व्यक्ति की सीमित क्षमता को संदर्भित करता है। मानवीय प्रतिक्रिया पर्यावरणीय उद्दीपन उस समय की स्थिति से निपटने के लिए व्यक्ति की क्षमता के संदर्भ में घटित होती है।

व्यवहार बाध्यता सिद्धांत : इसकी मूल धारणा यह है कि पर्यावरण एक व्यक्ति - विशेष के व्यवहार को अवरोधित सकता है या उसमें हस्तक्षेप करके उसे सीमित कर सकता है।

अनुकूलन स्तर सिद्धांत : इसकी मान्यता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास पर्यावरणीय उद्दीपन के अनुकूल होने के लिए न्यूनतम दबाव होता है। यदि उद्दीपन भार अनुकूलन स्तर के बाहर है तो मानव व्यवहारात्मक परिवर्तन होगा।

पर्यावरण तनाव सिद्धांत : यह सिद्धांत किसी व्यक्ति के जैविक अनुकूलन पर पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित करता है।

पारिस्थितिक सिद्धांत : इसकी मान्यता यह है कि एक व्यक्ति और उसके पर्यावरणीय के बीच एक अन्तर्निर्भर और पारस्परिक संबंध है।

3.7 समीक्षा प्रश्न

1) उत्तेजन सिद्धांत मानव-पर्यावरण संबंध की व्याख्या किस प्रकार करता है?
2) उपयुक्त उदाहरणों का हवाला देते हुए व्यवहार पर पर्यावरण के प्रभावों को समझने के लिए उद्दीपन भार सिद्धांतों पर चर्चा कीजिए।
3) अनुकूलन स्तर और मानव-पर्यावरण संबंधों के पारिस्थितिक सिद्धांतों के बीच अंतर की विस्तार से चर्चा कीजिए।
4) तनाव क्या है? पर्यावरणीय तनाव सिद्धांत की अवधारणाओं का उपयोग करते हुए मानव कल्याण पर तनाव के प्रभावों की व्याख्या कीजिए।
5) नियंत्रण सिद्धांतों की मुख्य मान्यताएँ क्या हैं?

3.8 संदर्भ एवं अन्य पाठ्य सामग्री

Bonnes, M., -Secchiaroli, G. (1995). *Environmental Psychology: A Psycho-social Introduction*. Sage.

Malhotra, N. K. (2007). *Environmental Psychology: Principles and Practices*. Sumit Enterprises. New Delhi.

Moser, G. and Uzzell, DL (2003). 'Environmental Psychology', in Millon, T., - Lerner, M.J.(Eds.), *Comprehensive Handbook of Psychology*, Volume 5: Personality and Social Psychology, New York: John Wiley - Sons. pp 419 – 445.

Nagar, D. (2006). *Environmental Psychology*. Concept Publishing Company. New Delhi.

Tewari, R. -Mathur , A. (2014). *Environmental Psychology*. Pointer Publishers

Steg, L. E., Van Den Berg, A. E., - De Groot, J. I. (2013). *Environmental Psychology: An Introduction*. BPS Blackwell.

Singh, Y.K. (2006). *Environmental Science.* New Age International (P) Ltd. New Delhi, India.

Karakas, T., -Yildiz, D. (2020). Exploring the influence of the built environment on human experience through a neuroscience approach: A systematic review. *Frontiers of Architectural Research, 9(1)*, 236-247.

3.9 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

- Understanding Environmental Pollution https://www.cambridge.org/highereducation/books/understanding-environmental-pollution/0BA79658F5B96E138BA167E41452A1ED#overview
- The Effect of Population Growth on the Environment: Evidence from European Regions - PMC (nih.gov)
- Sustainability http://www.mdpi.com/journal/sustainability
- Population and Environment - PMC (nih.gov)

इकाई 4 पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण और संज्ञान*

संरचना

4.0 प्रस्तावना

4.1 पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा और विशेषताएं

4.1.1 भौतिक-प्रत्यक्षणात्मक दृष्टिकोण

4.1.2 सामाजिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

4.2 पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के विकास पर परिप्रेक्ष्य

4.2.1 व्यष्टि विकास परिप्रेक्ष्य

4.2.2 सहजवाद परिप्रेक्ष्य

4.2.3 अधिगम का परिप्रेक्ष्य

4.2.4 अंतःक्रियात्मक परिप्रेक्ष्य

4.3 पर्यावरण संज्ञान

4.3.1 संज्ञानात्मक मानचित्रण

4.3.1.1 संज्ञानात्मक मानचित्रण का इतिहास

4.3.1.2 संज्ञानात्मक मानचित्रण के अध्ययन की विधियां

4.3.1.2.1 मस्तिष्क इमेजिंग तकनीकें

4.3.1.2.2 आभासी वास्तविकता

4.3.1.2.3 स्थान विन्यास

4.3.1.2.4 भौगोलिक सूचना प्रणाली

4.3.1.3 संज्ञानात्मक मानचित्रण में त्रुटियाँ

4.3.2 मार्ग खोजना

4.3.2.1 मार्ग खोजने की विशेषतायें

4.3.2.2 मार्ग खोजने में प्रयुक्त उपकरण

4.3.2.2.1 मानचित्र

4.3.2.2.2 स्मार्ट फोन

4.3.2.2.3 स्मार्ट वातावरण

4.3.2.2.4 गतिशील यातायात सूचना सेवायें

4.3.2.2.5 पैदल यात्री दिशा ज्ञान और वाहन दिशा ज्ञान तंत्र

4.3.2.2.6 सर्वव्यापी कम्पयुटिंग

4.3.2.2.7 संवेदी अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए उपकरण

4.4 सारांश

4.5 मुख्य शब्द

4.6 समीक्षा प्रश्न

4.7 संदर्भ एवं अन्य पाठ्य सामग्री

4.8 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

* स्यामोलिमा घोष चौधरी, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद, आप में निम्नलिखित योग्यतायें होंगीः

- पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण और संज्ञान के अर्थ की व्याख्या करना;
- पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण पर विभिन्न परिप्रेक्ष्यों को संक्षेप में प्रस्तुत करना;
- पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण से संबंधित विकासात्मक प्रक्रियाओं को जानना;
- संज्ञानात्मक मानचित्रण के इतिहास को जानना;
- संज्ञानात्मक मानचित्रण के अध्ययन की विभिन्न विधियों को जानना;
- संज्ञानात्मक मानचित्रण में शामिल त्रुटियों को पहचाना; और
- मार्ग खोजने संबंधी व्यवहार और मार्ग खोजने में उपयोग किये जाने वाले उपकरणों के प्रकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

4.0 प्रस्तावना

मनोवैज्ञानिक मानव प्रकृति के बीच परस्पर क्रिया, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और ऐसे मुद्दों के अध्ययन में बड़े स्तर पर संलग्न हो सकते है। वे सामाजिक भौतिक स्तर पर भीड़, क्षेत्रीयता, दैनिक जीवन की भौतिक परिस्थिति के संबंध में सामाजिक स्थान का प्रबंधन कर सकते है। वे व्यक्तिगत स्तर के चर, जो मानव पर्यावरण अंतःक्रिया को प्रभावित करते हैं, जैसे प्रत्यक्षज्ञानात्मक प्रक्रियायें, स्थानीक संज्ञान व्यक्तित्व, आदि के अध्ययन में सूक्ष्म स्तर पर सम्मिलित भी हो सकते है। इस इकाई में हम सूक्ष्म स्तरीय चरों के साथ अध्ययन करने वाले अंतिम उपागम के साथ संलग्न होंगे और यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि इन प्रक्रियाओं की समझ ऐतिहासिक रूप से कैसे विकसित हुई। हम इस परिप्रेक्ष्य की सीमाओं का अध्ययन करेंगे और पर्यावरण मनोविज्ञान के नवीनतम अनुप्रयोगों को समझेंगे जो सूक्ष्म प्रक्रियाओं पर शोध के इस क्षेत्र से निकले हैं।

4.1 पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा और विशेषताएं

परम्परागत रूप से प्रत्यक्षीकरण को वातावरण में एक उद्दीपक से उत्पन्न होने के रूप में समझा जाता है जिसके बारे में सूचनात्मक मीडिया संवेदी अंगों को संदेश प्रेषित करता है। उद्दीपक विशेषताओं की आगे की प्रक्रिया मानव जीव में होती है और प्रत्यक्षीकरण तब होता है जब प्रत्यक्षणात्मक वस्तु, जो बाहर वातावरण में होती है, प्रेक्षक में बनायी जाती है जो बाहरी दुनिया के गुणों को प्रतिबिंबित करता है। यह प्रक्रिया जब वातावरण की विशेषताओं के मूल्यांकन के लिए विशिष्ट होती है, तो इसे पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण के रूप में जाना जाता है। जब पर्यावरण की विशेषताओं के मूल्यांकन में पहचान, पैटर्न, आकार और गति से संबंधित प्रश्न शामिल होते हैं, तो वे पर्यावरण के प्रत्यक्षीकरण से संबंधित होते हैं। पर्यावरणीय संज्ञान में परिकल्पना तैयार करना, आगे के निर्णय लेना और पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण के माध्यम से प्राप्त जानकारी के आधार पर लक्ष्यों पर काम करना

शामिल होता है। पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण से संबंधित एक प्रश्न का उदाहरण यह होगा, ''क्या मैंने अभी-अभी टायर फटने की आवाज सुनी है? या यह एक बन्दूक की गोली थी?'' प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक संज्ञान में लक्ष्य से संबंधित प्रश्न होते हैं। जैसे ''क्या मुझे कार से बाहर निकल कर इसकी जांच करनी चाहिये? क्या मुझे जल्द से जल्द भाग जाना चाहिये?''

मानव अस्तित्व के साथ-साथ मानव सामाजिक जीवन के लिए पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण का अत्यधिक मूल्य है। हालांकि, ऐतिहासिक रूप से पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण और संज्ञान का अध्ययन उपेक्षित विषय रहा है। इसमें अधिकतर प्रारंभिक अध्ययन प्रयोगात्मक उद्दीपक प्रतिक्रिया मॉडल के अन्तर्गत किये गये। पर्यावरण मनोविज्ञान के विकास के साथ-साथ वातावरण, जिसमें व्यवहार होता है, जो एक बाहरी चर के रूप में माने जाने के बजाय और पर्यावरण की स्थानिक भौतिक विशेषताओं पर ध्यान बढ़ रहा है। शोध की दो प्रमुख परम्परायें रही हैं: प्रत्यक्षीकरण का मनोविज्ञान, जहाँ पर्यावरण की भौतिक प्रत्यक्षज्ञानात्मक पद के रूप में अवधारणा की जाती है और सामाजिक मनोवैज्ञानिक परम्परा जो आपेक्षिक रूप से व्यवहार की बड़ी इकाई के रूप में होता है। अगले कुछ खंडों में, हम इन दो परम्पराओं में से प्रत्येक के भीतर के कुछ प्रमुख विचारकों का एक व्यापक अवलोकन करेंगे और पर्यावरण मनोविज्ञान के संर्कीण भौतिक अर्थों से व्यापक सामाजिक अर्थों की सैद्धांतिक गतिकी का पता लगायेंगे।

4.1.1 भौतिक-प्रत्यक्षज्ञानात्मक दृष्टिकोण

भौतिक प्रत्यक्षज्ञानात्मक परम्परा वातावरण की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं और भौतिक गुणों के बीच तदनुरूपत्य से संबंधित है, और इसे अन्दर बाहर की समस्या भी कहा जाता है (फ्लोयड आलपोर्ट, 1955)। **एगॉन ब्रंसविक**, (1947, 1957) इस विचारधारा के एक प्रारंभिक विचारक थे जिन्होंने पर्यवेक्षक के बजाय पर्यावरण की वस्तुनिष्ठ भौतिक विशेषताओं पर विचार करने की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण पर्यावरण से आने वाले संकेतों को समझने की एक प्रक्रिया है, और क्योंकि सभी संकेतों की समान पारिस्थितिक वैधता नहीं होती है, अर्थात वे वास्तविक वातावरण की विशेषताओं के साथ सामजंस्य की डिग्री के संबंध में भिन्न हो सकते है, ब्रसंविक के अनुसार संज्ञानात्मक प्रक्रियाये हमेशा संभात्य होती है, और प्रत्यक्षीकरण लगभग एक उपलब्धि है। संभात्य प्रक्रिया को समझने में पर्यवेक्षक की केन्द्रीय भूमिका पर प्रकाश डालते हुये ब्रंसविक ने मनुष्यों को एक सक्रिय भूमिका प्रदान की जो व्यवहारवादी दृष्टिकोण में मनुष्यों को दी गई। यह निष्क्रिय प्रतिक्रियाशील भूमिका से स्पष्ट रूप से अलग है। इस प्रकार, इसमें हम पर्यावरण-मानव संबंधों के प्रोत्साहन प्रतिक्रिया दृष्टिकोण में एक बदलाव को देखते है।

ब्रंसविक के अनुसार, प्रत्यक्षीकरण प्रक्रिया के अन्त में, समीपस्थ साधनों और दूरस्थ परिणामों के बीच जीव था जो परिधीय और केन्द्रीय प्रक्रियाओं के बीच एक क्षीण सह संबंध है। इस प्रकार प्रेक्षक समान रूप से सामंजस्य के बारे में लगातार परिकल्पना परीक्षण में शामिल रहता है। ब्रंसविक का मानना है कि कर्ता वातावरण के कार्यों में संलग्न होकर संभात्य निर्णय की शुद्धता को सत्यापित करता है। ये

प्रत्यक्षणात्मक उपलब्धि की कार्यात्मक वैधता की पुष्टि करता है। **गिब्सन** के प्रत्यक्ष प्रत्यक्षीकरण (1950) के सिद्धांत के अनुसार, पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के लिए आवश्यक सभी जानकारी की आपूर्ति करता है और इसमें अनुमान या किसी अन्य उच्च क्रम के संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की कोई भूमिका नहीं है। पर्यावरण में पर्याप्त प्रसंगगत जानकारी मौजूद होती है जिसका सीधे प्रयोग किया जा सकता है।

जैविक अनुकूलन प्रक्रियायें मनुष्यों को गहराई और दूरी के संकेतों को चुनने के लिए तैयार करती हैं जो आगे उन्हें वस्तुओं से और उनके बीच की दूरी को सीधे समझने में मदद करती है जो हमें पर्यावरण को समझने में मदद करती है। प्रत्यक्षीकरण वस्तुओं और परिस्थिति की विशेषताओं के बीच स्थिर संबंधों के हमारे विश्लेषण के आधार पर होता है।

उलरई नाइसर (1987, 1990) का प्रत्यक्षीकरण, जो वातावरण से जानकारी और वर्गीकरण जो ऊपर से नीचे की संज्ञानात्मक प्रक्रिया पर आधारित होता है, के बीच अन्तर करता है। नाईसर के अनुसार संज्ञानात्मक अनुमानात्मक प्रक्रियायें परिस्थिति की सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं से जुड़ी होती हैं। पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण पर भौतिक प्रत्यक्षज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य मूल्यवान है, यद्यपि वातावरण के सामाजिक और ऐतिहासिक सांस्कृतिक पहलुओं पर विशिष्ट विचार, जहाँ भौतिक प्रत्यक्षज्ञानात्मक घटनाओं और व्यक्ति दोनों को रखा गया है, गायब है।

4.1.2 सामाजिक-मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण पर सामाजिक मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में **कर्ट लेविन** (1951) का क्षेत्र सिद्धांत पहला है और सबसे प्रभावी सिद्धांत भी है। लेविन मनोविज्ञान में प्रत्यक्षज्ञानात्मक अध्ययन के ''वस्तुनिष्ठ व्यवहारवाद'' के बड़े आलोचक थे और उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सभी व्यवहार व्यक्ति के साथ-साथ वातावरण का भी परिणाम है। लेविन का क्षेत्र उपागम पर्यावरण की भौतिक विशेषताओं को महत्वपूर्ण मानता है और पर्यावरण के तत्वों को मनोवैज्ञानिक ना कि भौतिक वस्तुनिष्ठ डेटा के रूप में मानता है।

कथित वास्तविकता या मनोवैज्ञानिक वातावरण को लेविनियन परम्परा में ''मनोवैज्ञानिक परिस्थितिकी'' के संप्रत्यय के माध्यम से प्रमुखता ही गयी है। लेविन का मानना था कि मनोवैज्ञानिक वातावरण में पर्यावरण की भौतिक और सामाजिक विशेषताओं की व्याख्यात्मक भूमिका होती है। लेविन की इस मनोसामाजिक समझ ने अनुसंधान या सामाजिक रूप से प्रासंगिक मनोवैज्ञानिक शोध, विशेष रूप से 'नियोजित परिवर्तन' या 'सामाजिक इंजीनियरिंग का मार्ग प्रशस्त किया।

रोजर बार्कर (1951) ने लेविन का छात्र होने के नाते व्यक्तिगत व्यवहार को निर्धारित करने में पर्यावरण की भूमिका पर जोर दिया, और पर्यावरण की व्यक्तिगत कारकों के समान ही महत्वपूर्ण भूमिका बतायी। वह प्रयोगात्मक पद्धति के उपयोग और मानव व्यवहार की व्याख्या में व्यक्तिगत स्तर के व्याख्यात्मक चर के उपयोग के विरोध में थे। बार्कर ने व्यवहार का 'नमूना रिकॉर्ड' या बहुत विस्तृत अवलोकन

रिकार्ड प्राप्त करने के लिए प्राकृतिक निरीक्षण विधि का प्रयोग किया, क्योंकि यह व्यवहार परिस्थिति में हुआ था, जो उनके अध्ययन की इकाई थी। बार्कर ने अपने अध्ययन के माध्यम से यह बताया कि व्यवहार का स्थान या परिस्थिति व्यवहार पर सबसे मजबूत प्रभाव डालती है।

यूरी ब्रोफेनबेनर (1979) ने तंत्र के भीतर तंत्र और उपतंत्र के संदर्भ में व्यक्ति और पर्यावरण जो एक दूसरे से अंतक्रिया करते है, के बीच संबंधों की व्याख्या की। तंत्र और उपतंत्र इसलिए एक दूसरे पर आश्रित है और इसलिए एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव डालते है। अपने प्रणालीगत परिप्रेक्ष्य के माध्यम से ब्रोफेनबेनर ने एकदेशीय प्रभाव मॉडल की आलोचना की जो कठिन विज्ञानों की विशेषता है और इसकी अपेक्षा जैविक विज्ञान के साथ गठबंधन किया जहां द्विदिशीय प्रभावों पर ध्यान दिया जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे वातावरण की स्थानिक भौतिक विशेषतायें मोलीय अर्थ में व्यवस्थित दूसरे क्रम और प्रथम क्रम प्रभावों का गठन करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव-पर्यावरण अंतःक्रिया के संप्रत्य समय के साथ अधिक व्यवस्थित या मोलीय बन गये है। स्टोकोल्स (1987) ने एक ऐसी नामकरण पद्धति विकसित करने की आह्वान किया है, जो ''सामाजिक-भौतिक'' वातावरण का पर्याप्त रूप से वर्णन करती है और तरह-तरह से वातावरण की सामाजिक भौतिक विशेषतायें व्यक्तियों के विकास, व्यवहार और कल्याण को प्रभावित करती है। शोधकर्ताओं की दिलचस्पी इस बात में रही है कि पर्यावरण की स्थिति को सटीक रूप से समझने की क्षमता जन्म के समय मौजूद होती है या इसे बाद में विकास के दौरान हासिल किया गया है।

अपनी प्रगति की जांच करें 1

1) पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के भौतिक प्रत्यक्षज्ञानात्मक सिद्धांतों की विशेषताओं के कुछ प्रमुख विशेषतायें क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के सामाजिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के कुछ मुख्य विचार क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का कौन-सा सिद्धांत आपको सबसे अच्छा लगता है? क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

5) कर्ट लेविन अपने सिद्धांत में पर्यावरण की अवधारणा कैसे करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4.2 पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के विकास पर परिप्रेक्ष्य

4.2.1 व्यष्टि विकास परिप्रेक्ष्य

मनोविज्ञान में स्थानिक प्रत्यक्षीकरण के बारे में सबसे शुरुआती शोधों में से एक **जीन पियाजे और इनहेल्डर (1947)** द्वारा किया गया था। पियाजे के अनुसार, बच्चों का पर्यावरणीय ज्ञान क्रिया/अन्वेषण के अवसरों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जो बाल्यावस्था में प्रदान किये जाते हैं। एक बच्चे की शारीरिक परिपक्वता और पर्यावरणीय उत्तेजना के संबंध के उपयुक्त संयोजन को देखते हुये स्थानिक प्रत्यक्षीकरण की क्षमता सहित संज्ञानात्मक क्षमता का एक चरण उपयुक्त तरीके से प्रकट होता है। यह एक व्यष्टि विकास परिप्रेक्ष्य है बच्चा के संज्ञानात्मक विकास के विभिन्न चरणों से गुजरते हुये, स्थानीक प्रत्यक्षीकरण में गुणात्मक परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। पियाजे के अनुसार एक बच्चा स्थानिक समझ में वयस्क स्तर की क्षमता तक तभी पहुंचता है, जब वह 9 या 10 वर्ष की आयु को प्राप्त कर लेता है।

पियाजे ने प्रसिद्ध ''तीन पर्वतीय कार्य'' का उपयोग यह दिखाने के लिए किया कि प्रारंभिक जीवन में बच्चे की स्थान की समझ सीमित और अव्यवस्थित होती है, तीन पर्वतीय कार्य में, एक बच्चे को पर्वतों के तीन मॉडल दिखाये गये और पर्वतों के चारों ओर विभिन्न बिन्दुओं पर एक गुड़िया रखी गयी। बच्चे को प्रदर्शित पर्वतों के मॉडल को पुनर्गठित करना था ताकि वह सोच सके कि पर्वत गुडिया के दृष्टिकोण से कैसे दिखते है। ''स्थानीक संचयन'' और ''स्थानिक उत्पादों'' (लिबेन, 1981) के बीच उत्पन्न होने वाले अन्तर को नियंत्रित करने के लिए पियाजे और इनहेल्डर ने बच्चों को चित्रों के एक सेट से उस चित्र को चुनने का विकल्प भी दिया जिसमें उन्हें लगता है है कि यह गुडिया के दृष्टिकोण से मेल खाता है, और इसके अलावा बच्चों को गुड़िया को इस तरह बदलने की अनुमति दी कि वे किसी विशेष चित्र में प्रस्तुत दृष्टिकोण के साथ एक मेल बना सके। परिणाम में यह पाया गया कि लगभग चार वर्ष के बच्चों ने यह मान लिया कि गुड़िया तीनों पर्वतों को ठीक उसी तरह देखती है जैसे बच्चा खुद देखता है। दूसरे शब्दों में यह ''अंहवाद'' या गुड़िया के दृष्टिकोण से अपने स्वयं के दृष्टिकोण को अलग करने में असमर्थता का प्रमाण था।

पियाजे के अनुसार प्रारंभिक जीवन में छोटे बच्चे में स्थानिक दुनिया की एक मैट्रिक समझ के विपरीत एक ज्ञानात्मक क्रियात्मक समझ होती है। इसलिए बच्चे संस्थानिक संप्रत्ययों को समझने में सक्षम होते हैंः कौन सी वस्तु निकट है, जो एक दूसरे से घिरी हुई है, वस्तुओं का क्रम या पृथक्करण इत्यादि। यद्यपि, कम उम्र में स्थान की कोई यूकिलडियन समझ नहीं होती है। पियाजे के अनुसार बच्चे वस्तु के स्थायित्व के बाद ही स्थान और पर्यावरण को समझना शुरू करते है या यह विचार रखते है कि वस्तुएं भले ही दिखायी न दे, फिर भी वे मौजूद रहती हैं।

पियाजे के उसी व्यष्टि विकास तर्क को मानते हुये **सीगल और व्हाइट** (1975) ने संज्ञानात्मक मानचित्रण क्षमता के विकास का पांच स्तरीय मॉडल का प्रस्ताव रखा। समग्र संज्ञानात्मक विकास के साथ बच्चे में प्रतीकात्मक अमूर्तता और तार्किक सोच की क्षमता विकसित होती है और इस प्रक्रिया के सामानांतर स्थानिक प्रत्यक्षणात्मक कौशल का विकास भी होता है। पहले चरण में बच्चा – क) फोटोग्राफिक ज्ञान पर्यावरण स्थान में संदर्भ की एकल और अलग-अलग बिन्दुओं की स्मृति, स्थानों की फोटोग्राफिक स्मृति विकसित करता है।

दूसरे चरण में – ख) बच्चा मार्गों के आयोजन के संदर्भ के रूप में स्थान/भूमि चिन्हों के एकल बिन्दुओं का उपयोग करने में सक्षम होता है। तीसरे चरण में – ग) वातावरण के विशिष्ट और सीमित हिस्सों को आकार में संगठित करता है। घ) मार्ग ज्ञान, चौराहों पर विकल्प दिशाओं के क्रम को इस चरण में सीखता है और यह सोचने में सक्षम होता है कि रास्ते में उसे बायें दांये या सीधे कहा जाना है। आखिरी क्षमता जिसका विकास होता है वो ङ) है क्षेत्र के रास्तों को समन्वयित करने की क्षमता, इस तंत्र में वातावरण के संज्ञानात्मक मानचित्र को आकार देना। यह संज्ञानात्मक मानचित्र समग्र होता है और सर्वेक्षण ज्ञान पर आधारित होता है यह रास्ता ढूंढ़ने वाले की अपनी स्थिति से स्वतंत्र है और रास्ता ढूंढ़ने वाले को छोटे रास्ते विकसित करने, गंतव्य के लिए वैकल्पिक मार्ग खोजने और सामान्यतः सारे वातावरण को सफलतापूर्वक समझने में सक्षम बनाता है। यद्यपि विकासात्मक

मनोविज्ञान का कुछ समर्थन है, कि भूमि चिन्ह का ज्ञान पहले होता है उसके बाद मार्ग ज्ञान और सर्वेक्षण ज्ञान (उदाहरण के लिए हेर्मर और स्पेलके, 1994; जेनसेन ओस्मान और बिडेनबाउर, 2004; ल्यू, ब्रेमर और लेफकोविच, 2000; श्मेल्टर, जेन्सन-ओसमान और हेल, 2009; टोनऊची और टिसोटो, 2001)। इस विचार के लिए कोई समर्थन नहीं है कि व्यस्क रास्ता खोजने वाले या नये शहर में यात्री उदाहरण के लिए चरणों में एक ही तरह से पर्यावरण के संज्ञानात्मक मानचित्र विकसित कर सकते है।

4.2.2 सहजवाद परिप्रेक्ष्य

सहजवाद स्थिति के अनुसार बच्चों में स्थानिक प्रत्यक्षीकरण के लिए एक जन्मजात क्षमता होती है, जो शारीरिक परिपक्वता के साथ-साथ सीखने के अवसरों से स्वतंत्र होती है। इसी दिशा में सहजवादी सिद्धांतकारों लैडो, ग्लीटमैन और स्पेलक (1981) ने दिखाया कि यूक्लिडियन या स्थान के मैट्रिक गुण दृष्टि पर निर्भर नहीं करते है, और 25 वर्ष की कम उम्र में भी दृष्टिबाधित बच्चा दूरी को समझने और परिचित रास्तों के बीच कोणीय संबंध, वस्तुओं के बीच स्थानिक संबंध को समझता है और किसी अपरिचित पथ को नेविगेट करने के लिए मैट्रिक गुणों के बारे में आगे के लिए अनुमान लगाता है। यह परिणाम संज्ञानात्मक और स्थानिक विकास पर पियाजे के परिपक्वता संभात्य परिप्रेक्ष्य से स्पष्ट रूप से मेल नहीं खाते हैं। सहजवादी परम्परा के अन्य शोधकर्ताओं (हेर्मर और स्पेलके, 1994, 1996) ने प्रयोगात्मक रूप से दिखाया है कि बहुत छोटे बच्चे रंग या गंध जैसी गैर ज्यामितीय जानकारी का उपयोग करने में सक्षम नहीं होने पर स्थान को नेविगेट करने के लिए ज्यामितीय जानकारी का उपयोग करने में सक्षम होते हैं। विकासात्मक प्रक्रियाएं बच्चे को बाद के जीवन में गैर-ज्यामितीय जानकारी का प्रयोग करने में सक्षम बनाती हैं। यह शोध भी स्पष्ट रूप से बचपन में स्थानिक समझ के बारे में पियाजे की टोपोलॉजिकल धारणाओं से सहमत नहीं है।

यद्यपि सहजवादी सिद्धांतकारों ने अपने सावधानीपूर्वक तैयार किये गये प्रयोगात्मक अध्ययनों के माध्यम से, बच्चों की स्थानिक धारणाओं की समझ को काफी बढ़ाया है और बच्चों की स्थानिक समझ के बारे में कई गलत व्याख्याओं को स्पष्ट किया है परंतु सहजवादी सिद्धांत पर्यावरणीय कारकों और विकास प्रक्रियाओं, जो बच्चे को उन कौशलों में महारत हासिल करने में सहायता करती है, जो प्रारंभिक जीवन में केवल अपरिपक्व स्थिति में मौजूद हो सकती है, की भूमिका पर ध्यान देने में काफी हद तक विफल रहा है। कुछ शोधकर्ताओं (न्यूकाम्ब, 2002) ने स्थान प्रत्यक्षीकरण के संबंध में सहजवादियों द्वारा दिये गये विशिष्ट ज्यामितीय मॉडलता के दावे के बारे में भी संदेह जताया है।

4.2.3 अधिगम का परिप्रेक्ष्य

सहजवादी सिद्धांतकारों के विपरीत अधिगम सिद्धांत उपागम स्थानिक अधिगम और स्थानिक चिन्तन में सांस्कृतिक निर्देशन के महत्व पर जोर देता है। उदाहरण के लिए गोवेन (1993) ने बताया कि कैसे दैनिक कार्यों के समस्या समाधान में जैसे निर्देश देना, योजना बनाना, कार्यक्रम को क्रियान्वित करना, रास्ता खोजने वाले

लोग सामाजिक और सांस्कृतिक जानकारी का प्रयोग करते हैं। संज्ञानात्मक मानचित्रण इसलिए सांस्कृतिक संदर्भ के लक्ष्यों, संचार परम्परा जिसमें यह होता है, से प्रभावित होता है। अनुभवजनक शोध के माध्यम से गौवेन (2001) ने प्रतिनिधित्व की समझ को बताया। उदाहरण के लिए मानचित्र के लिए पहले यह समझने की आवश्यकता होती है कि नक्शा वास्तविक दुनिया का चित्रण है और दूसरा प्रतिनिधित्व के पीछे के अर्थ को भी समझना। इस अर्थ को समझना स्कैफोल्डिंग की प्रक्रिया से सरल होता है, जिसमें संस्कृति के अनुभवी सदस्य युवा सदस्यों को अप्रत्यय रूप से और स्पष्ट रूप से निर्देशन और सहयोग करते है। हालांकि, इन सभी प्रक्रियाओं में सांस्कृतिक साधनों की तरह, किसी के द्वारा ध्यान नहीं दिये जाने या अस्वीकृत होने की प्रवृत्ति होती है। अनजाने में सांस्कृतिक साधनों की मानव संज्ञानात्मक व्याख्यात्मक प्रक्रियाओं में इतनी सहज अपस्थिति होती है कि उनकी मध्यस्थता की भूमिका को काफी हद तक अनदेखा किया गया है। अधिगम सिद्धांत परिप्रेक्ष्य वातावरण के सामाजिक सांस्कृतिक पहलुओं पर ध्यान देने के लिए महत्वपूर्ण है।

हालांकि भाषा स्केफोलडिंग और अन्य सांस्कृतिक कलाकृतियों के महत्व पर जोर डालकर यह परिप्रेक्ष्य बच्चों को उनके पर्यावरण से प्राप्त प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया, जो बच्चे सक्रिय अन्वेषण से प्राप्त करते है, को महत्व नहीं देता है। स्थानिक प्रतिनिधित्वों और स्थानिक विचार के अनुकूली मूल्य को भी इस परिप्रेक्ष्य में काफी हद तक नकारा गया है।

4.2.4 अतःक्रियात्मक परिप्रेक्ष्य

सहजवादी और अधिगम के दृष्टिकोण के बीच एक मध्य आधार अंतःक्रियावादी सिद्धांतों (न्यूकॉम्ब, 1908; न्यूकॉम्ब और हटनलोचर, 2000) द्वारा प्रदान किया गया है। ये सिद्धांत क्षेत्र में ज्यादा व्यापक है और यह मानते है कि भ्रूण विज्ञान, तंत्रिका परिपक्वता, वातावरणीय सरलीकरण और सांस्कृतिक निर्देशन – सभी स्थानिक विकास में योगदान देते है और इनमें से किसी को भी दूसरे से अधिक विशेषाधिकार नहीं दिया जा सकता है।

अपनी प्रगति की जांच करें 2

1) स्थान प्रत्यक्षीकरण पर पियाजे के सिद्धांत का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

2) पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण के विकास पर सहजवादी स्थिति और सीखने के सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य की तुलना करें।

.....

.....

.....

3) स्थानिक प्रत्यक्षीकरण के विकास पर अंतःक्रियावादी स्थिति क्या है?

.....

.....

.....

4) आप किसकी स्थिति से सबसे ज्यादा सहमत है? क्यों?

.....

.....

.....

4.3 पर्यावरण संज्ञान

पर्यावरणीय संज्ञान विभिन्न व्याख्यात्मक, निर्णय लेने के और लक्ष्य-उन्मुख व्यवहार को संदर्भित करता है जो मनुष्य भौतिक वातावरण का संचालन करते समय करते है। यह प्रत्यक्षज्ञानात्मक कारकों से परे है और इसमें संज्ञानात्मक मानचित्रण, वातावरणीय मूल्यांकन, वातावरणीय जोखिम प्रत्यक्षीकरण, वायु/पानी गुणवत्ता प्रत्यक्षीकरण, अस्थायी निराशावाद, आदि जैसी प्रक्रियाएं शामिल है। इस भाग में हम पर्यावरणीय संज्ञान के उदाहरण के रूप में संज्ञानात्मक मानचित्रण का अध्ययन करेंगे।

4.3.1 संज्ञानात्मक मानचित्रण

एक संज्ञानात्मक मानचित्रण, पर्यावरण के मुख्य तत्वों, सापेक्ष स्थानों आदि के प्रतिनिधित्व के साथ-साथ स्थानिक वातावरण का एक मानसिक प्रतिनिधित्व है जो किसी भी व्यक्ति को स्थान के संचालन करने में मदद करता है। अमेरिकन मनोवैज्ञानिक एसोसिएशन के अनुसार, संज्ञानात्मक मानचित्रण, ''एक वातावरण की मानसिक समझ है, जो परीक्षण और त्रुटि के साथ-साथ निरीक्षण के माध्यम से बनाई गयी है। यह संप्रत्यय इस धारणा पर आधारित है कि एक व्यक्ति प्रासंगिक संकेतों को प्राप्त और इक्ट्ठा करता है न कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यक जानकारी के निष्क्रिय अभिग्राहक के रूप में कार्य करता है। मनुष्यों और अन्य जानवरों के पास अच्छी तरह से विकसित संज्ञानात्मक मानचित्र होते है, जिनमें स्थानिक जानकारी होती है जो उन्हें स्वयं को उन्मुख करने और वास्तविक दुनिया में अपना रास्ता खोजने में सक्षम बनाती है, इन मानचित्रों में प्रतीकवाद और अर्थ भी निहित होते हैं''।

4.3.1.1 संज्ञानात्मक मानचित्रण का इतिहास

एडवर्ड टॉलमैन (1948) मनोविज्ञान में ''संज्ञानात्मक मानचित्र की अवधारणा को पेश करने के लिए प्रसिद्ध है। इस संप्रत्य के साथ उन्होंने उस समय प्रचलित स्थान प्रत्यक्षीकरण के लिए उद्दीपक-प्रतिक्रिया उपागम या भौतिक प्रत्यक्षज्ञानात्मक उपागम को चुनौती दी।

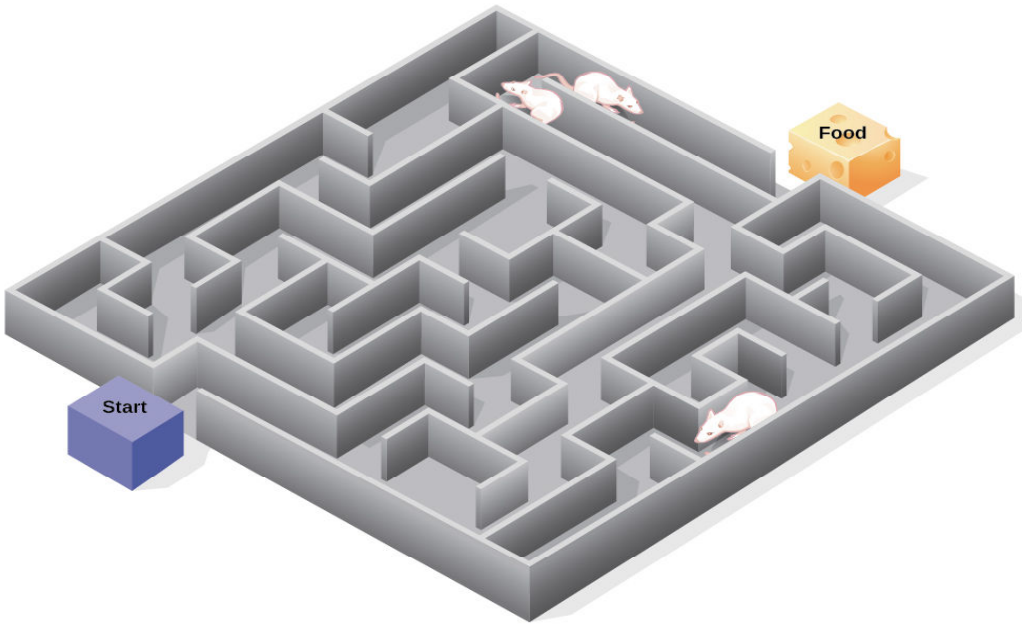

चित्र 4.1 एडवर्ड टॉलमैन ने पाया कि चुहे भूल भूलैया के संचालन के लिए संज्ञानात्मक मानचित्र का प्रयोग करते है

स्रोतः OpenStax Psychology, Learning, Operant Conditioning | OhioLINK (oercommons.org)

केविन लिंच (1981) एक मनोवैज्ञानिक नहीं थे, फिर भी उनका पर्यावरण मनोविज्ञान के विकास पर विशेष रूप से उनके स्केच मैप पद्धति और उनके शहर के संरचनात्मक तत्वों संबंधी कार्य का बहुत प्रभाव पड़ा। लिंच द्वारा विकसित संप्रत्य स्पष्टता और छवि क्षमता की पर्यावरण मनोविज्ञान और शहर नियोजन में महत्वपूर्ण उपयोगिता है। उन्होंने बताया कि जैव मनुष्य स्पष्ट संज्ञानात्मक मानचित्र बनाने में सक्षम होते हैं तो वे राहत महसूस करते हैं और जब वे इसमें उलझा हुआ महसूस करते है तो वे डरते हैं।

संज्ञानात्मक मानचित्रण के इतिहास में एक अन्य महत्वपूर्ण घटना ''छवि और पर्यावरणः संज्ञानात्मक मानचित्रण और स्थानिक व्यवहार (1973)'' नामक एक संपादित पुस्तक का प्रकाशन था। यह पुस्तक डाउन्स और स्टी द्वारा लिखी गयी एक उत्कृष्ट पुस्तक है जो आज भी शोधकर्ताओं द्वारा उपयोग में लायी जाती है।

पर्यावरण मनोविज्ञान में संज्ञानात्मक मानचित्रण पर लिंच के काम का विस्तार करने वाले दो सिद्धांतकार कपलान (1978) और डोनाल्ड एपलयार्ड (1969) थे। कापलान और कापलान (1978) ने पर्यावरणीय वरीयता का एक मॉडल विकसित किया, जिसमें उन्होंने यह समझाने की कोशिश की कि अलग-अलग लोग एक ही भौतिक वातावरण को अलग-अलग क्यों देखते हैं और उसका मानचित्र बनाते है। उन्होंने पर्यावरण के चार पहलुओं की पहचान की जो संवेगात्मक अनुभवों से संबंधित है, जो इस प्रकार हैः सुसंगतता, स्पष्टता, जटिलता और श्रेष्ठता।

कापलान के अनुसार पर्यावरण के तत्व सुसंगता और स्पष्टता से संबंधित होते है और पर्यवेक्षक को स्वयं से उन्मुख करने में सुविधा प्रदान करते है, जबकि जटिलता

और रहस्य से संबंधित वातावरण के तत्व कर्ता को उस सीमा तक प्रभावित करते हैं, जिस तक वह पर्यावरण के साथ जुड़ाव महसूस करें।

डोनाल्ड एपलयार्ड (1969) ने व्याख्या की, कि एक शहर की छवि क्षमता सामान्य योजनाकारों और योजनाकार नागरिकों की दो समूह प्रत्यक्षकरण का एक उत्पाद है। एपलयार्ड के अनुसार मानसिक मानचित्रों को शहर की सूरत में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार नवीकृत या पुनःसंरचित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, यदि एक निश्चित स्थलचिन्ह, जो लोगों के संज्ञानात्मक मानचित्र में एक नींव बना है, किसी प्राकृतिक आपदा या विनाश के कारण बदल जाता है या गायब हो जाता है, तब लोग के संज्ञानात्मक मानचित्र, स्थानिक ज्ञान जो अतीत में इतने सालों में निर्मित हुआ था, का विवरण खो देते हैं और मानचित्र अपने-आप अस्पष्ट और अशुद्ध बन जाते है। एपलयार्ड (1970, 1976) ने यात्रा के लिए संज्ञानात्मक मानचित्र को जोड़ा और बताया कि कार चलाने वाले यात्रियों के पास, बस लेने वालों की अपेक्षा अधिक सुसंगत संज्ञानात्मक मानचित्र होते है इनमें से कुछ परिणामों का संज्ञानात्मक मानचित्रण, विशेष रूप से संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान के बाद, के विकास पर काफी असर पड़ा है।

4.3.1.2 संज्ञानात्मक मानचित्रण के अध्ययन की विधियां

प्रौद्योगिकी और दृश्यता तकनीकों में तेजी से विकास के साथ संज्ञानात्मक मानचित्रण का अध्ययन करने के लिए कई नई विधियां विकसित की गयी हैं। केबिन सिंच की स्केच टौप विधि सबसे लोकप्रिय विधियों में से एक है जो समय की कसौटी पर सही उतरी है। कुछ अन्य विधियों का उपयोग किया जाता है, जो दूरी का अनुमान करने, एक विशेष स्थानिक क्षेत्र में तत्वों को सूचीबद्ध करने, पर्यावरण के माध्यम से समझना आदि संज्ञानात्मक मानचित्रण का अध्ययन करने में उपयोग की जाने वाली कुछ नई विधियों की चर्चा यहाँ की जा रही है।

4.3.1.2.1 मस्तिष्क इमेजिंग तकनीक

मस्तिष्क इमेजिंग तकनीक जैसे इलेक्ट्रोइनसेफलोग्राम (ईईजी), मैगनेटिक रियोजन्स इमेजिंग (एमआरआई), फंक्शनल मैगनेटक रिसोनन्स इमेजिंग (एफएमआरआई) और पॉजिट्रांन एमिशन टोमोग्राफी (पीईटी) स्कैन का उपयोग संज्ञानात्मक मानचित्रण और मार्ग ढूंढ़ना के तंत्रिका सहसंबंधों की जांच के लिए किया जाता है। हेड और आइसोम (2010) और एटचामेंडी और बोहबोर (2007) ने एमआरआई स्कैन का प्रयोग कर शोध में पहले के मस्तिष्क धान अध्ययनों की खोज की पुष्टि की कि हिप्पोकैम्पस का मार्ग ढूंढ़ने में भूमिका है, जबकि कॉडेट न्यूक्लियस मार्ग अधिगम से जुड़ा है।

बाद के शोध उदाहरण के लिए मॉरिस और पार्सलो (2004) ने मार्ग ढूंढ़ने में हिप्पोकेम्पस के अतिरिक्त संरचना जैसे कि पैराहिप्पोकेम्पस के भूमिका को बताया। एक दिलचस्प अध्ययन में मैगुइरे और उनके साथियों ने (1997) में पीईटी स्कैन का प्रयोग कर शोध डिज़ाइन किया, उन्होंने लंदन में अनुभवी टैक्सी ड्राइवरों को दिये गये बिन्दु 'अ' से बिन्दु 'ब' तक के सबसे छोटे मार्ग का वर्णन करने के लिए कहा गया। यहाँ पर पूर्वानुमान यह था कि बहुत परिचित वातावरण में स्थानिक व्यवहार

में अर्थगत स्मृति शामिल होती है। अध्ययन के परिणाम बताते है कि लम्बे समय से स्थापित स्थानिक दशा के प्रसंस्करण में हिप्पोकैम्पस शामिल होता है।

जेनज़ेन और जेनसन (2010) ने एफएमआरआई की रीडिंग का उपयोग करते हुये एक आभासी भूल भलैया में निरर्थक या अस्पष्ट मार्ग खोजने की जानकारी को उपयोगी से अलग करने की मस्तिष्क की क्षमता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया गया कि पैराहिप्पोकेम्पस गाइरस की, संक्षिप्त रूप से देखे जाने पर भी, प्रासंगिक वस्तुओं के प्रति प्रतिक्रिया करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। अभी हाल के एक अध्ययन में शर्मा, कौशल, चंद्रा, सिंह, मित्तल और दत्त (2017) ने मस्तिष्क क्षेत्रों और प्रक्रियाओं, जिनका उपयोग तब किया जाता है जब लोग भूलभलैया जैसे वातावरण में लैंड मार्क का उपयोग करते हैं, में किया। उन्होंने पाया कि बायाँ गोलार्ध क्षेत्र विशेष रूप से पैरीटल कौर्टेक्स स्थलों की प्रासंगिक जानकारी को एन्कोड करने के लिए संवेदी संकेतों और स्मृति के एकीकरण में शामिल है।

4.3.1.2.2 आभासी वास्तविकता

लम्बी आभासी वास्तविकता को बहुदा वास्तविक वातावरण के प्रतिनिधि के रूप में माना जाता है और आभासी वास्तविकता का उपयोग डिजाइन त्रुटियों को कम करने के लिए कृत्रिम वातावरण में मार्ग ढूंढ़ने के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग के ईवार्ट और जॉनसन (2021) में शोध प्रतिभागियों को एक परिचित वास्तविक वातावरण और उसी इमारत के आभासी वास्तविकता वातावरण में एक मार्ग खोजने के कार्य को पूरा करने के लिए कहा। अध्ययन में मार्ग ढूंढ़ने के कार्य को पूरा करने में लगने वाले समय में मात्रात्मक सुधार दिया गया। वी आर ईर्शाद, पर्किस और आजम (2021) ने एक लम्बे आभासी वास्तविकता वातावरण में उपयोग कर्त्ताओं के कथित अनुभवों की जांच की। नियंत्रित स्थिति के प्रतिभागियों को बिना किसी रास्ता खोजने के संकेतों के बिना आभासी वास्तविकता के संपर्क में लाया गया था, और प्रायोगिक समूहों के प्रतिभागियों को स्थिर और गतिशील रास्ता खोजने के संकेतों के साथ आभासी वास्तविकता से अवगत कराया। परिणामों में देखा गया कि रास्ता खोजने के संकेतों ने तनाव को कम किया, प्रायोगिक समूह में इसका सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हुआ, जबकि नियंत्रित समूह को बिना किसी रास्ता खोजने के संकेतों के आभासी वास्तविकता को नेविगेट करना पड़ा। नियंत्रित समूह में हृदय गति काफी अधिक पायी गयी। इस अध्ययन का अनुप्रयोग यह है कि लम्बे आभासी वास्तविक वातावरण के उच्च जोखिम वाले आपातकालीन परिदृश्यों में लोगों को प्रशिक्षण देने से वास्तविक जोखिम भरे वातावरण में उनके जीवित रहने की संभावना में सुधार हो सकता है।

4.3.1.2.3 स्थान विन्यास

इस पद्धति को यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में 1980 के दशक में जिसे हिलियर और उनकी टीम (हिलियर और हैनएन 1984; हिलियर और उनके साथी, 1987)। यह स्थान ज्यामितिक प्रतिनिधित्व को उत्पन्न करने के लिए ज्यामितिक विशेषताओं जैसे

दृष्टि की रेखा, दृष्टि प्रत्यक्षीकरण आदि को मानव व्यवहार जैसे गति और व्यवसाय के साथ जोड़ता है। इस ज्यामितिय प्रतिनिधित्व का मात्रात्मक रूप से विश्लेषण किया जा सकता है, ताकि संपूर्ण तंत्र की स्थिति में या उसके भागों में प्रत्येक स्थानिक तत्व की भूमिका निर्धारित की जा सके। स्थान विन्यास विश्लेषण का उपयोग करते हुये पर्यावरण मनोवैज्ञानिक सामाजिक पूर्वगामी, और भौतिक स्थान के परिणामों जैसे एकीकरण प्रवास, अल्पसंख्यक बस्ती आदि का अध्ययन करते हैं।

हक (2003) ने एक शोध किया, जिसमें स्वयं सेवकों ने शहर के बड़े अस्पताल से परिचित होने के बाद ''खुली तलाशी में भाग लिया। अस्पतालों का विश्लेषण स्थान विन्यास मापन का प्रयोग कर किया गया। यह पाया गया है कि प्रवेश द्वार की गहराई का प्रभाव रास्ता खोजने पर पड़ता है और इसी तरह से इमारत की छानबीन की जाती है। साथ ही यह भी पाया गया कि मार्ग की खोज अन्वेषण दृष्टि की रेखाओं और रिक्त स्थानों के बीच की कनेक्टिवीटी से प्रभावित होते थे जो सभी स्थान की सुगमता को बढ़ाते हैं। इस अध्ययन से स्थान विन्यास तकनीक का प्रयोग, मार्ग खोज और विन्यास विश्लेषण में संज्ञानात्मक मानचित्रों के उपयोग को समझने के लिए किया गया।

4.3.1.2.4 भौगोलिक सूचना प्रणाली

भौगोलिक सूचना प्रणाली स्थानिक सूचनाओं को टैग करने, कोडिंग करने, इस तरह के आंकड़ों का दृश्य रूप में प्रतिनिधित्व करने और पैर्टन और उसके संबंध को समझने के लिए उनका विश्लेषण करने के लिए एक कम्प्यूटर प्रणाली है। पृथ्वी की स्तह पर कोई भी स्थिति जिसमें अक्षांक्ष, देशांतर, पिन कोड, जिप कोड या पता के संदर्भ में पहचान हो, जीपीएस में फीड किया जा सकता है और बाद में विभिन्न भौगोलिक स्थानों और ऐसी जगहों पर रहने वाले लोगों की समाजशास्त्रीय विशेषताओं का विश्लेषण तुलना और अन्तर करने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

बोर्स्ट और उनके सहयोगियों ने (2009) बुर्जग व्यक्तियों को जी आई एस का उपयोग करते हुये गली में बगीचे के सामने चलने के लिए प्रोत्साहित किया और रास्तों में कूड़ा सीढ़ियों या ढलान दे कर चलने से हतोस्ताहित किया। इस तरह की जानकारी स्पष्ट रूप से शहरी स्थानों को डिजाइन करने के साथ-साथ वृद्धावस्था मनोविज्ञान के लिए प्रासंगिकता रखती है। मार्ग खोजने के संदर्भ में विशेषकर चेन, सातों और झेंग (2021) ने यात्रियों के बीच पर्यावरणीय जानकारी और रास्ता खोजने की समझ के प्रदर्शन की जांच की। उन्होंने पाया कि स्थानीय यात्रियों की तुलना में विदेशी यात्रियों द्वारा पहचान योग्य सड़कों का उपयोग करने की अधिक संभावना है। इसके अलावा कागज के नक्शों का उपयेाग करने वाले प्रतिभागियों में इलेक्ट्रानिक मानचित्रों का उपयोग करने वालों की तुलना में प्रत्यक्ष इमारतों की स्थल चिन्ह के रूप में प्रयोग करने की अधिक संभावना है। संचालन यंत्र कागज/इलेक्ट्रानिक मानचित्र से परिचित होने के कारण चलने में लगा समय कम हुआ।

4.3.1.3 संज्ञानात्मक मानचित्रण में त्रुटियां

बाहरी वातावरण के संज्ञानात्मक मानचित्रण या मानसिक प्रतिनिधित्व का संप्रत्यय त्रुटिपूर्ण है (टवर्सकी, 1993) क्योंकि संज्ञानात्मक मानचित्र, मानचित्र कला के सिद्धांतों के समान काम नहीं करता है। जब व्यक्तियों को एक मानसिक मानचित्र बनाने के लिए कहा जाता है, तो वे उस स्थान या मार्ग के बारे में जानकारी के अलग-अलग सेट तैयार करते है जिसे किसी व्यक्ति ने समय के साथ अर्जित किया है। जानकारी के विविध टुकड़े सभी दृश्य प्रारुप में नहीं हो सकते हैं, वे वास्तविक अनुभव या जगह के बारे में सुनी गयी कहानियों पर आधारित हो सकते है और जैसे सभी निर्मित सामग्री स्मृति की अनियमितताओं पर निर्भर होती है। संज्ञानात्मक मानचित्रण की प्रक्रिया में कई विकृतियां लोगों द्वारा उपयोग किये जाने वाले मानसिक संक्षिप्त रूप या अनुमान के कारण आ सकती हैं। टवर्सकी ने संज्ञानात्मक मानचित्रण में कुछ त्रुटियां को सूचीबद्ध किया है जो एकांत या विभिन्न संयोजनों में हो सकती है। वे निम्नलिखित हैंः

पहला, स्मृति में स्थान का संज्ञानात्मक प्रतिनिधित्व पदानुक्रमित होता है जबकि मानचित्र में वातावरण का प्रतिनिधित्व क्षैतिज या द्वि-आयामी है। यह संज्ञानात्मक मानचित्रण में त्रुटियों का परिचय देता है। टवर्सकी ने हर्टल और जोनाइड्स (1985) द्वारा किये गये एक अध्ययन को उद्धरित किया जिसमें प्रतिभागियों को शहर में इमारतों के व्यक्तिपरक समूह, कि वे वाणिज्यिक या शैक्षिक उद्देश्यों के लिए थे या नहीं, बनाने के लिए कहा गया था। इसके पश्चात प्रयोज्यों को इमारतों के जोड़े के बीच की दूरी का निर्णय लेने के लिए कहा गया। परिणाम में यह पाया गया कि दो कार्यात्मक समूहों के बीच दूरियों के सापेक्ष व्यावसायिक बनाम शैक्षिक इमारतों के बीच की दूरी को प्रयोज्यों ने कम करके आंका। इस प्रकार इस अध्ययन ने संज्ञानात्मक मानचित्रों की पदानुक्रमित संरचना के लिए साक्ष्य प्रदान किया, जो संज्ञानात्मक मानचित्र त्रुटियों की और इशारा करता है।

दूसरा, संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य यह है कि आसपास के स्थानों के बीच की दूरी दूर के स्थलों के बीच की दूरी की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देती है, हालांकि इसका सही अंदाजा लगाना मुश्किल है। स्मृति से दूरी के निर्णय लेने में भी इसी तरह की घटना होती है।

तीसरा, मनुष्यों के दिमाग में संज्ञानात्मक संदर्भ बिन्दु, दिशा, पता आदि के पूछे जाने पर, आमतौर पर एक बिलकुल सही भौगोलिक संदर्भ बिंदु नहीं होते हैं। बल्कि लोग स्थानिक वातावरण का वर्णन उन स्थानों के संदर्भ में करते हैं, जो उन्हें लगता है कि जिनका दर्शकों को पता हो सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी से उनके डाक पते के बारे में पूछते है, तो वह कह सकती है कि वह इग्नू (परिसर) के समीप में रहती हैं जबकि यदि कोई विदेशी यही बात पूछंता है तो वह उन्हें दिशा निर्देशों का जटिल समुच्चय दे सकती है कि साकेत मॉल या साकेत मेट्रो स्टेशन भूमि चिन्ह बिन्दु के रूप में बता सकती है। कम ज्ञात स्थानों को भूमि

चिन्हों से उनकी दूरी के रूप में वर्णित करने की यह प्रक्रिया मानचित्रण में असीमित दूरी की त्रुटि का परिचय देती है।

चौथा, जब मानचित्र पर दो या कई स्थानों को एक दूसरे के सापेक्ष याद किया जाता है, तो उन्हें एक दूसरे के साथ संरेखित करने की एक अनुभवी प्रकृति होती है, जिससे त्रुटियां होती हैं। यदि मानचित्र पर अधीनस्थ इकाइयों (उदाहरण महाद्वीपों) को संरेखित के रूप में याद किया जाता है, तो अधीनस्थ इकाइयों (उदाहरण शहरों) के सापेक्ष स्थान को भी बदले हुये रूप में याद किया जायेगा।

पांचवा, संज्ञानात्मक मानचित्रण रोटेशन त्रुटियों से ग्रस्त हो सकता है। जब एक संदर्भ फ्रेम और एक वस्तु का उन्मुखीकरण परस्पर विरोधी होता है, तो वस्तु की धुरी को संदर्भ फ्रेम की धुरी की और घुमाने की प्रवृत्ति होती है। यह रोटेशन त्रुटियों को दर्शाता है।

कोडिंग के लिए अधूरी जानकारी उपलब्ध होने के कारण संज्ञानात्मक मानचित्रों में गलतियां हो सकती है। एक व्यक्ति के पास शहर के उस हिस्से के बारे में कोड की गई कोई जानकारी नहीं हो सकती जहां वे कभी नहीं गये हो। इसी प्रकार विशेष प्रकृति के अनुभवों से शहर के कुछ हिस्सों को दूसरों की तुलना में अधिक विशिष्ट रूप से दर्शाया जा सकता है। जब व्यक्ति संज्ञानात्मक मानचित्रकार अपूर्ण जानकारी का उपयोग करते है तो समग्र संज्ञानात्मक मानचित्रों में भी व्यवस्थित विकृतियां देखी जा सकती है।

संज्ञानात्मक मानचित्रण में सभी अनियमित भौगोलिक विशेषताओं को सुचारू किया जा सकता है। घुमावों और कोणों को समकोण में नियमित किया जा सकता है। दूरी के निर्णय आमतौर पर वास्तविक माप पर आधारित नहीं होते है; दूरी के सन्निकटन से धीरे-धीरे विकृतियां आ जाती हैं। दूरी को आमतौर पर तब लम्बा माना जाता है जब सड़क के किनारे बाधायें मोड़ या उभार या यहाँ तक कि अव्यवस्था होती है – कुछ भी जो उनके बीच कम जानकारी वाले समदूरस्थ स्थानों के व्यक्तिपरक निर्णयों की तुलना में अधिक मध्यवर्ती जानकारी देता है (बार्न, 1979), अनुभव सिद्ध रीति या नियम जो प्रयोग होता है कहता है, कि मार्ग लम्बा होना चाहिये यदि उनके साथ कई अन्य स्थान हों।

अन्य कारक जैसे सामाजिक आर्थिक स्थिति और एक शहर में रहने के वर्षों के अनुभव, गतिशीलता आदि का उन विकृतियों में योगदान है, जो संज्ञानात्मक मानचित्रण में साथ-साथ होते हैं। गालेज और स्पेकटर (1978) ने एक बहुआयामी स्केलिंग प्रक्रिया का उपयोग करते हुये कोलम्बस ओहियो के संज्ञानात्मक मानचित्रों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि लोगों के शहर में रहने का जो समय था, वो कितने समय से शहर में रह रहे हैं और विशिष्ट स्थानों के साथ उनका परिचय उनके संज्ञानात्मक मानचित्रों में विकृतियों से संबंधित था।

अपनी प्रगति की जांच करें 3

1) संज्ञानात्मक मानचित्रण क्या है?

.....

.....

.....

2) संज्ञानात्मक मानचित्रण के इतिहास में कुछ ऐतिहासिक घटनायें क्या हैं?

.....

.....

.....

3) संज्ञानात्मक मानचित्रण के अध्ययन के विभिन्न विधियां क्या हैं?

.....

.....

.....

4) भौगोलिक सूचना प्रणाली कैसे काम करती है?

.....

.....

.....

4.3.2 मार्ग खोजना

मार्ग खोजना – संज्ञानात्मक मानचित्रण और स्थानिक अनुभूति का एक अनुप्रयोग है। पासिनी (1996) के अनुसार, ''मार्ग खोजना में वे सभी मानसिक प्रक्रियायें शामिल हैं जो उद्देश्यपूर्ण गतिशीलता में सम्मिलित है''। इसमें जानबूझकर बिन्दु अ से बिन्दु ब तक जाना शामिल है, यह जानना कि कोई व्यक्ति अपने गतत्व तक पहुंच गया, और यह भी कि वह बिंदु अ पर वापस जाने में सक्षम है। यद्यपि मार्ग खोजना और संचालन का परस्पर उपयोग किया जाता है, वे समान नहीं है। उदाहरण के लिए गूगल मानचित्र के संचालन में कर्त्ता के स्थान और यात्रा की दर को अपडेट करना सम्मिलित है (यह निर्भर करता है कि कोई पैदल चल रहा है, साईकिल चला रहा है, दो पहिया या चार पहिया वाहन का उपयोग कर रहा है) क्योंकि कर्त्ता एक गंतव्य की और एक मार्ग के साथ चलता है। इसके विपरीत मार्ग खोजने में मार्गों के मौजूदा नेटवर्क में से एक विशेष पथ का चयन शामिल है, एक यात्रा के दौरान कई रास्तों के बीच संबंध बनाना और किसी के उद्देश्य/लक्ष्य के आधार पर सबसे अच्छा मार्ग चुनना सम्मिलित है। डार्कन और पीटरसन (2002) के अनुसार, मार्ग खोजना ''संचालन का संज्ञानात्मक तत्व है''। मार्ग खोजने में गति

शामिल नहीं है जबकि संचालन गति और संज्ञानात्मक मार्ग खोजने का संयोजन है।

4.3.2.1 मार्ग खोजने की विशेषतायें

मार्ग खोजना एक अंतःविषय क्षेत्र है जिसमें संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, ग्राफिक डिजाइन, स्थल-दृश्य वास्तुकला, शहरी नियोजन, संगठनात्मक व्यवहार और कई अन्य क्षेत्रों शामिल हैं और शाखा के आरम्भ के बाद से इनका योगदान है। पर्यावरण मनोवैज्ञानिकों के लिए रुचिकर तरीके खोजने में शामिल व्यवहार तत्वों में कौशलों, अनुभवों, लोगों की योग्यता के साथ-साथ प्रत्यक्षज्ञानात्मकता और संज्ञानात्मक प्रक्रियायें शामिल हैं। मार्ग खोजने के लिए संगत व्यवहारात्मक कौशलों में संकेतों को पढ़ने और उनका पालन करने की क्षमता, दीर्घकालिक और कार्यशील स्मृति, दिशा निर्देश पूछना, मानचित्र पढ़ना, स्थानिक खाका की एक सुसंगत समझ बनाना, आदि हो सकते हैं। व्यक्तिगत स्तर के चर और स्थितिजन्य कारक दोनों ही मार्ग खोजने में योगदान कर सकते हैं।

बीजमैन (1982) ने चार मार्ग-खोज उपायों या शैलियों का सुझाव दिया है जो व्यवहारिक प्रत्यक्षज्ञानात्मक संज्ञानात्मक तत्वों पर आधारित है।

पहला, कोई व्यक्ति अपने गंतव्य का दृष्टिगत रूप से पता लगा सकता है और इसकी ओर अपना रास्ता निरन्तर खोज सकता है। यह विशेष रूप से बाहरी, मध्यम से बड़े स्थानों के लिए उपयोगी है।

दूसरा, कोई व्यक्ति उस गतंव्य की और ''संकेत'' का अनुसरण कर सकता है जो किसी के दृश्य क्षेत्र में नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिए, मेट्रो स्टेशनों के फर्श पर रंग-बद्ध पैरों के निशान हमें वांछित प्लेटफार्म पर अपना रास्ता खोजने में मदद कर सकते है। यह उपाय रेलवे स्टेशनों, अस्पतालों, आदि जैसे मध्यम से बड़े जटिल स्थानों के लिए उपयोगी है, क्योंकि बहुत अधिक संकेत होने से संवेदी अतिभार हो सकता है।

तीसरा, कोई भी रास्ते में संकेतों, स्थलों का विचार कर सकता है जो दिशा प्रदान करते हैं, और कर्त्ता को यह तय करने में मदद करते हैं कि कौन सा रास्ता वांछित गंतव्य तक ले जा सकता है, और कौन सा रास्ता बेहतर हो सकता है।

अंत में पर्यावरण के मानसिक प्रतिनिधित्व या संज्ञानात्मक मानचित्र का उपयोग किया जा सकता है। मार्ग खोजने में शामिल आसानी या कठिनाई में डिजाइन तत्वों की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उदाहरण के लिए, यदि आंतरिक डिजाइन तत्वों में पर्याप्त भिन्नता नहीं है, तो लोगों को यह बताना मुश्किल है कि वे कहां हैं, और इसलिए वे खोया हुआ महसूस कर सकते हैं। कलाकृतियां, स्थल-चिन्ह मुख्य बिन्दु के रूप में काम कर सकते हैं और लोगों को वापस जाने का रास्ता खोजने में मदद कर सकते हैं इसी तरह, संकेत स्थलचिन्ह और निर्णय बिन्दु

जब अच्छी तरह से दर्शाये जाते है, तो आसानी से रास्ता खोजने में योगदान करते हैं।

4.3.2.2 मार्ग खोजने में प्रयुक्त उपकरण

मार्ग खोजने में सबसे पहले सहायता मनुष्यों को शायद पूछने और निर्देश प्राप्त करने के द्वारा मिली थी। मार्ग खोजने में औपचारिक सहायता की पहचान 300-200 ईसा पूर्व चीनी हान राजवंश की गई थी, जिन्होंने कागज के नक्शे और प्राकृतिक रूप से चुबंकित पत्थर का उपयोग किया था। भौगोलिक पेपर मानचित्र विलियम स्मिथ द्वारा पहली बार अठारहवीं शताब्दी (विनचेस्टट, 2001) में बनाया गया था और यह केवल 1960 से 1976 की बात है कि भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) और ग्लोबल पोज़िशनिंग सिस्टम (जीपीएस) ने क्रमशः मार्ग खोजने में क्रांति ला दी थी। तब से मार्ग खोजनें की तकनीकों में बहुत तेजी से विकास हुआ है, और आज हमारे पास स्मार्टफोन, श्रवण-प्रतिक्रिया उपकरण, दृष्टि संबंधी तकनीक और स्मार्ट वातावरण है – ये सभी मार्ग खोजने के व्यवहार में सहायता करते हैं।

मार्ग खोजने में उपयोग किये जाने वाले कुछ समकालीन उपकरण इस प्रकार हैः

4.3.2.2.1 मानचित्र

प्रौद्योगिकी में प्रगति के बावजूद, कागज के मानचित्र मार्ग खोजने के लोकप्रिय तरीके बने हुये है, यात्रियों के लिए शहर के नक्शे को लेना असामान्य नहीं है, ताकि वे जिन शहरों का दौरा कर रहे हैं उनका संचालन कर सकें हालांकि डिजिटल मानसदर्शन तकनीकों में प्रगति के साथ, ऑनलाइन मानचित्र भी रोजमर्रा के मार्ग खोजने में बेहद लोकप्रिय हो गये है ऑनलाइन मानचित्र, मानचित्र बनाने वालों और मानचित्र का प्रयोग करने वालों का मानचित्र के साथ सक्रिय रूप से अंतःक्रिया करने और बड़ी मात्रा में आंकड़ों का प्रयोग करने की अनुमति देते हैं।

4.3.2.2.2 स्मार्टफोन

स्मार्टफोन इन दिनों दैनिक जीवन में उपयोग किया जाने वाला सबसे लोकप्रिय उपकरण है। स्मार्टफोन से जीपीएस पर निगाह रखना भी संभव है, वे वस्तुतः त्रि-आयामी (3-डी) आभासी सड़क दृश्य पेश करते हैं और पिछले आंगतुकों द्वारा विभिन्न गंतव्यों की रेटिंग के साथ भी होते हैं। स्मार्टफोन पिछली प्राथमिकताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर उपयोगकर्त्ता को विशिष्ट स्थानों पर जाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। ये सभी मार्ग खोजने का निर्णय लेने में सहायक होते हैं। यह असामान्य नहीं है कि, उदाहरण के लिए, आपकी आवाज में स्मार्टफोन निर्देशित करें। अचानक कहे 'बहाई मन्दिर अगले 100 मीटर के भीतर है; आप वहां यात्रा करना पसन्द कर सकते हैं, जब आप अपने गतव्य की ओर रास्ता खोजने की कोशिश कर रहे हो।

4.3.2.2.3 स्मार्ट वातावरण

वातावरण में वस्तुयें जैसे संकेत, कलाकृतियों पर विज्ञापन आदि सभी साफ्टवेयर प्रोसेसर से सुसज्जित होते हैं जो नग्न आंखों से दृश्यमान नहीं है, जब तक इन्हें ध्यान से देखा नहीं जाता है। इन प्रोसेसर का उपयोग पर्यावरण में लोगों की स्थिति की जानकारी को लेने और संसाधित करने के लिए किया जाता है।

4.3.2.2.4 गतिशील यातायात सूचना सेवायें

इनमें उन्नत संवेदनशील प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है जिसके उपयोग से किसी विशेष समय पर सड़क पर वाहन घनत्व का पता लगाया जा सकता है। धीमी या उच्च गति से यात्रा करने वाले वाहनों की पहचान किसी भी समय, किसी भी स्थान पर मौजूद वाहनों की संख्या का अनुमान लगाने के लिए की जा सकती है, सभी यातायात प्रवाह को रिकॉर्ड करने के लिये सड़क पर संभावित भीड़ की पहचान करने आदि में की जाती है। जीपीएस, स्मार्टफोन, मोबाइल ऐप, गूगल मानचित्र इस सूचनात्मक नेटवर्क में लोगों को शामिल करने और वास्तविक समय के आंकड़े की आपूर्ति करने के लिए उपयोग किया जा सकता है, जो मार्ग खोजने संबंधी निर्णय लेने में सहायता करता है। भारत में इंदौर शहर में कोठारी जैन और पारख (2021) द्वारा वास्तविक समय के आंकड़ों के आधार पर गतिशील यातायात प्रबंधन के लिए एक सड़क मानचित्र विकसित किया गया था। ट्रैफिक की स्थिति को बेहतर तरीके से प्रबंधित करने के लिए सिस्टम को मौजूदा ट्रैफिक नियंत्रण सिस्टम के साथ जोड़ा जा सकता है।

4.3.2.2.5 पैदल यात्री दिशा ज्ञान और वाहन दिशा ज्ञान तंत्र

ये मुख्य रूप से बाहरी वातावरण में उपयोग किये जाने वाले जीपीएस सक्षम मोबाइल उपकरण है। पीएनए मार्ग खोजने को स्थान की पहचान, स्वस्थानीयकरण, आदि में सहायता प्रदान करके सहज बनाता है। एक ऑनलाइन मानचित्र पर सबसे छोटा/सर्वश्रेष्ठ पैदल मार्ग पर प्रकाश डाला जाता है और श्रव्य निर्देश या पाठ्य आधारित निर्देश पैदल चलने वाले को उनके गंतव्य तक पहुंचने में मार्गदर्शन करते है। मार्ग के किनारे स्थित अतिरिक्त आकर्षण भी कभी-कभी प्रकाशित किये जाते हैं। उदाहरण के लिए पैदल यात्री दिशा ज्ञान द्वारा पैदल चलने वालों का ध्यान रेस्तरां, विश्राम कक्ष आदि की और खींचा जा सकता है। पैदल यात्री दिशा ज्ञान, वाहन दिशा, ज्ञान तंत्र की तरह ही कार्य करते है, वे लेन और उप-मार्गों के अलावा अधिक विवरण प्रदान करते हैं, और बड़े पैमाने पर जानकारी प्रदान करते हैं – ये सभी पैदल चलने के लिए प्रासंगिक है पर ड्राईविंग के लिये नहीं।

वाहन संचालन सिस्टम, मुख्य सड़कों के नेटवर्क से अधिक प्रभावित होते हैं और दूसरे दर्जे की जानकारी को अनदेखा करते हैं।

4.3.2.2.6 सर्वव्यापी कंप्यूटिंग

इसने स्थान में बड़े और बड़े अर्धव्यास में कम्प्यूटरों की उपस्थिति से वास्तविक समय संदर्भ जागरूकता को सहजता से बढ़ावा दिया है। यह डिजिटल कोड का

उपयोग करके वास्तविक दुनिया की वस्तुओं, स्थानों और स्थितियों की स्वचालित पहचान के माध्यम से मानवीय गतिविधियों की सुविधा प्रदान करता है। इस पद्धति का उपयोग करके पालतू जानवरों की निगरानी, उपकरणों के संचालन, किताबों और वाहनों की निगरानी करने जैसी विविध गतिविधियां की जा सकती हैं। भारत में सी-डैक (हैदराबाद, चेन्नई और बैंगलौर) अकादमिक प्रतिष्ठा के संस्थानों के समर्थन से सर्वव्यापी कम्प्यूटिंग कार्यक्रम के लिए क्रियान्वित एजेंसी है। आई आई एम कलकता ने उदाहरण के लिए प्रदूषण निगरानी प्रणाली विकसित की है, अमृता विश्वविद्यालय ने वास्तविक समय भूस्खलन निगरानी के लिए एक वायरलेस सेन्सर नेटवर्क विकसित किया है, और सी डेक पुणे द्वारा नोएडा में मौसम का पूर्वानुमान लगाने के लिए परियोजना लागू की जा रही है। इन सभी का मानव द्वारा किये जाने वाले मार्ग निर्धारण निर्णयों पर प्रभाव पड़ता है।

4.3.2.2.7 संवेदी अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए उपकरण

स्मार्ट उपकरण कभी-कभी दिव्यांग व्यक्तियों के लिये तैयार किये जाते हैं, जिन्हें स्मार्टफोन का उपयोग करने, पहचान सूचक का ध्यान रखने और आमतौर पर पर्यावरण से जानकारी लेने में मुश्किल हो सकती है। ''बातचीत करने वाले लेजर केन'' का प्रयोग उदाहरण के लिए दृश्य दिव्यांगता वाले व्यक्तियों द्वारा किया जा सकता है। पीछे हटने वाले संकेतों से उत्सर्जित संकेतों का उपयोग करके यह उपकरण उन वस्तुओं की उपस्थिति के बारे में श्रवण प्रतिक्रिया, निर्देशात्मक या सुधारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करता है जो 10 मीटर दूर तक के मार्ग को बाधित कर सकते हैं, और दृष्टि विकलांग व्यक्तियों को मार्ग खोजने में सहायता करते है (जीयूडाइस और लेगे, 2008, द्वारा उद्धरित किया गया)। नेत्रहीनों और कम दृष्टिवाले लोगों की सहायता करने के लिए ''स्पर्शनीय क्रम निर्धारक'' का उपयोग किया जा सकता है। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन इस सुविधा का उपयोग करता है।

एक प्रश्न यह बना रहता है कि कैसे मार्ग खोज सहायता ने मनुष्यों के संज्ञानात्मक मानचित्रण कौशल को प्रभावित किया है। यद्यपि हमारे पास अभी तक किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए पर्याप्त शोध प्रमाण उपलब्ध नहीं है, शोध आमतौर पर यह दर्शाता है कि तकनीकी रूप से सक्षम मार्ग खोजने के उपकरणों में कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं किया गया है।

इशिकावा और उनके सहयोगियों ने (2008) में उदाहरण के लिए जीपीएस उपकरणों की तुलना में कागज के मानचित्रों को अधिक सक्षम पाया। जो लोग जीपीएस उपकरणों का उपयोग करते थे, या प्रत्यक्ष अनुभव पर भरोसा करते थे, वे अधिक बार रूके और कागज के नक्शे का उपयोग करने वाले व्यक्तियों के सापेक्ष अधिक दूरी तय की। हालांकि मानचित्र (ली और चेंग, 2008) या आन-बोर्ड जीपीएस सिस्टम (ली और चेंग, 2010) का उपयोग करते समय स्मार्टफोन जीपीएस के उपयोग से ड्राईविंग व्यवहार में काफी सुधार हुआ था। समग्र रूप से संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली पर तकनीकी विकास के प्रभाव को भी देखा जाना बाकी है।

अपनी प्रगति की जांच करें 4

1) मार्ग खोजना क्या है?

.....

.....

.....

2) मार्ग खोजने में उपयोग किये जाने वाले विभिन्न उपकरण कौन से हैं?

.....

.....

.....

3) क्या उन्नत तकनीकी उपकरणों के विकास ने संज्ञानात्मक मानचित्रण में त्रुटियों को कम किया है?

.....

.....

.....

4) संवेदी अक्षमता वाले व्यक्तियों की सहायता, किस तरह के मार्ग खोजने के उपकरण कर सकते हैं।

.....

.....

.....

5) मार्ग खोजने की विभिन्न विशेषताएं क्या है?

.....

.....

.....

4.4 सारांश

इस इकाई में हमने जो कुछ सीखा है, उसे संक्षेप में बताने के लिए यहाँ त्वरित पुनर्कथन प्रस्तुत है:

- पर्यावरण की विशेषताओं को समझने में सम्मिलित प्रक्रिया को पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के रूप में जाना जाता है। पर्यावरणीय संज्ञान में परिकल्पना तैयार करना, आगे के निर्णय लेना और पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण के माध्यम से प्राप्त जानकारी के आधार पर लक्ष्यों पर काम करना शामिल है।

- पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण में अनुसंधान का जोर पर्यावरण की भौतिक अवधारणात्मक विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करने से वातावरण की सामाजिक मनोवैज्ञानिक समझ पर केन्द्रित होता है।
- पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण से संबंधित विकासात्मक प्रक्रियाओं की समझ व्यष्टि विकास परिप्रेक्ष्य, सहजवाद, सीखने की स्थिति से एक अधिक एकीकृत स्थिति में स्थानांतरित हो गयी है, जिसमें यह समझा जाता है कि कैसे व्यष्टि विकास, तंत्रिका परिपक्वता, पर्यावरणीय सहजीकरण और सांस्कृतिक निर्देशन सभी स्थानिक विकास का निर्माण करने के लिए एक साथ आते हैं।
- एक संज्ञानात्मक मानचित्र पर्यावरण के प्रमुख तत्वों सापेक्ष स्थानों आदि के प्रतिनिधित्व के साथ-साथ स्थानिक वातावरण का मानसिक प्रतिनिधित्व है जो व्यक्ति को स्थान का संचालन करने में सहायता करता है।
- संज्ञानात्मक मानचित्रण का अध्ययन करने के विभिन्न तरीके मस्तिष्क इमेजिंग, आभासी वास्तविकता, स्थान विन्यास और भौगोलिक सूचना प्रणाली है।
- संज्ञानात्मक मानचित्रण में कई त्रुटियां, स्थान के पदानुक्रमिक प्रतिनिधित्व, संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य, संज्ञानात्मक संदर्भ बिन्दु संरेखन, रोटेशन, स्मृति में व्यवस्थित त्रुटिया और लिंग के कारण निर्णय, स्थान में रहने के निर्णय आदि के कारण आ सकती है।
- मार्ग खोजने में जान बूझकर बिन्दु अ से बिन्दु ब तक जाना शामिल है, पर यह जानना कि कोई व्यक्ति कब अपने गतव्य पर पहुंच गया है, और यह भी कि वह बिन्दु 'अ' पर वापस जाने में सक्षम है।
- मार्ग खोजने में उपयोग किये जाने वाले उपकरण मानचित्र, स्मार्टफोन, स्मार्ट वातावरण, गतिशील यातायात सूचना सेवाएं, पैदल यात्री और वाहन संचालन सिस्टम, सर्वव्यापी कम्प्यूटिंग और संवेदी अपगंता वाले व्यक्तियों के लिए विशेष उपकरण शामिल है।

4.5 मुख्य शब्द

पर्यावरण संज्ञान : पर्यावरण के बारे में परिकल्पना तैयार करना, आगे के निर्णय लेने और पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण के माध्यम से प्राप्त जानकारी के आधार पर लक्ष्यों पर काम करने में शामिल प्रक्रिया।

पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण : पर्यावरणी की विशेषताओं को समझने में शामिल प्रक्रिया को पर्यावरण कारणा के रूप में जाना जाता है।

संज्ञानात्मक मानचित्र : पर्यावरण के मुख्य तत्वों, सापेक्ष स्थानों आदि के प्रतिनिधित्व के साथ-साथ स्थानिक वातावरण का एक

मानसिक प्रतिनिधित्व है जो किसी भी व्यक्ति को स्थान में संचालन करने में मदद करता है।

मार्ग खोजना : मार्ग खोजना में जानबूझकर बिन्दु अ से बिन्दु ब तक जाना शामिल है, यह जानना कि कोई व्यक्ति अपने गतंत्य तक कब अपने गतंव्य तक पहुंच गया है, और यह भी कि वह बिन्दु 'अ' पर वापस जाने में सक्षम है।

4.6 समीक्षा प्रश्न

1) पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण क्या है? यह सामान्य मनोविज्ञान में अध्ययन की गई प्रत्यक्षज्ञानात्मक प्रक्रियाओं से किस प्रकार भिन्न हैं?

2) क्या संज्ञानात्मक मानचित्रण मानचित्र कला के समान है? समझाइये?

3) संज्ञानात्मक मानचित्रण के अध्ययन के विभिन्न तरीके क्या हैं?

4) मार्ग-खोजने के विभिन्न उपकरण कौन-से हैं जिनसे आप परिचित है?

5) दैनिक जीवन में पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण और संज्ञान के विभिन्न अनुप्रयोग क्या है?

4.7 संदर्भ एवं अन्य पाठ्य सामग्री

Allport, F.H. (1955). Theories of Perceptions and the Concept of Structure. Wiley.

Appleyard, D. (1969). Why Buildings Are Known: A Predictive Tool for Architects and Planners. *Environment and Behavior*, *1*(2), 131–156. https://doi.org/10.1177/001391656900100202

Appleyard, D. (1970). Styles and Methods of Structuring a City. Environment and Behavior. https://doi.org/10.1177/001391657000200106

Barker, R.G. and Wright, H.F. (1951). One Boy's Day, Harper & Row..

Borst, H. C., de Vries, S. I., Graham, J. M., van Dongen, J. E., Bakker, I., &Miedema, H. M. (2009). Influence of environmental street characteristics on walking route choice of elderly people. Journal of Environmental Psychology, 29 (4), 477–484. doi:10.1016/j.jenvp. 2009.08.002.

Bronfenbrenner, H. (1979), The Ecology of Human Development, Harvard University Press, Cambridge, MA.

Brunswik, E. (1947), Systematic and Representative Design of Psychological Experiments, University of California Press, Berkeley.

Brunswik, E. (1957), 'Scope and Aspects of Cognitive Problems', in J. Bruner et al. (eds). Contemporary Approaches to Cognition. Harvard University Press.

Byrne, R. W. (1979). Memory for urban geography, Quarterly Journal of Experimental Psychology, 31:1, 147-154, DOI: 10.1080/ 14640747908400714

Darken, R. P., & Peterson, B. (2002). Spatial orientation, wayfinding, and representation. In K. M. Stanney (Ed.), *Handbook of virtual environments: Design, implementation, and applications* (pp. 493–518). Lawrence Erlbaum Associates Publishers.

Downs, R.M. and Stea, D. (eds) (1973), Image and Environment: Cognitive Mapping and Spatial Behavior, Aldine.

Etchamendy, N., &Bohbot, V. D. (2007). Spontaneous navigational strategies and performance in the virtual town. *Hippocampus*, *17*(8), 595–599. https://doi.org/10.1002/hipo.20303

Ewart, I.J & Johnson, H. (2021). Virtual reality as a tool to investigate and predict occupant behaviour in the real world: the example of wayfinding. Journal of Information Technology in Construction (ITcon), Vol. 26, pg. 286-302, DOI: 10.36680/j.itcon.2021.016

Gauvain, M. (1993). The development of spatial thinking in everyday activity. *Developmental Review, 13*(1), 92–121. https://doi.org/10.1006/ drev.1993.1004

Gauvain, M. (2001). Cultural tools, social interaction and the development of thinking. *Human Development, 44*(2-3), 126–143. https://doi.org/ 10.1159/000057052

Gibson, J.J. (1950), The Perception of the Visual World. Houghton-Mifflin.

Giudice, N. A., &Legge, G. E. (2008). Blind navigation and the role of technology. In S. Helal, M. Mokhtari, & B. Abdulrazak (Eds.), Engineering handbook of smart technology for ageing, disability, and independence (pp. 479–500). Wiley.

Golledge, R.G. & Spector, A.N. (1978). Comprehending the Urban Environment: Theory and Practice. https://doi.org/10.1111/j.1538-4632.1978.tb00667.x

Haq, S. (2003). Investigating the Syntax Line: Configurational Properties and Cognitive Correlates. *Environment and Planning B: Planning and Design*, *30*(6), 841–863. https://doi.org/10.1068/b2960

Head, D., & Isom, M. (2010). Age effects on wayfinding and route learning skills. *Behavioural brain research*, *209*(1), 49–58. https://doi.org/10.1016/j.bbr.2010.01.012

Hermer, L., &Spelke, E. S. (1994). A geometric process for spatial reorientation in young children. *Nature, 370*(6484), 57–59. https://doi.org/10.1038/370057a0

Hermer, L., &Spelke, E. (1996). Modularity and development: the case of spatial reorientation. *Cognition*, *61*(3), 195–232. https://doi.org/10.1016/s0010-0277(96)00714-7

Hillier, B., & Hanson, J. (1984). *The Social Logic of Space*. Cambridge: Cambridge University Press. doi:10.1017/CBO9780511597237

Hirtle, Stephen &Jonides, John. (1985). Evidence of hierarchies in cognitive maps. Memory & cognition. 13. 208-17. 10.3758/BF03197683.

Hung-Yu Chen, Kiminobu Sato & Meng-Cong Zheng (2021) Differences in wayfinding performance across types of navigation aids and understanding of environmental information among travelers, Journal of Asian Architecture and Building Engineering, 20:4, 383-397, DOI: 10.1080/13467581.2020.1799795

Irshad, S., Perkis, A. & Azam, W. (2021). Wayfinding in Virtual Reality Serious Game: An Exploratory Study in the Context of User Perceived Experiences. *Applied Sciences* 11, no. 17: 7822. https://doi.org/10.3390/app11177822

Ishikawa, T., Fujiwara, H., Imai, O., & Okabe, A. (2008). Wayfinding with a GPS-based mobile navigation system: A comparison with maps and direct experience. Journal of Environmental Psychology, 28 (1), 74–82. doi:10.1016/j.jenvp.2007.09.002.

Jansen-Osmann, P., &Wiedenbauer, G. (2004). The representation of landmarks and routes in children and adults: A study in a virtual environment. *Journal of Environmental Psychology, 24*(3), 347–357. https://doi.org/10.1016/j.jenvp.2004.08.003

Jansen, P., Schmelter, A., & Heil, M. (2010). Spatial knowledge acquisition in younger and elderly adults: A study in a virtual environment. *Experimental Psychology, 57*(1), 54–60. https://doi.org/10.1027/1618-3169/a000007

Janzen, G., & Jansen, C. (2010). A neural wayfinding mechanism adjusts for ambiguous landmark information. *NeuroImage*, *52*(1), 364–370. https://doi.org/10.1016/j.neuroimage.2010.03.083

Kaplan, R. 1978. The green experience. In Humanscape: Environments for people. S. Kaplan and R. Kaplan,(eds.) p. 186- 193. Duxbury (Div. of Wadsworth), Belmont, Calif.

Kothari, D., Jain, A., &Parakh, A. (2021). IoT-Based Dynamic Traffic Management and Control for Smart City in India. In R. Singh, A. Singh, A. Dwivedi, & P. Nagabhushan (Ed.), *Computational Methodologies for Electrical and Electronics Engineers* (pp. 127-139). IGI Global. https://doi.org/10.4018/978-1-7998-3327-7.ch010

Landau, B., Gleitman, H., &Spelke, E. (1981). Spatial knowledge and geometric representation in a child blind from birth. *Science, 213*(4513), 1275–1278. https://doi.org/10.1126/science.7268438

Lee, W.-C., & Cheng, B.-W. (2008). Effects of using a portable navigation system and paper map in real driving. Accident Analysis & Prevention, 40 (1), 303–308. doi:10.1016/j.aap.2007.06.010.

Lee, W.-C., & Cheng, B.-W. (2010). Comparison of portable and onboard navigation system for the effects in real driving. Safety Science, 48 (10), 1421–1426. doi:10.1016/j.ssci.2010.06.004.

Lew, A. R., Bremner, J. G., &Lefkovitch, L. P. (2000). The development of relational landmark use in six- to twelve-month-old infants in a spatial orientation task. *Child development*, *71*(5), 1179–1190. https://doi.org/10.1111/1467-8624.00222

Lewin, K. (1951), Field Theory in Social Science, Harper. New York.

Liben, L. S. (1981). Copying and reproducing pictures in relation to subjects' operative levels. *Developmental Psychology, 17*(3), 357–365. https://doi.org/10.1037/0012-1649.17.3.357

Lynch, K. (1984). *Reconsidering* The Image of the City. In: Rodwin, L., Hollister, R.M. (eds) Cities of the Mind. Environment, Development, and Public Policy. Springer, Boston, MA. https://doi.org/10.1007/978-1-4757-9697-1_9

Maguire, E. A., Frackowiak, R. S., & Frith, C. D. (1997). Recalling routes around london: activation of the right hippocampus in taxi drivers. *The Journal of neuroscience : the official journal of the Society for Neuroscience*, *17*(18), 7103–7110. https://doi.org/10.1523/JNEUROSCI.17-18-07103.1997

Morris, R. G., &Parslow, D. (2004). Neurocognitive Components of Spatial Memory. In G. L. Allen (Ed.), *Human spatial memory: Remembering where* (pp. 217–247). Lawrence Erlbaum Associates Publishers.

Neisser, U. (1987), 'Introduction: the Ecological and Intellectual Bases in Categorization', in U. Neisser (ed.). Concepts and Conceptual Development: Ecological and Intellectual Factors in Categorization, Cambridge University Press, Cambridge, pp. 1-23.

Neisser, U. (1990), 'The Ecological Approach to Cognitive Psychology', in ComunicazioniScientifische di PsicologiaGenerale, 1, pp. 11-22.

Newcombe, N. S. (1998). Defining the 'Radical Middle' [Review of *Rethinking Innateness: A Connectionist Perspective on Development*, by J. L. Elman, E. A. Bates, M. H. Johnson, A. Karmiloff-Smith, D. Parisi, & K. Plunkett]. *Human Development*, *41*(3), 210–214. https://www.jstor.org/stable/26763357

Newcombe N. S. (2002). The nativist-empiricist controversy in the context of recent research on spatial and quantitative development. *Psychological science*, *13*(5), 395–401. https://doi.org/10.1111/1467-9280.00471

Newcombe, N., & Huttenlocher, J. (2000). Making space: The development of spatial representation and reasoning. Cambridge, MA: The MIT Press.

Passini, R. (1996). Wayfinding design: logic, application and some thoughts on universality. Design Studies:17,319-331.

Piaget, J. &Inhelder, R. (1947). La representation de I'espace chez I'enfant, PUF, Paris.

Rodwin, L. & Hollister, R.M. (1984). Cities of the Mind: Images and themes of the city in the social sciences. Plenum Press.10.1007/978-1-4757-9697-1_9

Sharma G, Kaushal Y, Chandra S, Singh V, Mittal AP and Dutt V (2017) Influence of Landmarks on Wayfinding and Brain Connectivity in Immersive Virtual Reality Environment. *Front. Psychol.* 8:1220. doi: 10.3389/fpsyg.2017.01220

Siegel, A. W., & White, S. H. (1975). The development of spatial representations of large-scale environments. *Advances in child development and behavior*, *10*, 9–55. https://doi.org/10.1016/s0065-2407(08)60007-5

Stokols, D. (1987), 'Conceptual Strategies of Environmental Psychology', in D. Stokols and I. Altman, (eds). Handbook of Environmental Psychology, vol. 1, Wiley, New York, pp. 41 - 70.

Tolman, E. C. (1948). Cognitive maps in rats and men. *Psychological Review, 55*(4), 189–208. https://doi.org/10.1037/h0061626

Tversky, Barbara. (1993). Cognitive Maps, Cognitive Collages, and Spatial Mental Models. LNCS. 716/1993. 14-24. 10.1007/3-540-57207-4_2.

Winchester, S. (2002), *The Map That Changed the World*. Perennial Publishers.

Weisman, M. L., &Klemp, J. B. (1982). The Dependence of Numerically Simulated Convective Storms on Vertical Wind Shear and Buoyancy, *Monthly Weather Review*, *110*(6), 504-520. Retrieved May 27, 2022, from https://journals.ametsoc.org/view/journals/mwre/110/6/1520-0493_1982_110_0504_tdonsc_2_0_co_2.xml

4.8 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

- The Psychological Review. Cognitive Maps in Rats and Men. 1948-Tolman-CognitiveMaps.pdf (nova.edu)
- Getting lost in buildings: Architecture can bias your cognitive map (w/ Video) http://openstaxcollege.org/l/carlsonmaps

इकाई 5 क्षेत्रीयता, वैयक्तिक स्थान और समुदाय रचना*

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 क्षेत्रीयता सप्रंत्यय और परिभाषा

5.2 क्षेत्रीयता का वर्गीकरण

- 5.2.1 अल्टमैन प्रणाली
- 5.2.2 लैमेन और स्कॉट प्रणाली
- 5.2.3 अतिलंघन के प्रकार

5.3 क्षेत्रीयता का मापन

- 5.3.1 क्षेत्र अध्ययन एवं क्षेत्र प्रयोग
- 5.3.2 सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार
- 5.3.3 प्राकृतिक पर्यवेक्षण और अप्रत्यक्ष उपाय

5.4 क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले कारक

- 5.4.1 वैयक्तिक कारक
- 5.4.2 सामाजिक कारक
- 5.4.3 भौतिक कारक
- 5.4.4 सांस्कृतिक और नृजातीय कारक

5.5 क्षेत्रीयता के सिद्धांत

- 5.5.1 जीन और क्रमिक विकास की भूमिका
- 5.5.2 एक अन्तःक्रिया आयोजक
- 5.5.3 व्यवहार निर्धारण सिद्धांत

5.6 समुदाय रचना की अवधारणा

5.7 क्षेत्रीयता और समुदाय रचना

- 5.7.1 पड़ोस
- 5.7.2 अस्पताल

5.8 क्षेत्रीय व्यवहार के शोध साक्ष्य

- 5.8.1 क्षेत्रीय सीमांकन, वैयक्तिकरण और व्यवहार
- 5.8.2 क्षेत्रीयता, व्यवहार और आक्रमकता
- 5.8.3 वास्तुकला विशेषताएँ और क्षेत्रीय व्यवहार

5.9 वैयक्तिक स्थान

- 5.9.1 वैयक्तिक स्थान का संप्रत्यय
- 5.9.2 गोपनीयता
- 5.9.3 वैयक्तिक स्थान के निर्धारक
- 5.9.4 वैयक्तिक स्थान अध्ययन की विधियां

*शुवब्रत पोद्दार, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, काजी नज़रूल विश्वविद्यालय, आसनसोल, पश्चिम बंगाल

5.10 सारांश

5.11 मुख्य शब्द

5.12 समीक्षा प्रश्न

5.13 संदर्भ एवं अन्य पाठ्य सामग्री

5.14 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद, आपः

- क्षेत्रीयता को परिभाषित कर पाएंगे और क्षेत्रीयता के अर्थ की व्याख्या कर पाएंगे;
- विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीयता की विवेचना कर पाएंगे;
- क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले वैयक्तिक, सामाजिक भौतिक एवं सांस्कृतिक कारकों की व्याख्या कर पाएंगे;
- क्षेत्रीयता के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य की समालोचनात्मक व्याख्या कर पाएंगे;
- क्षेत्रीयता के मापन में प्रयुक्त विभिन्न विधियों का वर्णन कर पाएंगे;
- समुदाय के अभिकल्प की व्याख्या कर पाएंगे;
- वैयक्तिक स्थान से संबंधित संप्रत्यय, प्रकार और कारकों की व्याख्या कर पाएंगे;
- गोपनीयता को परिभाषित कर इसका वर्गीकरण कर पाएंगे; और
- वैयक्तिक अन्तरालन मापन विधियों की पहचान कर पाएंगे।

5.0 प्रस्तावना

क्षेत्रीयता पशु व्यवहार की एक सामान्य अवधारणा है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर पशु अपना दावा करता है और अपनी प्रजातियों से इसकी रक्षा करता है अतः इस प्रकार अपनी प्रजातियों के प्रसार को सुनिश्चित करके घनत्व को नियंत्रित करता है (हॉल, 1969)। अतः इस इकाई में हम क्षेत्रीयता और सामुदायिक अभिकल्प के विषय में चर्चा करेंगे। क्षेत्रीयता के वर्गीकरण का अनुपालन करते हुए हम क्षेत्रीयता की अवधारणा एवं परिभाषा के साथ शुभारंभ करते हैं। इसमें हम अल्टमैन प्रणाली, लेमैन स्कॉट प्रणाली इत्यादि को देखेंगे। इसके बाद क्षेत्रीयता में उल्लंघन के प्रकार और संबंधित क्षेत्र की रक्षा के लिए किए जाने वाले विभिन्न बचावों का उल्लेख किया जायेगा। यह इकाई क्षेत्रीयता के मापन के मुद्दे को उजागर करती है और क्षेत्र अध्ययन और क्षेत्र प्रयोगों सर्वेक्षणों और साक्षात्कारों और प्राकृतिक पर्यवेक्षण और मापन में इसे किस प्रकार प्रयुक्त कर सकते हैं उसकी विवेचना की गई हैं। क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों पर चर्चा की गई है। क्षेत्रीयता के सिद्धांतों पर चर्चा की गई है और जीन एवं उद्विकास की भूमिका को

दर्शाया गया है। अन्त में समुदाय अभिकल्प की व्याख्या और विवेचना को क्षेत्रीयता, पड़ोस तथा अस्पतालों के आलोक में।

5.1 क्षेत्रीयता संप्रत्यय और परिभाषा

क्षेत्रीयता एक अत्यंत व्यापकता के साथ-साथ एक सार्वभौमिक परि-घटना है। मानव क्षेत्रीयता के संकेतकों को हर जगह देखा जा सकता हैः स्थान बचाने हेतु पुस्तकालय की मेज पर बिखरी हुई किताबें, नाम की तख्ती, बाड़, ताले, अवरोधक इत्यादि। इसकी व्यापकता के बावजूद, क्षेत्रीयता का उनकी गहनता से अध्ययन नहीं किया गया हैं जिसके यह योग्य है। जुलियन एडनी (1974) की टिप्पणी है कि क्षेत्रीयता में भौतिक अंतरालन, स्वामित्व, आत्मरक्षा, उपयोग की अन्योन्यता, चिह्नक अस्मिता वैयक्तिकता, प्रभुत्व, संघर्ष, सुरक्षा, दावा, उत्तेजन एवं सतर्कता आदि अन्तर्गत हैं। क्षेत्रीयता को एक व्यक्ति या समूह द्वारा आयोजित व्यवहार और दृष्टिकोण के एक पैटर्न के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक निश्चित भौतिक स्थान, वस्तु या विचार के कथित, प्रयास या वास्तविक नियंत्रण पर आधारित है जिसमें स्वाभाविक व्यवसाय रक्षा, वैयक्तीकरण और इन्हें चिन्हित किया जाना शामिल हो सकता है। चिह्नांकन से किसी वस्तु या पदार्थ को व्यक्ति की क्षेत्रीय भावना को निर्दिष्ट करने के निमित्र किसी स्थान पर रखना अभिप्रेत है। उदाहरण के लिए कैफेटेरिया या मेज या कुर्सी पर किताबों का छोड़ना। वैयक्तीकरण का तात्पर्य इस तरह से चिह्नांकन है जिससे व्यक्ति की पहचान का निरूपण हो। उदाहरण के लिए कर्मचारी अपने कार्य स्थलों को चित्रों एवं स्मृति चिन्हों से सजाते हैं।

5.2 क्षेत्रीयता का वर्गीकरण

क्षेत्रीयता का वर्गीकरण कई प्रणालियों के संदर्भ में किया गया है जो नीचे विस्तृत रूप में दिए गए हैं।

5.2.1 आल्टमैन प्रणाली

इरविन आल्टमैन (1975) ने क्षेत्रों को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया है, आल्टमैन के वर्गीकरण में प्रत्येक प्रकार द्वारा अनुमत गोपनीयता, संबंद्धता या अभिगम्यता की सीमा का उल्लेख है।

प्राथमिक क्षेत्र – ये व्यक्तियों या प्राथमिक समूहों के स्वामित्व वाले स्थान होते हैं जो उनके द्वारा अपेक्षाकृत स्थायी आधार पर नियंत्रित होते हैं, और उनके दैनिक जीवन के लिए केंद्र होते हैं। किसी का शयन कक्ष या पारिवारिक आवास इसके उदाहरण में सम्मिलित है। स्वयं रहने वालों के लिए प्राथमिक क्षेत्र का मनोवैज्ञानिक महत्व हमेशा अधिक होता है।

द्वितीयक क्षेत्र – ये प्राथमिक क्षेत्रों की तुलना में कम महत्व रखते हैं, लेकिन ये स्वयं के रहने वालों के लिए मध्यम महत्व रखते हैं। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के कार्य पर एक मेज, पसन्दीदा रेस्तरां, जिम ने लॉकर, आदि। इन क्षेत्रों

पर नियंत्रण वर्तमान रहने वाले के लिए कम आवश्यक है और अजनबियों के साथ बदलने, अदला-बदली या साझा किये जाने की संभावना अधिक है।

सार्वजनिक क्षेत्र – ये वे क्षेत्र होते हैं जो समुदाय के साथ उत्तम स्थिति में किसी के लिए भी उपलब्ध होते हैं। समुद्र तट, फुटपाथ, होटल, लॉबी, रेल, स्टोर आदि सार्वजनिक क्षेत्र हैं। कभी-कभी भेदभाव या अस्वीकार्य व्यवहार के कारण सार्वजनिक क्षेत्र कुछ व्यक्तियों के लिए बंद कर दिये जाते हैं। प्राथमिक क्षेत्रों के विपरीत जहां आमतौर पर बाहरी लोगों के प्रवेश की अनुमति नहीं होती हैं, सार्वजनिक क्षेत्र उन भी बाहरी लोगों के लिए खुले होते हैं जिन्हें विशेष रूप से निष्कासित नहीं किया गया है।

अल्टमैन दो अन्य प्रकार के प्रदेशों का वर्णन करते हैं, यद्यपि वे सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त क्षेत्र नहीं हैं:

वस्तुएं – ये क्षेत्रों के लिए कुछ मानदंडों को पूरा करती हैं – हम अपनी पुस्तकों, कोटा साइकिल और कैलकुलेटर आदि को वैयक्तीकृत कर इनकी रक्षा करने के साथ-साथ इन पर अपना नियंत्रण भी रखते हैं।

विचार – ये भी कुछ तरीके से क्षेत्र हैं – इसलिए विकार और पेटेंट के माध्यम से उनका बचाव करते हैं। हमारे पास साहित्यिक चोरी के विरूद्ध नियम है। सॉफ्टवेयर लेखक अपने प्रोग्राम के स्वामित्व की रक्षा करने का प्रयास करते हैं।

5.2.2 लेमैन एवं स्कॉट प्रणाली

लेमैन एवं स्कॉट (1976) ने क्षेत्रों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है –

1) ***अन्तःक्रियात्मक क्षेत्र*** – ये क्षेत्र अन्योन्य संवाद स्थापित करने वाले व्यक्तियों के समूह द्वारा नियंत्रित होते हैं। उदाहरण तौर पर कक्षा, पारिवारिक पिकनिक क्षेत्र आदि। इन क्षेत्रों का थोड़ा स्पष्ट चिन्हनांकन किया जा सकता है, फिर भी इनमें प्रविष्टि को हस्तक्षेप, अशिष्टता या अनाधिकार प्रवेश माना जाता है।

2) ***दैहिक क्षेत्र*** – यह वैयक्तिक स्थान के समान नहीं है क्योंकि किसी की त्वचा की एक सीमा होती है न कि उससे कुछ दूर शरीरों को अनुमति के साथ प्रवेश दिया जा सकता है (जैसे, शल्यचिकित्सा में) या बिना अनुमति (जैसे, एक चाकू से हमला)। लेकिन व्यक्ति चिन्ह और अपनी शारीरिक रचना को वैयक्तिक रूप से बनाकर रखते हैं।

3) ***सार्वजनिक क्षेत्र*** – यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां कोई भी व्यक्ति जा सकता है किन्तु उसे विद्यमान मानदंडों का पालन करना होगा। इसको लेकर स्वामित्व भाव कम होता है, इसका नियंत्रण अत्यंत कठिन होता है और निवासी केवल इसे देख सकते है लेकिन इसको स्वामित्व नहीं धारण कर सकते हैं और कोई भी व्यक्ति या समूह अनन्य रूप से व स्वामित्व या नियंत्रण का दावा नहीं कर सकता है।

4) ***गृह क्षेत्र*** – यह वह क्षेत्र है जहाँ नियमित प्रतिभागियों को व्यवहार के सापेक्ष स्वतंत्रता मिली होती है और उनके क्षेत्र के प्रति घनिष्ठता और इस पर नियंत्रण का भाव रहता है।

हुसैन एल – शरकावी (1979) एवं लैंगर (1987) चार प्रकार की क्षेत्रीयता का उल्लेख किया है जो पर्यावरणीय अभिकल्प में उपयोगी है, अर्थात्:

1) ***संलग्न क्षेत्र*** – एक वैयक्तिक स्थान जिसका स्वामित्व किसी व्यक्ति के पास होता है।

2) ***मध्य क्षेत्र*** – स्वामित्व प्राप्त मकान या भवन।

3) ***सहयोगी क्षेत्र*** – ये अर्ध निजी एवं अर्थ सार्वजनिक होते है जैसे – गलियारे, स्विमिंग पूल, आमने-सामने के बगीचे आदि।

4) ***परिधीय क्षेत्र*** – यह एक सार्वजनिक स्थान है जैसे साझा खेल का मैदान और एक शहरी पार्क आदि।

ब्रोअर (1976) क्षेत्रों या प्रदेशों को चार प्रकार में वर्गीकृत किया है:

1) ***वैयक्तिक क्षेत्र*** – वैयक्तिक क्षेत्र, वैयक्तिक रूप से या समूहों में नियंत्रण से होता है। समूह के सदस्य, वे होते है जिनके बीच घनिष्ट संबंध होता है जैसे वैवाहिक संबंध या रक्त बंधन के कारण संबंध।

2) ***सामुदायिक क्षेत्र*** – सामुदायिक क्षेत्र उन समूहों द्वारा नियंत्रित होते है जिनके सदस्य बदलते रहते हैं लेकिन प्रत्येक सदस्य एक स्क्रीनिंग प्रक्रिया से गुजरता है और कभी-कभी सदस्य के लिए उद्घाटन समारोह भी आयोजित किया जाता है। यह समूह के सदस्यों एवं समूह के बाहरी सदस्यों के बीच अन्तर को स्पष्ट इसे किया जाता है।

3) ***संस्थागत क्षेत्र*** – यह क्षेत्र आम जनता द्वारा निधारित होता है और जनता के लिए खुला होता है जिसमें सार्वजनिक जगह जैसे राजमार्ग, एवं ऐसौ जगह भी शामिल है जो सार्वजनिक संपत्ति नहीं है जैसे प्रतीक्षालय, सिनेमा हॉल, आदि। उपरोक्त प्रकार के स्वामित्व की तुलना में निषेध और नियंत्रण कम मुक्त है। ये उन नियमों और मानदंडों के माध्यम से संचालित होते हैं जिन्हें एक समुदाय बनाता है ये नियम या जेंडर भिन्नता, उम्र में अन्तर या नस्लीय अन्तर पर आधारित हो सकते हैं।

4) ***मुक्त क्षेत्र*** – यह वह क्षेत्र है जहाँ कोई स्थायी निवासी नहीं होता है और किसी का अस्तित्व निश्चित समूह द्वारा न तो निषेधात्मक होता है और न ही निशिचित। व्यवहार का मार्गदर्शन करने वाले नियम स्वःनिर्धारित या प्राकृतिक शक्तियों पर आधारित या नैतिक मानदंडों के कारण होते हैं। ये क्षेत्र क्षेत्रीय या प्रादेशिक संकेतों की अनुपस्थिति की विशेषता है और इसलिए जो प्रतिबंध या

नियंत्रण उत्पन्न होते है, वे इसके निवासियों के खोज एवं कल्पना के कारण अधिक होते हैं।

5.2.3 अतिलंघन के प्रकार

शोध एवं अनुभव यह प्रदर्शित करते है कि ऐसे कई प्रकार हैं जिनसे किसी क्षेत्र या प्रदेश का उल्लंघन हो सकता हैः

लंघन या हमला – आमतौर पर मालिकाना हक लेने के इरादे से एक बाहरी व्यक्ति का शारीरिक रूप से प्रवेश करना। आधरण के लिए पति या पत्नी का परिवार के नये कम्प्यूटर को स्थापित करने के लिए सिलाई करने वाली जगह को ले लेना।

हिंसा – यह किसी के क्षेत्र में अधिक अस्थाई घुसपैठ या कब्जा है। आमतौर पर इसका लक्ष्य स्वामित्व नहीं बल्कि झंझलाहट या हमले, पूर्ण सेंधमारी इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

संदूषण – उल्लंघनकर्ता क्षेत्र में कुछ डरावना या दूषित पदार्थ या कोई वस्तु रखकर किसी और के क्षेत्र में अशुद्धता फैलाता है। उदाहरण के लिए एक बड़ी कम्पनी जो विषैला कचरा कहीं पर छोड़ रासायनिक देती हैं।

बचाव के प्रकार : जिस प्रकार से क्षेत्रों या प्रदेशों के उल्लंघन करने के कई प्रकार है उसी भांति उनका बचाव करने के भी कई प्रकार हैं। हालांकि यह याद रखना चाहिए कि क्षेत्रों का हमेशा उल्लंघन ही नहीं किया जा सकता है और जब उनका उल्लंघन किया जाता है, तब भी उनका सदैव बचाव नहीं किया जाता है।

मार्क कन्नप (1978) ने बचाव को तीन सामान्य प्रकारों में विभाजित किया हैः

रोकथाम बचाव – चिन्हक जैसे कोट, तौलिये, चिन्ह एवं बाड़ लगाना सभी रोकथाम बचाव है। जब व्यक्ति उल्लंघन की आशंका करता है और उसके घटित होने से पहले उसे रोकने के लिए कार्य करता है।

प्रतिक्रिया बचाव – यह आमतौर पर उल्लंघन हो जाने के बाद प्रतिक्रियाएं है। उदाहरण के लिए दरवाजा पटकने और उल्लंघन करने वाले पर शारीरिक रूप से हमला करना आदि।

सामाजिक सीमा बचाव – सामाजिक सीमा बचाव मेजबानों एवं आंगतुकों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली प्रथा है। उदाहरण के लिए अफ्रीका में बुशमेन समूह के लोग बाहरी लोगों से क्षेत्रों की सीमा पर मिलते है एवं कुछ अभिवादन का आदान प्रदान करते हैं, तत्पश्चात बाहरी लोगों को अपने क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति देते हैं।

सामाजिक सीमा बचाव सामाजिक संपर्क के माध्यम से वांछित आगंतुकों से अवांछित आगंतुकों को पृथक करने का काम करती है।

अपनी प्रगति की जांच करें 1

1) क्षेत्रीयता या प्रादेशिकता को उसके वर्गीकरण की विभिन्न प्रणालियों के साथ परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्षेत्रीयता के संबंध में विभिन्न प्रकार के उल्लंघन और क्षेत्रीयता के बचाव की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 क्षेत्रीयता का मापन

क्षेत्रीयता को कुछ निश्चित तकनीकों के माध्यम से मापा गया है जो निम्नलिखित हैं।

5.3.1 क्षेत्र अध्ययन एवं क्षेत्र प्रयोग

क्षेत्र प्रयोग वास्तविक परिस्थितियों में प्रायोगिक नियंत्रण एवं विषयों को यादृच्छिक रूप से शामिल कर प्रयोग करने का एक प्रयास है। क्षेत्र प्रयोगों की रचना करने और निष्पादित करने के लिए अनुपयोगी सृजनात्मकता एवं दृढ़ता की आवश्यकता होती है। साइमन वारले एवं कैलाब्रेस (2018) द्वारा किया गया एक अध्ययन क्षेत्रीयता तथा निर्णय लेने का एक दुर्लभ उदारहण है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि क्या किसी व्यक्ति के अपने क्षेत्र में होने से आपसी निर्णय के परिणाम पर एक आगन्तुक की अपेक्षा अधिक प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त अनुसंधानकर्ता यह जानना चाहते थे कि क्या प्रभुत्व (व्यक्ति विशेष के रूप में) ने प्रक्रिया को प्रभावित किया है। उन्होंने तीन छात्रों के समूहों को एक कक्ष में मिलने के लिए वहां जिसमें एक छात्र निवासी था एवं अन्य दो आगन्तुक थे। समूह को बजट समस्या पर चर्चा करने और आम सहमति तक पहुंचने के लिए कहा गया।

प्रभुत्व ने निर्णय प्रक्रिया को अधिक प्रभावित नहीं किया। इसकी अपेक्षा, अन्तिम सर्वसम्पति ने बहस में क्षेत्र के मालिक के दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित किया जितना कि यह आगन्तुकों के दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करता है। अर्थात आगन्तुकों की अपेक्षा क्षेत्र का मालिक महत्वपूर्ण होता है। परिणाम जानकारी देते हैं कि यदि आप चाहते हैं कि निर्णय आपके अनुसार हो तो आपको, अपने स्थान पर निर्णय पर चर्चा करने हेतु दूसरों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा मालूम होता है कि यह रणनीति काम करती है कि आपके पास एक प्रभावशाली व्यक्तित्व हैं या नहीं।

क्षेत्र अध्ययन वास्तविक परिस्थितियों में भी किया जाता है, स्वाभाविक रूप से होने वाले सहसंबंधों या चरों के मध्य अन्तर पर ध्यान केन्द्रित करता है, क्योंकि शोधकर्ता यादृच्छिक रूप से विषयों या प्रयोज्यों को नहीं चुन सकता है या चर पर नियंत्रण अभ्यास नहीं कर सकता है। एक विशेष क्षेत्र अध्ययन में, कई चरों को मापा जाता है लेकिन शोधकर्ता द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, तथा प्रयोगात्मक स्थितियों या परिस्थितियों के लिए कोई यादृच्छिक प्रक्रिया नहीं होती है। उदाहरण के लिए जैसन, रिचलर और ऊकर (1981) ने समुद्र तटों पर क्षेत्रीयता की परख की है। धूप सेंकने वाले रेडियो, तौलिये और छतरियों का उपयोग करके क्षेत्रों को चिन्हित करते है। परिणामों ने दर्शाया कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में छोटे क्षेत्रों का दावा करती हैं और वे मिश्रित लिंग समूह और बड़े समूह, समान लिंग समूहों और छोटे समूहों की तुलना में कम स्थान (प्रति व्यक्ति) का दावा करते हैं।

5.3.2 सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार

क्षेत्रीयता का अध्ययन करने का एक अन्य प्रकार, व्यक्तियों से उनके व्यवहार और अनुभवों के बारे में पूछना है। सर्वेक्षण और साक्षात्कार जैसे आत्म-सूचना, विधियों का आशय यह है कि उत्तरदाता अपने व्यवहार को सटीक ढंग से बताने में सक्षम या इच्छुक नहीं भी हो सकते है। हालांकि, इन विधियों के आमतौर पर दो लाभ हैं: अध्ययन में बहुत अधिक संख्या में व्यक्तियों को शामिल करने के हेतु शोधकर्ता के संसाधनों को बढ़ाया जा सकता है, और उत्तरदातों के विचारों, विश्वासों और अन्य संज्ञानों का अध्ययन किया जा सकता है।

साक्षात्कार के दृष्टिकोण का एक अच्छा उदाहरण अली एवं कोडमनी (2012) द्वारा इजराइल में ऊँची इमारतों के 185 निवासियों पर किया गया एक अध्ययन है। 5 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों सहित 45 परिवारों के प्रत्येक सदस्य से उसके वास्तविक क्षेत्र के प्रासंगिक व्यवहार और संज्ञान के बारे में पूछा गया। उदाहरण के लिए निवासियों से पूछा गया –

क) जहाँ उन्होंने मकान के एक कमरे में विशिष्ट गतिविधियों में शामिल होना चुना (एक व्यवहार प्रश्न), और

ख) जो, उनकी राय में, मकान के अन्दर विभिन्न स्थानों के मालिक है (एक अनुमति प्रश्न)।

5.3.3 प्राकृतिक पर्यवेक्षण एवं अप्रत्यक्ष उपाय

मानव क्षेत्रीयता या प्रादेशिकता का अध्ययन करने के लिए एक और कार्यनीति है, जिसके द्वारा सतर्क रूप से तथा संरचनाबद्ध रूप में चल रहे क्षेत्रीय व्यवहार का निरीक्षण होता है। उदाहरण के लिए शोधकर्ता यह देख सकता है कि कैसे बालक विद्यालय के खेल के मैदान के कुछ क्षेत्रों पर कब्जा किये रहते हैं और उनका बचाव करते हैं।

जब अप्रत्यक्ष उपायों को प्रयुक्त किया जाता है, तब अनुसंधानकर्ता उन वस्तुओं की संख्या और स्थान की गणना करता है जिन्हें व्यक्ति किसी स्थान को नियंत्रित करने के लिए प्रयोग में लाते हैं। उदाहरण के लिए किसी विश्वविद्यालय के कैफेटेरिया का आमतौर पर इतना अधिक उपयोग किया जाता है कि मध्याह्न भोजन के लिए जाने वाले अनुभवी विद्यार्थी पहले किसी खाली सीट का पता कर पाएं हैं, जहां वे अपनी किताबें मेज पर और उसी के पीछे अपना कोट टांगते हैं, फिर भोजन की लाइन में लगते हैं।

क्षेत्रीयता के दो विशिष्ट अप्रत्यक्ष उपाय चिन्हक और वैयक्तीकरण है। यदि आप यह जानना चाहते हैं कि क्या कुछ जातीय समूह क्षेत्रीयता को भिन्न रूप से दर्शाते हैं तो विनीत रूप से उस मूल्य की तुलना कर सकते हैं जो वे अपने सामने के वाड़े को वैयक्तिकत करते है। वर्गर अन्य (2016) ने उल्लेख किया गया है कि आंतरिक शहर स्लेविक में अमेरीकियों ने अपने गैर-स्लेविक पड़ोसियों की अपेक्षा अपने वाड़े को अधिक वैयक्तीकृत किया। स्लैवियों ने अपने बाड़े को और अधिक परिदृश्यित किया, अपने घरों को उत्तम बनाये रखा और अधिक पौधा रोपण को ध्यान में रखा।

5.4 क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले कारक

क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले अनेक कारक निम्नलिखित हैं –

5.4.1 वैयक्तिक कारक

क) लिंग – क्षेत्रीयता में लिंग, आयु और वैयक्तिक विशेषताओं एवं व्यक्तित्व के रूप में भिन्नता होती है। यह देखा गया है कि पुरुष महिलाओं की तुलना में बड़े क्षेत्रों की दावा करते हैं। पुरुष अभी भी महिलाओं की तुलना में अधिक वार उच्च प्रस्थिति वाले व्यवसायों को चुनते है, इस प्रकार, अधिक से अधिक काम पर बड़े स्थानों पर दावा करते हैं। यहां तक कि उच्च प्राप्त करने के पूर्व भी जब पुरुष और महिला उनकी विद्यार्थी अवस्था में ही होते हैं, वे उच्चतर क्षेत्र घटित करने का दावा करते है।

ख) व्यक्तित्व एवं बुद्धि – दोनों लिंग के अधिक बुद्धिमान निवासी आमतौर पर अपने लिए बड़े क्षेत्रों को चिन्हित करते हैं, और जो पुरुष अधिक आशंकित होते हैं वे बड़े क्षेत्रों को चिन्हित करते है। स्त्रियाँ जो अधिक आत्मविश्वासी होती है लेकिन कम प्रभावशाली होती हैं, वे बड़े क्षेत्रों से अलग होती है।

नतीजे से ज्ञात होता है कि लिंग और व्यक्तित्व क्षेत्रीयता में एक अर्न्तःस्थापित भूमिका का निर्वहन करते हैं।

ग) **सामर्थ्यता** – किसी की व्यक्ति क्षमता का स्तर भी क्षेत्रीय कार्य को बहुत हद तक प्रभावित करता है। जिन निवासियों को कम सहायता की आवश्यकता होती है, वे न केवल सार्वजनिक क्षेत्रों में बल्कि अपने प्राथमिक क्षेत्रों में भी अधिक क्षेत्रीय होने का गुण दिखलाते है। जो निवासी मानसिक रूप से अधिक सर्तक थे वे अपने प्राथमिक क्षेत्रों में अधिक क्षेत्रीय थे, लेकिन जो निवासी मानसिक रूप से कम सतर्क थे वे सार्वजनिक क्षेत्रों में अधिक क्षेत्रीय थे।

5.4.2 सामाजिक कारक

क) **सामाजिक वातावरण** – ऐसा प्रतीत होता है कि पड़ोस का वातावरण क्षेत्रीयता को प्रभावित करता है। टेलर गॉट फ्रेडसन और ब्राडनर (1981) द्वारा 12 बाल्टीमोर जिले में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि अनुकूल सामाजिक वातावरण उत्तम क्षेत्रीय कार्यशीलता से जुड़ा है। अधिक सौहार्दपूर्ण परिवेश में, निवासी घुसपैठियों से पड़ोसियों को अच्छी प्रकार से अलग करने में सक्षम थे, क्षेत्रीय नियंत्रण की कम समस्याओं का अनुभव करते थे और पड़ोस के स्थान के लिए अधिक जिम्मेदारी महसूस करते थे।

ख) **सामाजिक वर्ग** – क्षेत्रीयता पड़ोस और उसके निवासियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ बदलती रहती है। नीचे के वर्ग के पड़ोस में, व्यक्ति का घर प्राथमिक क्षेत्र के रूप में कार्य करता है, लेकिन स्वामित्व और नियंत्रण अक्सर सामने के दरवाजे पर ही समाप्त हो जाता है। उस दरवाजे के ठीक बाहर, घर के बाहर, अवांछित गतिविधियां हो सकती हैं। निवासी अधिकांशतः महसूस करता है कि घर के बाहर नियंत्रण असंभव है और इसे नियंत्रित करने के प्रयास बन्द कर देता है। मध्यम वर्गीय पड़ोस में क्षेत्र की भावना अधिक बार बाहर बाड़े तक तथा कुछ हद तक पड़ोस की गली के ऊपर और नीचे तक फैली होती है। उच्च वर्ग के पड़ोस में, क्षेत्रीय कामकाज कभी-कभी पूरे पड़ोस में फैल जाता है।

ग) **संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा** – क्षेत्रीयता का एक और प्रमुख कारक, संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा है। जब व्यक्ति संसाधनों के लिए दूसरों के साथ संघर्ष करते है तब आप अधिक क्षेत्रीय व्यवहार की अपेक्षा कर सकते है। प्रत्येक दिन का अनुभव बताता है कि जब कैफेटेरिया कुर्सियों, पुस्तकालय में जगह या किसी अन्य संसाधन की कमी होती है, तब व्यक्ति संसाधन के अपने भाग को संरक्षित करने के लिए क्षेत्रों को चिन्हित वैयक्तिगत, दावा और बचाव करना शुरू कर देंगे। एलिजावेथ कैशडन (1980) ने अफ्रीकी बुशमेन जाति के अपने अध्ययन से कुछ तर्क एवं सबूत प्रस्तुत किये है। उनके विचार में क्षेत्रीयता तब होती है जब संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा होती है। हालांकि बचाव के विभिन्न स्वरूपों का उपयोग तब किया जाता है जब संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं या दुर्लभ होते है। व्यक्ति अपने क्षेत्रों को सामाजिक

सीमा बचाव तंत्र के माध्यम से नियंत्रित करते हैं जिसमें मालिक समूह प्रतिस्पर्धा मालिक समूहों के सदस्यों द्वारा क्षेत्रों तक पारस्परिक पहुंच पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। सीमा स्वयं में इतनी महत्वपूर्ण नहीं है, बजाय इसके कि एक क्षेत्र के आंगतुकों को मस्तिष्क के क्षेत्र में प्रवेश करने किए विभिन्न अनुष्ठानों से गुजरना पड़ता है। एक बार जब वे ''अपना बकाया चुका देते हैं'' तब क्षेत्र के संसाधनों में या उपयोग करने के लिए उनका स्वागत है।

घ) **कानूनी स्वामित्व** – क्षेत्रीयता या प्रादेशिकता में एक अन्य सामाजिक कारक कानूनी स्वामित्व है। किरायेदार एवं घर का मालिक दोनों आवासीय क्षेत्र को इस अर्थ में नियंत्रित करते हैं कि उन्होंने क्षेत्रीयता को परिभाषित किया है, लेकिन कानूनी स्वामित्व गृहस्वामी के क्षेत्रीय व्यवहार को बढ़ाता प्रतीत होता है। विशेष रूप से जब मौलिक किरायेदारों की अपेक्षा वे निजीकरण में अधिक संलग्न होते है।

ड़) **नियत कार्य** – जब हम किसी सार्वजनिक क्षेत्र में होते हैं लेकिन किस विशेष कार्य में संलग्न होते है, तब उस क्षेत्र का अधिक बचाव कर सकते हैं यदि हम कुछ विशेष नहीं कर रहे होते हैं। सार्वजनिक टेलीफोन पर कॉल करने वालों के एक अध्ययन में पाया गया कि जब कोई फोन का इंतजार कर रहा होता था तब लोग अपनी कॉल लम्बे समय तक जारी रखते थे (रुबेक, पेप एवं डोरियर, 1989)।

5.4.3 भौतिक कारक

जॉनी जेकब ने 1961 तथा ऑल्कर न्यूमॉन ने 1973 में भौतिक कारकों जो क्षेत्रीयता को प्रभावित करते हैं, की व्याख्या करने हेतु सुरक्षात्मक स्थान सिद्धांत के माध्यम से तर्क प्रस्तुत किया। उनका मत था कि आवासीय अपराध और अपराध का भय क्षेत्रीय आक्रमण से संबंधित दो घटनाएँ है। सिद्धांत यह दर्शाता है कि कुछ ऐसी निश्चित रचना लक्षण हैं – जैसे निजी क्षेत्र से सार्वजनिक क्षेत्र को पृथक करने के लिए वास्तविक या प्रतीकात्मक बाधाएं और क्षेत्र के स्वामियों के लिए अपने स्थानों में संदिग्ध गतिविधि का निरीक्षण करने के अवसर, निवासियों की सुरक्षा की भावना को बढ़ाना और अपराध को कम करना इत्यादि।

उदाहरण तौर पर किसी दो उन क्षेत्रों में अधिक अपराध का संदेह हो सकता है जिनकी कम निगरानी कम की जाती है एवं वे किसी के द्वारा नियंत्रित भी नहीं दिखते हैं। सोचर (1987) द्वारा किए गये एक अध्ययन में बताया गया है कि न्यूनतम निगरानी वाले स्थानों में कारों को खड़ा कर दिया गया था। विश्वविद्यालय के निवास, हॉल में एक अन्य अपराध के अध्ययन में दर्शाया गया कि जो हॉल सुरक्षात्मक स्थान विशेषताओं से भरे-पूरे थे (जहां निवासी अधिक नियंत्रण एवं निगरानी रख सकते थे) की अपेक्षाकृत जो इन विशेषताओं से युक्त नहीं थे, वहां कम अपराध हुआ। (सोमर, 1987)।

5.4.4 सांस्कृतिक और नृजातीय कारक

विभिन्न संस्कृतियों में क्षेत्रीयता को अलग-अलग तरीके से व्यक्त किया जाता है। फ्रांसीसी एवं जर्मनी समुद्र तटों पर क्षेत्रीयता के एक अध्ययन को पहले के अमेरिकी अध्ययन पर बारीकी से प्रतिरुपित किया गया था, जिससे जर्मन, फ्रेंच और अमेरीकियों की समुद्र तट क्षेत्रीयता में परस्पर तुलना की जा सके। तीनों संस्कृतियां कुछ मामलों में एक जैसी थी (स्मिथ, 1981)। उदाहरण के लिए –

क) सभी संस्कृतियों में बड़े समूह प्रति व्यक्ति छोटे स्थानों का दावा करते हैं।

ख) पुरुषों और महिलाओं से बने समूह प्रति व्यक्ति छोटे स्थान होने का दावा करते हैं।

ग) महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा कम स्थान का दावा करती हैं।

हालांकि अन्य मामलों में संस्कृतियां भिन्न होती है। फ्रांसीसी कम क्षेत्रीयता दिखाते है। उन्हें क्षेत्रीयता के सम्प्रत्यय के साथ कुछ कठिनाई थी, अक्सर यह कहा जाता है कि समुद्र तट सभी के लिए होता है। जर्मन बहुत अधिक चिन्हक में संलग्न थे। उन्होंने अक्सर रेत के रूप में बाधाओं को खड़ा किया, और यह घोषणा की कि उनके क्षेत्र दो विशेष तिथियों को आरक्षित थे तथा चिन्हक बताते है कि कुछ क्षेत्रों को कुछ समूहों के लिए आरक्षित किया गया था।

अन्ततः तीन संस्कृतियों के मध्य क्षेत्रीय आकार थोड़े भिन्न थे, लेकिन क्षेत्रों के आकार थोड़े समान भी थे। जर्मनी ने अधिकतर बहुत बड़े क्षेत्रों का दावा किया, परंतु तीनों संस्कृतियों में वैयक्तिक रूप से अधिक अंडाकार क्षेत्रों को चिन्हित किया और समूहों ने अधिक गोलाकार क्षेत्रों को चिन्हित किया।

5.5 क्षेत्रीयता के सिद्धांत

क्षेत्रीयता या प्रादेशिकता के कुछ महत्वपूर्ण सैद्धांतिक दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं:

5.5.1 जीन और क्रमिक विकास की भूमिका

रॉफ टेलर (1988) ने अपने मौलिक कार्य *ह्यूमन टेरिटोरियल फंकशनिंग* में वैयक्तिक और छोटे समूह क्षेत्रीय संज्ञान व्यवहार और संज्ञान पर एक अनुभवजन्य विकासवादी दृष्टिकोण ने मानव क्षेत्रीयता के लिए विकासवादी एवं आनुवांशिक आधारों को व्यापक रूप से स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा है कि क्षेत्रीय कार्यशैली हमारी विकासवादी विरासत का एक उत्पाद है। अफ्रीकी सवाना में घूमने वाले शिकारियों के गिरोहों के रूप में हमारे प्राचीन इतिहास ने हमारी वर्तमान क्षेत्रीयता की सामान्य प्रकृति को आकार दिया। टेलर के अनुसार क्योंकि क्षेत्रीयता एक छोटे समूह के सन्दर्भ में विकसित हुई आज भी यह केवल वैयक्तिक एवं लघु समूहों पर ही लागू होती है, न कि राष्ट्रों जैसे बड़े समूहों पर। टेलर का मानना है कि हमारी वर्तमान क्षेत्रीय कार्यशैली में सम्मिलित व्यवहार प्रक्रियाएं बहुत पहले विकसित हुई

व्यवहार प्रक्रियाओं के समान है, भले ही वे एक भी उद्देश्य की पूर्ति न कर पाये या उनके समान परिणाम प्रस्तुत करें। अन्त में, टेलर का दावा है कि क्षेत्रीयता के विकासवादी आधार का अर्थ यह नहीं है कि यह हमारे जीनों में 'यंत्रस्य' है।

5.5.2 एक अन्तःक्रिया आयोजक

जुलियन एडनी (1972) का मानना है कि मानव क्षेत्रीयता मानव व्यवहार को व्यवस्थित करने का काम करती है ताकि हिंसा, आक्रामकता और अधिक प्रभुत्व अनावश्यक रूप से न हो। जब व्यक्ति या समूह किसी व्यवस्था को नियंत्रित करता है, तो व्यवहार के बहुत से पहलू व्यवस्थित हो जाते हैं जिनमें कार्यकलाप की पसंद, संसाधनों तक पहुंच एवं व्यवहार संबंधी प्रथाएं भी शामिल हैं। बहुत से व्यक्ति जो दूसरों द्वारा नियुक्त किये गये हैं अंशतः वित्तीय कारणों से स्वयं एक व्यवसाय का स्वामी होने का सपना देखते हैं, किन्तु ऐसा इसलिए भी है कि वे अपने कार्यस्थल की नीतियों एवं भौतिक पहलुओं को संगठित और नियंत्रित कर पाएं। उदाहरण के लिए बच्चे स्वयं के निजी कक्ष चाहते हैं ताकि उनकी गतिविधियां और सजावट के लिए उनके सहोदर भाई-बहन के साथ समझौता न करना पड़े। इस प्रकार, क्षेत्र की तलाश का एक प्रेरक तत्व स्वयं इनके व्यवस्थापन का विशेषाधिकारों को प्राप्त करने का अवसर प्राप्त करना है।

5.5.3 व्यवहार निर्धारण सिद्धांत

पारिस्थितिक मनोवैज्ञानिक क्षेत्रीय व्यवहार को व्यवहार-निर्धारण के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। क्षेत्रीयता का आयोजन कार्य पारस्थितिक मनोवैज्ञानिक जनक रोजर बार्कर के कार्य की अवधारणाओं के समान है। पारिस्थितिकीय मनोविज्ञान में एक कार्यक्रम 'व्यवस्थापन में लोगों' और चीजों के मध्य अन्योन्य क्रिया का एक निर्धारित अनुक्रम है''। पारिस्थितिकीय मनोविज्ञान की अन्य अवधारणाओं में स्पष्ट रूप से नियंत्रण की अवधारणा शामिल हैं। उदाहरण के लिए, संवेदन क्रियाविधि और कार्यकारी तंत्र (आमतौर पर व्यक्ति के नियंत्रणाधीन होता है किन्तु कभी-कभी थर्मोस्टेट की तरह क्रियाविधि एक तंत्र) गलत स्थितियों के लिए निर्धारण की जांच करते हैं और उन्हें सही करते है।

अपनी प्रगति की जांच करें 2

1) क्षेत्रीयता के अध्ययन में क्षेत्र प्रयोग एवं क्षेत्र अध्ययन के बीच अन्तर को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

2) क्षेत्रीयता के संबंध में क्रमिक विकास के परिप्रेक्ष्य की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

5.6 समुदाय रचना की अवधारणा

'समुदाय अभिकल्प' पद मूलतः योजना निर्माण और निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्थानीय लोगों की भागीदारी के लिए 1960 के दशक में गढ़ा गया है। यह विश्वभर में मानवाधिकारों के संबंध में जागृति उत्पन्न करने और इसकी की कालावधि थी। योजना एवं अभिकल्प में समुदाय की भागीदारी, इस मामले में समकालीन योजनाकारों, रचनाकारों और विद्वानों को उन आदर्श और विचारधारा का प्रसार प्रतीत होता है। जो चार दशक पहले मुख्यधारा में थे (सनॉफ, 2000)। इस आन्दोलन की शुरुआत से लेकर समुदाय रचना की समझ तथा ''समुदाय स्वयं'' और ''भागीदारी'' जैसे मौलिक शब्दों के पीछे का अर्थ बदल गया है। जबकि इस प्रकार के बदलाव का सामुदायिक अभिकल्प के प्रौक्टिशनर पद कई रूपों में प्रभाव पड़ता है, इस बदलाव को अपने आप में प्रयोगमूलक आधार की वैचारिक भी माना जाता है।

सीमा चिन्ह अध्ययनों जैसे अर्नस्टीन (1969) एवं वुल्ज (1986) ने 60 के दशक के उत्तरार्ध से 80 के दशक के इस बदलाव हेतु उदाहरण प्रस्तुत किया है तथा वर्तमान के अध्ययन इस प्रवृत्ति की निरंतरता की पुष्टि करते हैं (टोकर मुद्रण में)। हालांकि, 1990 के दशक के बाद से एक व्यावहारिक समझ की ओर बदलाव ने योजना बनाने के निर्णय में लोगों की भागीदारी के विचार के अदभुत परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है। मुख्यधारा में लोकप्रिय योजनाकारों/रचनाकारों द्वारा ''भागीदारी'' शब्द का उपयोग नई शैलियों के निर्माण और प्रचार के लिए उत्तोलन प्रदान करने के लिए इस प्रवृत्ति का उदाहरण प्रस्तुत करता है (डयूने और प्लॉटर जाइवर्क, 1992)।

वैचारिक आधार से व्यवहारमूलक आधार पर बदलाव ने कई तरह से समुदाय रचना की बढ़ती लोकप्रियता में योगदान दिया है। सर्वप्रथम, 1960 के दशक (एलिन्सकी, 1972) के विरोधी अभिवृत्तियों को लेकर अपने सहयोगात्मक निर्णय लेने कर प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करने के फलस्वरूप प्रयोगमूलक उपागम की महिम प्रकृति को बहुत अधिक प्राथमिकता दी गई हैं। दूसरा, कई अनुभववादियों द्वारा महसूस किया गया कि समुदाय रचना के व्यवहारमूलक पहलुओं पर अधिक ध्यान दिए जाने के साथ रचना और योजना बनाने की प्रक्रियाओं में लोक भागीदारी के महत्वपूर्ण सकारात्मक परिणामों का आना संभव हो गया है। इस संदर्भ में बढ़ती लोकप्रियता, यद्यपि किसी कारणवश, योजना और रचना में विचार की उत्परिवर्तित सीमाओं का लाभ उठाने में एक युक्ति के रूप में उपयोग करने हेतु समुदाय रचना के अभ्यास को खुला छोड़ दिया गया है। इस प्रकार के दृष्टिकोण (यथा नया शहरीकरण), समुदाय रचना को अवधारणा इस प्रकार से करते हैं कि समुदायों को भौतिक

संस्थाओं में बदल देती है तथा रचना पर ध्यान, केन्द्रित करती है क्योंकि यह भवन के पहलुओं और अभिविन्यास से संबंधित है (हार्वे, 1997), (सोरकिन, 1998)।

विशेष रूप से नए नगरीकरण में स्थानिक पहलुओं पर इस प्रकार अधिक बल स्थानिक नियतत्ववाद को प्रतिध्वनित करता है; जो सामाजिक गत्यात्मकता को स्वरूप देने में वास्तुकला की शक्ति को अधिक महत्व प्रदान करता है (सोरकिन, 1998; टालने, 1999; हाइडन, 2003; टोरे, 1999)। विचारवादी या व्यवहारवादी समुदाय रचना हमेशा समुदायों के निर्माण एवं समुदायों की रचना के विषय में रही है (सनॉफ, 2000) और सदैव स्थानिक नियतत्ववाद के समर्थकों के साथ अनेक बाधाओं रही हैं। इसलिए नए शहरीकरण के संदर्भ में समुदाय रचना को केवल धरम भागीदारी का एक उदाहरण माना जा सकता है, जो समुदाय रचना के बढ़ती लोकप्रियता का परिणाम प्रतीत होता है चूंकि सनॉफ (2000) वास्तविक भागीदारी को छद्म भागीदारी से पृथक करते हैं, उनका दावा है कि जब तक निर्णय लेने की शक्ति प्रतिभागियों के हाथों में नहीं है और उन्हें इस संबंध में जानकारी से अवगत कराया जाना है कि उनके निमित्र क्या योजना बनाई गई है, यह वास्तविक भागीदारी नहीं हो सकती है। इसे वास्तविक स्वरूप देने के लिए भागीदारी प्रक्रिया को प्रतिभागियों को निर्णयों और किये गये कार्यों के नियंत्रण में रखना होगा। आज समुदाय रचना की तस्वीर कार्य के मुख्य दो क्षेत्रों को दर्शाती है एक रूपरेखा जिसके प्रमुख वैशिष्टय में वास्तविक भागीदारी और 'छदम भागीदारी' अंतग्रर्धित है सनॉफ (2000)।

5.7 क्षेत्रीयता और समुदाय रचना

किसी अभिकल्प विशेष के संदर्भ में प्रयुक्त होने की दशा में क्षेत्रीयता को उन योजनाओं में सन्निहित किया जाना चाहिए जहां यह सेवार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति करना हुआ प्रतीत होता है अर्थात, यह क्षेत्रीयता से जुड़े मानव व्यवहार प्रतिमान की सूची के आधार पर क्षेत्रीयता के लिए रचनाओं को आक्रमकता को कम करने, नियंत्रण बढ़ाने और निर्देश और बचाव की भावना को बढ़ावा देने के निर्मित है। कुछ शोधों द्वारा समर्थित तथा अब तक रिपोर्ट किए गये किसी भी व्यक्ति द्वारा अस्वीकार किए गये एक साहसिक निष्कर्ष यह है : जितना अधिक एक रचना घर, विद्यालय और कार्य स्थल पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्राथमिक क्षेत्र प्रदान कर सकता है, उतना ही उत्तम है।

प्राथमिक क्षेत्रों की आपूर्ति पर एक महत्वपूर्ण प्रतिबंध है, स्थान या जगह की कीमत ज्यादा हो सकती है। दूसरा प्रतिबंध कुछ संगठनों की नीतियां है, जिसके लिए कर्मचारियों को पर्यवेक्षक की प्रत्यक्ष निगरानी में होना आवश्यक है। एक अन्य तीसरा प्रतिबंध यह है कि कुछ नौकरियों की मूल प्रकृति ही ऐसी होती है जिनमें कार्यरत व्यक्तियों तक पहुंच अपेक्षित होता है। अग्रिम पंक्ति वाले कर्मचारियों का एकमात्र आश्रय कर्मचारी कक्ष और कॉफी ब्रेक है।

बहुत सी नौकरियों में समूहों को दिन के अधिकांश समय गहन संचार में एक साथ काम करना चाहिए। व्यक्ति ऐसी नौकरियों में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं यदि

प्रत्येक एक अलग प्राथमिक क्षेत्र में स्थित है। हालांकि क्षेत्रों पर समूहों का दावा हो सकता है। ऐसे कार्य समूहों का स्वयं का सामूहिक प्राथमिक क्षेत्र होना चाहिए। अनेक घरों, कार्य स्थलों और संस्थागत व्यवस्थाओं में व्यक्तियों एवं समूहों के लिए प्राथमिक या द्वितीयक क्षेत्र प्रदान करने के लिए और भी बहुत कुछ किया जा सकता है। कई बार किसी ने गंभीरतापूर्वक विचार नहीं किया है कि एक स्वामित्व वाली जगह तक पहुंच से प्रभावित व्यक्तियों के जीवन में सुधार किस प्रकार से सुधार किया जा सकता है।

इस अनुभाग में पड़ोस और अस्पतालों की क्षेत्रीयता के लिए कुछ सुझावों का परीक्षण किया जाएगा। इन विशेष पर्यावसान के लिए अभिकल्प संबंधी अनुशंसाएँ की गई थीं, लेकिन थोड़ी सी कल्पना के साथ, हम समान सिद्धांतों का उपयोग करके अन्य परिस्थितियों के लिए अभिविन्यास की कल्पना कर सकते हैं। छोटी व्यवस्थापन (जैसे हमारे अपने घर) में बदलाव की तुलना में बड़े व्यवस्थापन (जैसे पड़ोस) की रचना में बदलाव करना अधिक कठिन होता है। फिर भी पूरे पड़ोस को पृथक-पृथक उपाधि के लिए क्षेत्रीकृत किया गया है।

5.7.1 पड़ोस

जब निवासियों की ऐसी मान्यता होती है कि उनकी सड़कों पर यातायात का अधिक आवागमन होता है, तो पड़ोस के माध्यम से वाहनों की आवाजाही को रोकने हेतु शहरों में अधिकांशताः सड़कों को बन्द करने के लिए कहा जाता है। यात्रीगण निश्चित रूप से मानते हैं कि सड़कें उन्हें कुशलता से काम करने और आने-जाने में सहायता करने के लिए हैं। बच्चों की सुरक्षा और यातायात के शोर के बारे में चिंता पड़ोस के निवासियों के लिए बाधाओं के स्पष्ट करना है, परन्तु पड़ोस के क्षेत्रीयकरण के कदम से कम स्पष्ट लाभ हो सकते हैं।

बंद सड़कों का होना निवासियों को एक नियंत्रण एवं पहचान की भावना प्रदान करने का कार्य करता है। जो कारें अब सड़कों से गुज़रती हैं, वे पड़ोसियों के स्वामित्व में हैं। क्योंकि कुछ ही कारें होती हैं और निवासियों के पास अजनबियों को पहचानने का अच्छा मौका होता है। यह अपराध को कम करने का काम कर सकता है क्योंकि निवासियों द्वारा प्रत्येक कार पर ध्यान दिया जाता है। सेंधकार (चोर) जिनके पास चुनने के लिए कई पड़ोस हैं, एक अधिक गुमनाम पड़ोस का चयन करना चाहेंगे। बचाव स्थान सिद्धांत पड़ोस के रचना परिवर्तनों का समर्थन करेगा जो निवासियों के स्वामित्व की भावना को बढ़ाता है और उस स्थान को समाप्त करता है जिसके बारे में कोई विशेष रूप से सतर्क अनुभव नहीं करता है, और उस स्थान को बढ़ाता है जिसे निवासियों द्वारा आसानी से देखा जाता है।

दुर्भाग्य वश, पूरे पड़ोस को बदलना राजनीतिक रूप से जटिल है। उदाहरण के लिए, यातायात बाधाओं का विरोध न केवल उन यात्रियों द्वारा किया जाता है बल्कि पड़ोस में निवास कर रहे लोगों द्वारा भी विरोध किया जाता है जो नए अवरोधों के परिणामस्वरूप बढ़े हुए यातायात का अनुभव करते हैं। वैयक्तिक घरों में छोटे पैमाने पर परिवर्तन होते हैं उदाहरण के लिए राजनीतिक रूप से अधिक आसान, परन्तु उनमें से कुछ को मूल्य उस वैयक्तिक गृहस्वामी के लिए अधिक होती है।

समस्या को कभी-कभी एक अलग सड़क स्वरूप बनाकर हल किया जा सकता है, जब पड़ोस की मुख्य रूप से रचना की गई हो या किसी खंड में सड़क व्यवस्था को पुनर्व्यवस्थित करके। एक अध्ययन से मालूम हुआ है कि बंद मार्ग के निवासियों का मानना है कि उनके पास, अपनी गली का विशेष उपयोग है, वे अजनबियों से पड़ोसियों को आसान ढंग से पृथक कर सकते हैं और उनके पास सड़कों पर के पास रहने वाले निवासियों की तुलना में सुरक्षित एवं उत्तम रखरखाव वाली सड़कें हैं।

5.7.2 अस्पताल

कोई भी अस्पताल में भर्ती होना नहीं पसंद करता है। स्पष्ट कारण के अतिरिक्त (अस्पताल में होने का कारण है बीमारी या कोई चोट), अन्य कारण एक और है कि जिस प्रकार से अस्पतालों में जगह का प्रबंधन किया जाता है उसी प्रकार से हम अपने रहने वाले स्थान का आनंद नहीं उठा सकते हैं। निश्चित रूप से हम एक ऐसी व्यवस्था में जाते है जहां हमारे पास कोई पूर्व स्थापित क्षेत्र नहीं ही तुरंत ही यह हमारे नियंत्रण एवं सुरक्षा की भावना को प्रभावित करता है। यहां तक कि अगर हमें एक स्वयं का कमरा या बिस्तर दिया जाता है, तब हम एक माध्यमिक क्षेत्र में व्यवहार करने के लिए मजबूर हो जाते हैं (जैसे सोना, संवरना, और निजी मामलों पर चर्चा करना) क्योंकि हम अपने प्राथमिक क्षेत्र में व्यवहार करने के आदी हैं। उदाहरण के लिए यदि हमारे पास ताला लगाने लायक कोई अलमारी नहीं है तो हमारी समझ यह है कि हम नियंत्रित कर सकते हैं कि हमारी संपत्ति से समझौता किया गया है।

इसका अन्तर यह है कि जहां भी संभव हो मरीजों को निजीकरण तथा नियंत्रण की अनुमति दी जाए। ताला लगाने योग्य अलमारी, देखने योग्य बुलेटिन बोर्ड, और तस्वीरों पुस्तकों और अन्य सार्थक वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिए अधिक मेज स्थान कुछ सुझाए गए रचना परिवर्तन है। इससे भी सरल नियम यह हो सकता है कि कर्मचारी अपनी पहुंच के भीतर मरीजों को छोटी चीजों की व्याख्या करने के आसान तरीके का सम्मान करने के लिए कहें। कुछ सबूत हैं कि प्राथमिक क्षेत्रों के निर्माण का लाभकारी प्रभाव वालिवारा इत्यादि (2013) द्वारा आयोजित एक नर्सिंग होम में एक अध्ययन से आता है। दोहरे लिए गये कमरों में, दृश्यमान चिन्हक जो कमरे को दो अलग-अलग स्थानों में बांटा गया है, जो निवासियों के आत्म सम्मान और पर्याप्तता की भावना को अग्रसर करते हैं।

जैसा कि अधिकांश परिस्थितियों में होता है, इनमें से कुछ रचना परिवर्तनों के विरूद्ध प्रबल दबाव होता है। कुछ सहयोगी सदस्य शिकायत करते हैं कि मेज बोझिल है अलमारी मूल्यांकन स्थान लेती है, और बुलेटिन बोर्ड मंहगे हैं। कुछ कर्मचारी फर्नीचर और वैयक्तिक कब्जे की मूर्खतापूर्ण व्यवस्था के कारण अक्षमता पर आपत्ति जताते हैं। मुद्दा यह है कि क्या संस्थान मुख्य रूप से मरीजों या कर्मचारियों के कल्याण के लिए मौजूद है। हैरानी की बात यह है कि अक्सर अस्पतालों और अन्य संस्थानों की व्यवस्थाओं को देखते हुए, जबाव यह है कि स्टॉफ की आवश्यकता पहले आती है।

निःसंदेह, कर्मचारियों की जरूरते वैध हैं। हालांकि, अधिकांशतः रोगी की जरूरतें अवांछनीय होती हैं क्योंकि उनकी बीमारी, चोट और अस्थायी स्थिति उनकी जरूरतों को प्रभावी ढ़ग से आवाज उठाने की उनकी क्षमता को कम कर देती हैं। फिर भी प्रत्येक मरीज अस्थायी है समान आवश्यकता वाले समान रोगियों की एक स्थायी धारा अस्पताल से होकर बहती है।

सहयोगी बनाम मरीज रचना दुनिया का सबसे उत्तम समाधान होगा जब रचनाकार दोनों समूहों की लागत और लाभ पर समूहों की जरूरतों और आधार, वास्तुकला परिवर्तन दोनों की सावधानीपूर्वक जांच करेंगे। कर्मचारियों की दक्षता पर मरीज की गोपनीयता और क्षेत्रीयता के पक्ष में अधिक परिवर्तन की आवश्यकता है क्योंकि इस बिन्दु पर कर्मचारियों की जरूरतें आमतौर पर प्रबल होती हैं। कुछ मौजूदा बाधाओं के बावजूद स्थानिक व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है ताकि एक इमारत में हर एक प्राणी उत्तम तरीके से रह रहा हो। पर्यावरणीय रचना जिनमें रचनात्मक रूप से क्षेत्रीयता शामिल है, जीवन की गुणवत्ता में काफी सुधार कर सकते हैं।

5.8 क्षेत्रीय व्यवहार के शोध साक्ष्य

कई अध्ययनों में क्षेत्रीय दखलकारी, घुसपैठ और सुरक्षा पर समूह के आकार, संस्कृति और लिंग के प्रभाव का परीक्षण किया गया है। समुद्र तट क्षेत्रों में दखलकारी समय में वृद्धि के साथ समान लिंग समूह बड़े स्थान का दावा करते हैं जबकि मिश्रित-लिंग समूह अधिक चिन्हकों का उपयोग करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मिश्रित लिंग समूह अपनी क्षेत्रीय सीमाओं को अभुण्ण रखने के लिए चिन्हक का प्रदर्शन करते हैं। इसके विपरीत, समान लिंग समूह सीमाओं को अचिन्हित रखते हैं ताकि सीमाओं के बाहर समूहीकरण किया जा सके। साक्ष्य बताते है कि समूह के आकार में वृद्धि के साथ, प्रति व्यक्ति औसत स्थान कम हो जाता है। एडनी एवं जॉर्डन एडनी, (1974), हालांकि यह मित्रों के समूह के लिए सत्य हो सकता है लेकिन अजनबियों के लिए नहीं (एडनी एवं ग्रंडमेन, 1979)। इस प्रकार, क्षेत्रीय व्यवहार वैयक्तिक और स्थितिजन्य कारकों से प्रभावित होता है। ऐसा प्रतीत है कि पुरुष समुद्र तटों और शयनग्रहों में महिलाओं की अपेक्षाकृत बड़े क्षेत्रों को पसंद करते है (गिफर्ड, 1987)।

अध्ययनकर्ताओं ने उन तरीकों की जांच की है जिनमें विभिन्न देशों के लोग विशेष रूप से छुटिट्यों में समुद्र तट की जगह के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। जर्मन, फ्रांसीसी और अमेरीकियों पर स्मिथ (1981) द्वारा किए गए अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि पुरुषों ने अपनी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना महिलाओं की तुलना में अधिक स्थान का दावा किया और समूह युगल या वैयक्तिक रहने वालों की अपेक्षा प्रति व्यक्ति का स्थान घेरते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ मतभेदों की जानकारी भी दी गई थी, इनसे पता चला कि जर्मन रेखाओं को खड़ा करके अधिक क्षेत्रीय अंकन में लगे हुए हैं और अपने फ्रांसीसी और अमेरिकी समकक्षों की अपेक्षाकृत बड़े स्थान का दावा करते हैं। अन्त में आकृतियों में समानता देखी गई। हालांकि व्यक्तियों द्वारा किए गए चिन्हक अण्डाकार थे और उन क्षेत्रों को चिन्हित करने वाले समूह भी आकार में गोलाकार थे। यौन अन्तर के संबंध में शैफर, और सैडोव्स्की (1975) द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि एक बार में पुरुष

चिन्हकों को कम परीक्षणों पर कब्जा दर्शाया गया और जब दावा या कब्जा किया जाता है तब महिलाओं की तुलना में अधिक लंबे समय तक क्षेत्र का बचाव करते हैं। इसके अतिरिक्त, किसी भी मामले में अकेले कब्जाधारी वे पुरुष क्षेत्र पर आक्रमण नहीं किया। एक अध्ययन में हैबर (1980) ने संधियों को निर्देश दिया कि वे पुरुष और महिला छात्रों के कक्षा मेज क्षेत्रों पर कब्जा करें। जब क्षेत्र में रहने वाले पुरुष थे तब संघ नियोजित कब्जा करने को सक्षम नहीं थे। इसके विपरीत संख्या दोगनी होने पर कब्जा करने में सक्षम थे। ऐसा लगता है कि संघ पुरुष क्षेत्रों पर आक्रमण करने के लिए अनिच्छुक थे। जब कैफेटेरिया की मेजों पर कब्जा किया गया तो पुरुषों आक्रमणकारियों से असहयोगी बातें कहने की अधिक संभावना थी (कैल्सिन, 1976) अन्य विद्धानों ने पाया कि जब आक्रमण किया गया, तब पुरुषों और महिलाओं दोनों के अपने पुस्तकालय की सीटों को वापस लेने को समान रूप से संभावना थी (मैक एंड्रयू रिकमैन हॉर्र एवं सोलोमन, 1978)। इस तरह, क्षेत्रीय व्यवहार संस्कृतियों और यौन प्रभावों के बीच कुछ भिन्नता दिखता है।

शायद कतिपय परिस्थितियों में, जैसे किसी खेल या फिल्म थियेटर में चिन्हकों द्वारा जगहों का बचाव करना कम प्रभावी होता है। ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर रहने वाले अस्थायी रूप से जगह खाली करते समय स्थानों के बचाव का अनुरोध किया जाता है। सोमर एवं बेकर (1969) बचाव की संभावना उस समय कम थी जब उपयोगकर्ता के रहने की पूर्व अवधि (5 मिनट बनाम 20 मिनट) थी तथा वहीं अधिक संभाव्यता (15 मिनट बनाम 60 मिनट) थी। हालांकि, जब पड़ोसियों से स्पष्ट रूप से क्षेत्र का बचाव करने का आग्रह किया गया तब 71 प्रतिशत ने दावा किए गये क्षेत्र पर अपने स्वयं के चिन्हक लगाकर क्षेत्र का बचाव किया (होये इत्यादि, 1972)।

5.8.1 क्षेत्रीय सीमांकन, वैयक्तीकरण और व्यवहार

क्षेत्रीयता चिन्हक के माध्यम से व्यक्त की जाती है और इसमें अक्सर निजीकरण शामिल होता है। कैसिडी (1997) के अनुसार बाड़े, सीमाएं एवं अन्य संकेतक दर्शाते हैं कि अमुक क्षेत्र किसी का है चिन्हकों द्वारा बिना पहचान किए गए क्षेत्रों का पता चल जाता है कि वे क्षेत्र किसी व्यक्ति या समूह का है। व्यक्ति की पहचान वाले चिन्हक जैसे नाम पट्टिका या जो क्षेत्र एक अलग ढंग से पृथक किया गया हो (जैसे घर का नाम, नम्बर) क्षेत्र को निजीकरण करने के प्रयास को प्रदर्शित करता है। सार्वजनिक क्षेत्र स्वयं सचेत रूप से स्थान आरक्षित करने के लिए चिन्हित है। कब्जा और संकट को रोकने के लिए लोग अक्सर सार्वजनिक क्षेत्र (जैसे पुस्तकालय में स्थान या समुद्र तट पर स्थान) में क्षेत्रों को चिन्हित करते है। अधिकतर जब सार्वजनिक क्षेत्र के क्षेत्र पर आक्रमण किया जाता है, तब लोग अपने अधिभोग को अन्य स्थानों पर स्थानान्तरित कर देते हैं। हालांकि, आक्रमण कुछ शारीरिक उत्तेजना और क्रोध उत्पन्न करता है (कासिडी, 1997)। इसके विपरीत, इसकी संभावना अत्यल्प है कि प्राथमिक क्षेत्र (जैसे घर, उछान) पर आक्रमण होता हो।

सार्वजनिक क्षेत्र चिन्हकों की प्रभाविता कई कारकों पर निर्भर करती है जिसमें मालिक की अनुपस्थिति की अवधि वैकल्पिक स्थान की उपलब्धता एवं क्षेत्र की

वांछनीयता शामिल है (ब्राउन एवं ऑल्टमैन, 1983)। जब पर्याप्त स्थान हो तब क्षेत्रीयता चिन्हक प्रभावी होते हैं और कब्जा होने को रोका जा सकता है। हालांकि, जब जनसंख्या में वृद्धि के साथ वैकल्पिक स्थान कम हो जाता है, तब क्षेत्रीय चिन्हक अपना महत्व और प्रभावशीलता खो देते हैं (सोमर एवं बैकर, 1969)। इसी प्रकार एक चिन्हक (उदाहरण स्नैक बार मेज पर एक स्कूल का अखबार) की प्रभावशीलता कम हो जाती है, जब अगर गलती से किसी कब्जा घाटी द्वारा इसे कूड़े के रूप में मान लिया जाता है (एनेन्सन, 1977)। हालांकि कॉलेज कॉपियों जैसे चिन्हकों की अवहेलना नहीं की जाती है।

कुछ अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि एक बार में आधा गिलास बियर एक अधिक वैयक्तिक चिन्हक जैसे खेल, जैकेट की तुलना में मेज पर कब्जा करने के लिए एक प्रभावी उपाय है (होपे, ग्रीन एवं केनी, 1972)। एक समीक्षा में ब्राउन एवं आल्टमैन (1983) ने तर्क दिया कि संभावित ग्राहकों को एहसास होता है कि बार से बाहर निकलते वक्त संरक्षक अपनी जैकेट भूल सकते है परंतु शायद ही कभी आधे ग्लास खाली बियर को छोड़ते हैं क्योंकि संभावित ग्राहक मानते हैं कि बार मालिक संरक्षक के वापस आने की उम्मीद करता है। इस प्रकार, वैयक्तिक चिन्हक अवैयक्तिक चिन्हकों की तुलना में कब्जा करने से अधिक बचाव करते हैं।

5.8.2 क्षेत्रीयता, व्यवहार और आक्रामकता

कई स्थितिजन्य कारकों के आधार पर क्षेत्र या तो आक्रामकता के उत्तेजक के रूप में या आक्रामकता के अग्रसारण के रूप में कार्य कर सकता है। किसी विशेष क्षेत्र की स्थिति क्षेत्रीयता एवं आक्रामकता के मध्य संबंधों को प्रभावित करती हैं। जब क्षेत्र अस्थापित या विवादित होता है, तब आक्रमण की संभावना अधिक होती है। लेव एवं साइब्रस्की (1974) के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि गली गिरोह अधिक अन्तर गिरोह हिंसा में लिप्त थे, जब वे क्षेत्रीय सीमाएं अस्पष्ट थी कि तुलना में अच्छी प्रकार से स्थापित थीं। इसके अतिरिक्त सबूत उपस्थित हैं कि अच्छी प्रकार से चिन्हित क्षेत्रीय सीमाएं स्थिरता प्रदान करती है और हिंसा एवं आक्रामकता की संभावना को कम करती है। अन्य अध्ययनों ने बताया कि पहचानने योग्य क्षेत्रों के आरम्भ के बाद मंदबुद्धि बालकों के समूह में आक्रामकता के स्तर में गिरावट देखी गई। इस प्रकार ऐसा लगता है कि अच्छे प्रकार से स्थापित क्षेत्रों में कब्जा होने की संभावना कम है और आक्रमण की भी संभावना कम है (ऐलो, 1987)।

8.5.3 वास्तुकला विशेषताएं एवं क्षेत्रीय व्यवहार

सार्वजनिक जगहों में कुछ वास्तुशिल्प विशेषताएं क्षेत्रीय दावों के विकास को प्रोत्साहित करती दिखायी देती हैं। सोमर (1967) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि छात्र पुस्तकालय सीटों के लिए क्षेत्रीय दावा करने की अधिक संभावना वहां रखते हैं जहां दीवार पास में हो, प्रवेश द्वार से दूर एवं कमरे के पीछे की तरफ हो। राहगीर पानी के फव्वारे का उपयोग करने की संभावना रखता है यदि इसे भौतिक अवरोध द्वारा दूसरों की स्थानिक निकटता से परिरक्षित किया जाता है (ऐलो, 1987)।

आमतौर पर देखा गया है कि अधिकतर आपराधिक गतिविधियां सार्वजनिक स्थानों के आसपास के क्षेत्रों में केन्द्रित होती हैं। अपराधियों के गली के कोनों, रास्तों में खुले स्थानों में तथा बगीचे जैसे स्थानों से बचने की कोशिश करने की संभावना अधिक होती है। रक्षात्मक स्थान की संकल्पना सार्वजनिक स्थान संगठन के विभिन्न पहलुओं पर केन्द्रित है जो इसके निवासियों में स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देने में सहायक होता है (न्यूमैन, 1972)। न्यूमैन (1972) ने न्यूयॉर्क में दो आवास परियोजनाओं पर एक अध्ययन किया, जिसमें निवासियों की संख्या समान थी। ब्राउन्सविले परियोजना छोटे भागों में आयोजित की गई थी जिसमें पांच से छः परिवारों के लिए आवासीय इकाइयां थीं और इसे आंगन के चारों ओर बनाया गया था। हौन डाइक परियोजना बड़े पार्कों द्वारा पृथक किए गए आवासीय ब्लॉकों की रचना सुविधाओं ने निवासियों को रक्षात्मक स्थान उपलब्ध कराया। रचना सुविधाओं ने ब्राउन्सविले आवास में पड़ोसियों के मध्य समुदाय एवं सामाजिक सम्पर्क की भावना को सुविधाजनक बनाया जिसने सुरक्षा को बढ़ावा दिया एवं आपराधिक दुर्घटनाओं को कम किया। इसके उलट, ब्राउन्सविले के सापेक्ष वैनडाइक आवास में अपराध दर 50 प्रतिशत अधिक थी क्योंकि आवासीय रचना द्वारा सामाजिक सम्पर्क की संभावना को बाधित किया गया था। इस तरह ऐसा लगता है कि क्षेत्रीय स्वामित्व और रक्षा की शक्ति परिस्थिति की विशेषताओं, वास्तुशिल्प रचना की विशेषताओं, लिंग, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और समूह के आकार के अनुसार भिन्न होती हैं।

5.9 वैयक्तिक स्थान

5.9.1 वैयक्तिक स्थान का संप्रत्यय

सामाजिक व्यवहार के सबसे उत्तम नियमों में से एक नियम है कभी भी अपने पड़ोसी के निजी स्थान में अतिक्रमण न करें। सीधे शब्दों में कहें तो हम सभी को बैठने, सोचने, अध्ययन करने, सोने या व्यायाम करने के लिए एक निजी स्थान की आवश्यकता होती है। एक विशेष स्थान अकेले रहने हेतु, अपने विचारों की गोपनीयता में कुछ समय व्यतीत करने हेतु। वैयक्तिक स्थान एक व्यक्ति के आस-पास का वह क्षेत्र है जिसे मनोवैज्ञानिक रूप से वे 'अपना स्थान' मानते हैं। अधिकतर लोग अपने वैयक्तिक स्थान को महत्व देते हैं और असहज महसूस करते हैं तथा क्रोध व चिंता भी करते हैं जब कोई अजनबी बातचीत करते समय आपके बहुत करीब आ जाता है तथा जब वैयक्तिक स्थान पर आक्रमण किया जाता है। वैयक्तिक स्थान इस प्रकार उस दूरी को संदर्भित करता है जब आप लोगों के मध्य बातचीत करते समय आवश्यक दूरी बनाने हेतु स्वचालित रूप से एक कदम पीछे हटना होता है। यह सुरक्षित एवं आरामदायक महसूस करने हेतु आवश्यक है। यह तत्काल क्षेत्र है जो हमें घेरता है तथा इसे हमारी मनोवैज्ञानिक संपत्ति के रूप में देखा जाता है। यदि लोग उस स्थान में घुसने का प्रयास करते है, तो व्यक्ति खुद को बंद, असहज एवं चिंतित महसूस करने लगता है।

1960 में एडवर्ड हॉल ने (सन्निधि विज्ञान) शब्द को उन विधियों के संदर्भ में प्रस्तुत किया, जिसमें लोग सामाजिक संपर्क को विनियमित करने हेतु भौतिक स्थान का

उपयोग करते हैं। उनकी पुस्तक *'दि हिडन डाइमेंशन'* वैयक्तिक स्थान के क्षेत्र में मील का पत्थर है। काट्ज (1937) एवं सोमर (1969) इस क्षेत्र में कुछ अन्य मौलिक शोधकर्ता हैं। उनके अनुसार, वैयक्तिक स्थान अदृश्य भौतिक सीमा है जिसे हम अपने और अन्य लोगों की मध्य खींचते हैं। यह तय करता है कि हम उस व्यक्ति के कितने समीप जायेंगे या उसे अपने करीब आने देंगे। इसलिए, शायद उपयोग करने के लिए उत्तम शब्द 'पारस्परिक दूरी' हो सकता है क्योंकि यह तभी प्रासंगिक हो जाता है जब हम दूसरों के साथ वार्तालाप कर रहे होते हैं। इसके विषय में तभी मालूम हो जाता है जब कोई इस पर कब्जा करता है या हमला करता है।

वैयक्तिक स्थान अधिकतर, इस बात का सूचक होता है कि हम व्यक्ति, हमारे समाज एवं संस्कृतिक के साथ किस प्रकार के संबंध साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति के लिए किसी करीबी से स्नेहपूर्ण आलिंगन पूरी तरह सही होगा, परन्तु किसी अजनबी से गले मिलना न केवल असहज होगा बल्कि अधिकतर के लिए अपमानजनक भी होगा। इसलिए जिस प्रकार से शरीर के कार्य तथा आनन के भाव बहुत कुछ अशाब्दिक सूचना का संचार कर सकते हैं, उसी भांति व्यक्तियों के मध्य यह स्थान भी हो सकता है। एडवर्ड हॉल (1966) भौतिक ने वैयक्तिक स्थान के चार क्षेत्रों की पहचान की। फिर उन्होंने उसमें से प्रत्येक को दो उपश्रेणियों में विभाजित किया, 'निकट' एवं 'दूर'।

1) ***अन्तरंग दूरी:*** यह सबसे छोटा क्षेत्र है तथा लगभग 18 इंच की दूरी पर होता है जैसा कि नाम से पता चलता, यह स्थान केवल उनके लिए खुला होती है जो हमारे बहुत करीबी होते हैं। यह दूरी अक्सर बड़े आराम स्तर को दर्शाती है जिसे हम व्यक्ति के साथ साझा करते हैं। तब केवल हमारे जीवन साथी, बच्चे, करीबी, परिवार के सदस्य, मित्र एवं पालतू जानवर ही हमें परेशान किए बिना इस स्थान में प्रवेश पा सकते हैं। स्नेह एवं आराम के प्रदर्शन अधिकतर स्थान के अन्दर आयोजित किए जाते हैं। इस अन्तरंग स्थान के अन्दर एक व्यक्ति आमतौर पर सीमांत किए जाने वाले एकमात्र अस्थायी, अजनबी स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर या कुश्ती मैच खेलने जैसी स्थितियों में होते हैं। हॉल ''निकट'' स्थितियों का वर्णन करता है जैसे जब हम शरीर से संपर्क करते हैं, उदाहरण के लिए, आलिंगन और ''दूर'' जब हम करीब होते हैं लेकिन वास्तव में स्पर्श नहीं करते हैं जैसे कि जब हम फुसफुसाते है। यदि, कोई अजनबी इस आरक्षित स्थान में घुसने की कोशिश करता है, तब हम बहुत ही असहज महसूस करते हैं।

2) ***वैयक्तिक दूरी:*** यह शारीरिक दूरी भी करीबी मित्रों एवं परिवार के सदस्यों के लिए है। हम व्यक्ति के जितना करीब होते हैं, यह दर्शाता है कि हम भावनात्मक रूप से उसके कितने पास ही यह एक हाथ की लम्बाई के बराबर हो सकता है। यह 18 इंच से 4 फीट तक फैला होता है। यह स्थान मित्रों के साथ वार्तालाप, सहयोगियों के साथ गप करने तथा समूह चर्चा करने के लिए

अधिकतर उपयोग होता है। इस तरह के अनौपचारिक वार्तालाप एवं मित्रों, परिचितों के साथ वार्ताएं इस स्थान पर संचालित किया जाता है। इस क्षेत्र में भी अजनबियों का प्रवेश वर्जित होता है। यह निकट जोड़ों या करीबी मित्रों के लिए तथा 'दूर' एक सामाजिक परिस्थिति में परिचितों के लिए है।

3) ***सामाजिक दूरी:*** यह दूरी 4 फीट से 12 फीट तक होती है और आमतौर पर ज्ञात लोगों, नए परिचितों या यहां तक कि अजनबियों के साथ औपचारिक सामाजिक वार्तालाप के लिए उपयोग की जाती है। दूरी की सीमा स्थिति के अनुसार बदलती है। उदाहरण के लिए, अपने सहपाठी के साथ एक अनौपचारिक व्यवसायिक बैठक में आप किसी ऐसे ग्राहक के साथ औपचारिक व्यावसायिक बैठक की तुलना में शारीरिक रूप से अधिक करीब हो सकते हैं, जिससे आप पहली बार मिल रहे हैं।

4) ***सार्वजनिक दूरी:*** सामाजिक स्थान से परे का स्थान सभी के लिए खुला होता है और इसे सार्वजनिक स्थान के रूप में जाना जाता है। यह स्थान जो 12 फीट से अधिक फैला होता है, अनिवार्य रूप से भाषणों, व्याख्यानों, प्रस्तुतियों प्रर्दशनों आदि के हेतु सार्वजनिक बोलने की स्थितियों के लिए उपयोग किया जाता है। इस दूरी का 'दूर' चर उस समय देखा जा सकता है जब एक विख्यात नेता का संबोधन हो रहा हो। उसके एवं दर्शकों के मध्य दूरी अधिक हो जाती है। कभी-कभी, ऐसी श्रेणियों की आलोचना बहुत कठोर होने के रूप में की जाती है, लेकिन वे उन प्रकारों की व्याख्या करती है जिनसे वे व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इस शब्द का प्रयोग आम आदमी के वार्तालाप में शाब्दिक या प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, यदि हम, किसी के साथ अच्छे संबंध साझा करते हैं, तो हम 'करीबी' होने की बात करते हैं, जब हम साथ नहीं होते हैं तब कहते हैं, चलो दूरी बनाए रखें। समीप रहना या दूर रहना वास्तव में 'वैयक्तिक स्थान' के बारे में बात कर रहा है।

संकल्पना की व्याख्या करने के भी दो सिद्धांत हैं। अरजाइल एवं डीन (1965) ने संबद्धता संघर्ष सिद्धांत द्वारा वैयक्तिक स्थान की संकल्पना की व्याख्या करने की कोशिश की। यह शास्त्रीय दृष्टिकोण परिहार संघर्ष की भांति जिसका हम सामना करते हैं। हम दूसरों के साथ रहना चाहते हैं साथ ही कुछ दूरी भी बनाए रखना चाहते हैं। वैयक्तिक स्थान का विचार हमें समझौता करने में सहायता करता है, ताकि संतुल्य बना रहे। इसे सामाजिक संरचनावादी दृष्टिकोण से थोड़े अलग प्रकार से समझा जा सकता है। इसके अनुसार वैयक्तिक स्थान पर कब्जा, शारीरिक उत्तेजना उत्पन्न करता है तथा इससे स्थिति का संज्ञानात्मक मूल्यांकन भी होता है। मूल्यांकन के आधार पर हमारे करीबी, शारीरिक निकटता या स्नेह में बदल सकते हैं लेकिन, यदि वह अपरिचित है, तो हम बहुत क्रोधित हो सकते हैं। इस प्रकार वैयक्तिक स्थान पर कब्जा के कारण होने वाला तनाव संदर्भ और हमारे मूल्यांकन पर निर्भर है।

5.9.2 गोपनीयता

गोपनीयता, वैयक्तिक स्थान और क्षेत्रीय व्यवहार लोगों की पर्यावरणीय सुविधा एवं गुणवत्ता की धारणा को प्रभावित करते हैं। गोपनीयता, वैयक्तिक स्थान और क्षेत्र की आवश्यकता सर्वव्यापी है। ये तीनों संकल्पनाएं (गोपनीयता, क्षेत्रीय व्यवहार और वैयक्तिक स्थान) निकट से संबंधित है। गोपनीयता का अर्थ सूचना के प्रबंधन या किसी के साथ सामाजिक संपर्क के नियमन से है (लॉफर, इत्यादि, 1973 एवं सेन्डस्ट्रॉम, 1986)। यह अवांछित अवलोकन, प्रदर्शन, व्याकुलता या रूकावट से जानबूझकर पीछे हटना है। गोपनीयता को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं। यथा –

- **इंद्रियों की क्रियाविधि** – सभी 5 ज्ञानेन्द्रियां जिस तरह से मनुष्य अपने परिवेश एवं क्रियाविधि को प्रत्यक्षित करता है को प्रभावित करती है जिसके द्वारा वे गोपनीयता को नियंत्रित करते है।

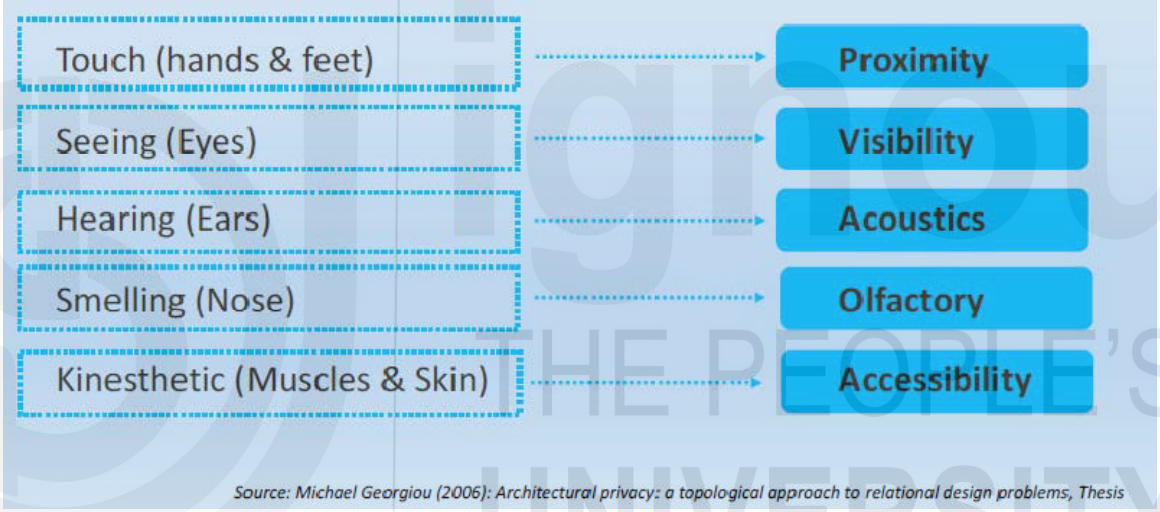

चित्र 5.1 गोपनीयता में इन्द्रियों की क्रियाविधि

- ***वैयक्तिकता*** – वैयक्तिकता की भावना, आत्म-मूल्यांकन और पहचान (वैयक्तिक मूल्य, विश्वास, राय और अभिव्यक्ति), चयनात्मक और पारस्परिक संचार (विभिन्न संदर्भों में) और वार्तालाप का स्तर।

- ***स्थान दूरी*** – दूरियों का एक बंडल (समीपस्थ पैटर्न) जिसका उपयोग लोग दूसरों के साथ अपने संबंधों को नियमित करने के लिए करते है। ये दूरियां अलग-अलग समाजों में और एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में बदलती है।

- ***किसी स्थान के वास्तुकला तत्व*** – वास्तुकला तत्व गोपनीयता के नियामक के रूप में कार्य करते है, दृश्यिक ध्वनिक और स्थानिक रूप से। ये तत्व हैं:
  - फर्नीचर
  - दीवारें
  - बाड़े (घेरा)

- दरवाजे
- सजावट
- रंगीन शीशा
- खिड़कियां

- ***संस्कृति*** – संस्कृति उस सीमा को प्रभावित करती है जिसे निजी माना जाता है। गोपनीयता का स्तर एवं उपाधि विश्व के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक रूप से निर्धारित होती है। गोपनीयता को दूसरों के साथ नियंत्रण वार्तालाप के तंत्र के रूप में समझाया गया है। संस्कृति के कारण उत्तर अमेरिकी लोग अरबी पुरुषों की तुलना में वार्तालाप के समय एक दूसरे के बीच अधिक स्थान रखते हैं।

गोपनीयता कई प्रकार की होती है, जिनमें से प्रत्येक से भिन्न उद्देश्य की पूर्ति होती है। बेस्टिन (1970) ने चार प्रकारों की पहचान की हैं:

- **एकांत** – इस प्रकार की गोपनीयता में व्यक्ति अकेला रहता है और दूसरों के अवलोकन से मुक्त होता है इस प्रकार वह गोपनीयता की सबसे चरम स्थिति में होता है।

- **घनिष्ठता** – दूसरी गोपनीयता स्थिति तब उत्पन्न होती है जब छोटा समूह जैसे जोड़े के दो लोग, अकेले रहने हेतु बाहरी लोगों से खुद को पृथक कर लेते हैं।

- **अनामिता** – इस प्रकार की गोपनीयता तब उत्पन्न होती है जब कोई व्यक्ति भीड़-भाड़ वाले, सार्वजनिक स्थान पर, दूसरों द्वारा पहचाने बिना स्वतंत्र रूप से कार्य करता है।

- **आरभिति** – इसमें, जब कोई व्यक्ति चल रही गतिविधि में लगे रहने के समय अवांछित घुसपैठ के खिलाफ मनोवैज्ञानिक बाधा उत्पन्न करता है। यह निजता की स्थिति है जिसमें हम मनोवैज्ञानिक रूप से कुछ अन्य व्यक्तियों से पृथक हो जाते हैं।

5.9.3 वैयक्तिक स्थान के निर्धारक

हम पारस्परिक दूरी की भावना को कैसे उत्पन्न करते है। क्या कोई शारीरिक कारक भी है या केवल यह एक मनोसामाजिक घटना है? कौन से वो कारक हैं जो हमारे वैयक्तिक स्थान को निर्धारित करते है? आइए जानने का प्रयास करते हैं –

क) शारीरिक कारक – एडॉल्फस इत्यादि (2009) के अनुसार व्यक्ति 3 से 4 वर्ष की आयु में वैयक्तिक स्थान की अपनी समझ हासिल करना शुरू कर देते हैं और यह किशोरावस्था से पूर्णतः विकसित हो जाता है। जनरल/नेचर, 2009

में उसने उल्लेख किया है कि इस अजीबोगरीब भावना का निर्माण और देखभाल एमिगडाला द्वारा की जाती है, जो डर का अनुभव करने में शामिल मस्तिष्क क्षेत्र है जब हमारे क्षेत्र पर आक्रमण किया जाता है, तब यह प्रतिकारक बल उत्पन्न करता है। यदि कोई बहुत पास आता है तो यह चेतावनी देता है, इस प्रकार यह हमें दूसरों से न्यूनतम दूरी बनाये रखने में सहायक होता है। यदि मस्तिष्क का यह भाग क्षतिग्रस्त हो जाता है, तो मस्तिष्क में क्षेत्र में आक्रमण दर्ज नहीं होता है। इसकी पुष्टि एक रोगी ने की थी जिसका एमिगडाला क्षतिग्रस्त था। उसे वैयक्तिक स्थान को कोई समझ नहीं थी तथा अपरिचितों के करीब होने पर भी वह सहज भाव रखती थी बन्दरों पर भी प्रयोग करके समान परिणाम पाये गए (एमराल आदि, 2003)। उन्होंने कहा कि स्वलीनता (ऑटिज्म) से ग्रसित व्यक्तियों को अक्सर सामान्य व्यवहार को बनाए रखना कठिन होता है और वे बिना किसी भावनात्मक समस्या के करीब रह सकते हैं (अमराल आदि, 2003)।

ख) **सांस्कृतिक कारक** – सभी संस्कृतियां संवाद करने हेतु वैयक्तिक स्थान का उपयोग करती है परन्तु हॉल (1959) ने इस तथ्य पर बल दिया कि हमारे आराम क्षेत्र के बचाव हेतु आवश्यक वैयक्तिक स्थान का आकार विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न होता है। वह कुछ संस्कृतियों का 'संस्कृतियों से संपर्क' कहते है। उदाहरण के लिए मध्य पूर्वी या लैटिन देश आमतौर पर शारीरिक अन्तरंगता का प्रदर्शन करते हैं। एक दूसरे के निकट खड़े होते हैं, और इस प्रकार उन्हें कम वैयक्तिक स्थान की जरूरत होती है। यदि हम गैर संपर्क संस्कृति से संबंध रखते हैं तो हम संवाद करते समय हम न तो, दूसरों को छूते है और न ही उनके निकट खड़े होते हैं। हम पृथक खड़े रहना पसंद करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को स्वाभाविक रूप से अपने और अन्य के मध्य अधिक वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता होती है। उत्तरी अमेरिका, यूरोप के लोगों की गैर-संपर्क संस्कृतियों से संबंधित व्यक्तियों के रूप में देखा जा सकता है। हॉल ने इस अन्तरों को संवेदी और तौर-तरीकों के संबंध में सांस्कृतिक मानदंडों के हेतु जिम्मेदार ठहराया, जिसे लोगों के मध्य संचार के लिए उत्तम माना जाता है। अनौपचारिक वार्तालाप, व्यापार, अभिवादन आदि के लिए विशिष्ट मानदंड है। यदि हम अपने वैयक्तिक स्थान के माध्यम से सही संकेत भेजना चाहते हैं तो उन्हें जानना महत्वपूर्ण है। यदि हम इन मानदंडों का पालन नहीं करते हैं तब हम कठिनाई में हो सकते हैं या अन्य व्यक्ति को संस्कृति के उल्लंघन का झटका दे सकते हैं। उदाहरण के लिए सामाजिक चुंबन जैसे स्नेह का सार्वजनिक प्रदर्शन पश्चिमी यूरोपीय देशों में अभिवादन का सामान्य संकेत है। हालांकि, यह शायद कई पूर्वी संस्कृतियों का हिस्सा नहीं है। इस तरह विभिन्न संस्कृतियों में 'सही दूरी' की अलग-अलग संकल्पनाएं हो जैसा कि उदाहरण द्वारा बताया गया है, हमें अप्रिय सामाजिक दुर्घटनाओं से बचने हेतु उस सीमा रेखा के बारे में मालूम होना चाहिए।

ग) **स्थान का जनसंख्या घनत्व** – वैयक्तिक स्थान एक अत्यधिक परिवर्तनशील अवधारणा है। जैसे हमारी संस्कृति इसे प्रभावित करती है, वैसे ही हमारे

अनुभव इसे आकार देते हैं। यदि हम मुंबई या जापान जैसे हावी आबादी वाले क्षेत्रों में रहते हैं, तो अधिक संभावना है कि हमारे पास एक बड़ा वैयक्तिक स्थान न हो। बढ़ती जनसंख्या ने अपने नागरिकों को विलासिता पूर्ण जिन्दगी कभी नहीं दी है और न ही दे सकती है, इसलिए उन्होंने अपने आसपास कम वैयक्तिक स्थान रखने हेतु अनुकूलित किया है। मंगोलिक एवं कनाडा के लोग, जहाँ बहुत अधिक स्थान मौजूद है अपने चारों और बड़ा स्थान रखने के आदि होते है, इसलिए उन्हें सुरक्षित महसूस करने के लिए उसी की जरूरत होने लगती है। मुंबई की भीड़-भाड़ वाली रेलगाड़ी में वे खुद को बहुत असहज महसूस करेंगे, जबकि मुंबई का एक नागरिक किताब पढ़ना जारी रख सकता है।

घ) **वैयक्तिक कारक** – उम्र, जेंडर, सामाजिक स्थिति, चिंता, असमान्यता, यहां तक कि एक संस्कृति या देश के भीतर, वैयक्तिक स्थान की मात्रा में भिन्नता होगी जिसे हमें सुरक्षित महसूस करने की आवश्यकता हैं। इसमें भूमिका निभाने वाले कुछ कारक हैं:

i) **जेंडर** – यह पाया गया है कि दो पुरुषों को दो महिलाओं की तुलना में उनके मध्य अधिक पारस्परिक दूरी की आवश्यकता होती है। गिफर्ड (1982) शामिल करते है कि यद्यपि महिलाएँ अधिक वैयक्तिक स्थान पसंद करती है, यह स्थिति, संबंध आदि पर भी निर्भर करती हैं।

ii) **आयु** – जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, स्थान की हमारी आवश्यकता बढ़ती जाती है। हेडुक 1983, बताते है कि बच्चों के मामले में हमें नजदीकियों से कोई फर्क नहीं पड़ता है। चूंकि लैंगिकता की संकल्पना उनके लिए अज्ञात है, इसलिए कोई खतरा नहीं माना जाता है। लेकिन जैसे-जैसे हम परिपक्वता की तरफ बढ़ते हैं हम अपनी लिंग भूमिकाओं की व्याख्या करते हैं तथा बड़े वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता विकसित होती है।

iii) **स्थिति** – वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता भी हमारे समाज में हमारी स्थिति से निर्धारित होती है। हम जितने समृद्ध और आर्थिक रूप से मजबूत हैं, हमें वैयक्तिक स्थान की उतनी ही आवश्यकता होती है। शक्तिशाली, अमीर लोग अधिक गोपनीयता और अनन्य स्थान चाहते हैं। एक व्यक्ति, जिसे चालक जलित कार में यात्रा करने की आदत है, भीड़-भाड़ वाले सार्वजनिक परिवहन में कठिनाई होगी।

iv) **साझा संबंध** – जैसा कि पहले देखा गया है, हमारी भावनाएं हमारे द्वारा साझा की जाने वाली पारस्परिक दूरी पर हावी होती है। हम अंतरंग तथा किसी के निकट तभी हो सकते हैं जब इस भावनात्मक रूप से बंधे हो। जितना अधिक हम किसी व्यक्ति को नापसंद करते है, उतनी ही अधिक पारस्परिक दूरी होगी।

v) **व्यक्तित्व** – हमारे वैयक्तिक लक्षण भी हमारे इर्द-गिर्द की जगह की मात्रा को प्रभावित करते है गिफर्ड (1982) ने पाया कि बर्हिमुखी एवं मिलने जुलने वाले व्यक्तियों को विनम्र एवं झगड़ालू व्यक्तियों की अपेक्षा कम वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता होती है। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन ने एक शोध में पाया कि चिंतित व्यक्तियों को अधिक पारस्परिक स्थान की जरूरत होती है क्योंकि उन्हें जल्द ही खतरा महसूस होने लगता है। शर्मिले, स्वलीनता और बन्द स्थान से डरने वाले लोगों को भी अधिक स्थान की जरूरत होती है। सोये (1959) ने बताया कि स्किजोफ्रेनिआ से ग्रसित लोग भी विशिष्ट एवं परिवर्तनशील वैयक्तिक स्थान दिखाते है। जब वे वापसी चरण में होते हैं तब वे अधिक दूरी चाहते हैं, लेकिन जब वे ध्यानाकंर्षित करने वाले चरण में होते हैं, तब वे निकटता चाहते हैं। दूरी एवं समस्या व्यवहार पर शोध से यह पाया गया है कि हिसंक अपराधी भी बड़ी पारस्परिक दूरी रखना पसंद करते है।

ङ) **परिस्थितिजन्य या स्थितिजन्य कारक** – वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता स्थिति के अनुसार एक ही व्यक्ति में भिन्न हो सकती है। जैसा कि हमने इकाई में पढ़ा है, कि भीड़-भाड़ में बहुत से लोग किराए या किसी विशेष फिल्म के प्रीमीयर में इधर-उधर दोड़ते हैं। थिएटर में सीट के दोनों और बैठे यात्रियों को बिना बड़बड़ाहट के स्वीकार किया जा सकता है। परन्तु अगर यह मुश्किल से भरा जाता है, तो कई सीटें खाली होती हैं और फिर भी दो लोग दूर की सीट पर बात कर रहे होते हैं तब भी गोपनीयता पर हमला हो सकता है। शोध से यह भी मालूम हुआ है कि हम अपने सामने या पीछे के बजाए उन सीटों पर कब्जा करने में अधिक सहज होंगे, अगर लोग हमारे तरफ हैं तो आगे या पीछे आने पर हम अचानक नाराज महसूस करते हैं। इसलिए वैयक्तिक स्थान बुलबुला अण्डाकार और स्थितिजन्य मालूम पड़ता है। टेडेस्को एवं फ्राम (1974) ने पाया कि यदि लोगों के पास कम पारस्परिक स्थान होता है, यदि वे प्रतिस्पर्धा ने भाग लेते हैं, तो इस कार्य में भाग लेते हैं जिसमें सहयोग की जरूरत होती है और उन्हें बहुत आवश्यक होती है।

च) **अपेक्षाएं एवं सामाजिक धारणा** – वैयक्तिक स्थान भी इस बात से तय होता है कि हम जिस व्यक्ति से मिलने जा रहे हैं, उसके बारे में हमारी क्या अपेक्षाएं हैं। उस व्यक्ति के बारे में सामाजिक धारणा हमारी पारस्परिक दूरी को भी प्रभावित करेगी। यदि हमारा दृष्टिकोण नकारात्मक है, तो हम दूर रहना पसंद करते हैं और अधिक वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता होती है। स्कोरजेन्स (1991) ने अपराधियों के कथित हिस्सा स्तर के संबंध में प्रतिभागियों के वैयक्तिक स्थान जाँच की जिनसे वे मिलने वाले ले। बताया गया है उनसे से एक हिंसक अपराधी है एवं इसका अहिंसक अपराधी है और तीसरे ने कभी किसी कानून का उल्लंघन नहीं किया है। परिणामों ने संकेत दिया कि प्रतिभागियों ने हिंसक अपराधी के साथ अधिकतम और गैर–अपराधी के साथ न्यूनतम स्थान रखा। क्लेक (1969) एवं वैरन (1978) ने भी इस शोध परिणाम का समर्थन किया। इस तरह यह स्पष्ट है कि पारस्परिक दूरी दूसरों के साथ हमारी बातचीत को विनियमित करने में भूमिका निभाती है और यह

साझा संबंधों का एक बहुत उत्तम संकेतक है। यह वैयक्तिक स्थान को व्यावसायिक अध्ययन का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू बनाता है क्योंकि अन्तःक्रिया जीवन में हमारे सभी सामाजिक अन्तःक्रियाओं का आधार है। चाहे वह हमारा खेल हो, आराम हो हम अधिक सफलता प्राप्त करेंगे यदि हम पारस्परिक दूरी के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं से अवगत है।

5.9.4 वैयक्तिक स्थान अध्ययन की विधियां

वैयक्तिक स्थान का अध्ययन करने की चार बुनियादी शोध विधियां हैं (ऐलो; 1987)।

1) **सतत अनुकरण विधियां** – इसमें व्यक्ति को एक काल्पनिक स्थिति में रखा जाता है कि वह कल्पना करे कि वह इसमें दूसरों के साथ किस प्रकार की बातचीत करेगा। कभी-कभी मॉडल या लघु प्रतीकात्मक आकृतियों का उपयोग उनके विचार को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है। आज कल कम्प्यूटर ग्राफिक्स का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह बालकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है लेकिन कृत्रिय प्रयोगशाला की स्थापना वास्तविक जीवन में व्यापक सामान्यीकरण की अनुमति नहीं देती है।

2) **अर्द्ध परियोजना या प्रयोगशाला विधियां** – इस विधि में, प्रयोग नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाता है तथा व्यक्ति खुद के शरीर का उपयोग अन्य व्यक्ति के संबंध में करता है। दूसरा व्यक्ति वास्तविक या काल्पनिक हो सकता है। उदाहरण के लिए स्टॉप– दूरी विधि व्यक्ति किसी व्यक्ति से तब तक सम्पर्क कर सकता है जब तक कि वह असहज महसूस न करने लगे। इसके अन्तर्गत एक अन्य विधि अन्तःक्रिया विधि हो सकती है जहाँ प्रयोगशालाओं में वास्तविक अन्तःक्रियाओं का प्रत्यक्ष विनीत अवलोकन किया जाता है। यद्यपि प्रयोगशाला पद्धति भ्रम से बचने हेतु प्रासंगिक चर को नियंत्रित करने की कोशिश करती है प्राकृतिक वातावरण में प्रयोगशाला परिणामों का सामान्यीकरण कठिन होता है।

3) **प्राकृतिक या क्षेत्र विधियां** – इस विधि में व्यक्तियों के मध्य दूरियों को प्राकृतिक परिस्थितियों में मापा जाता है। इस विधि को पारस्थितिक वैधता है जैसा कि प्राकृतिक वातावरण में किया जाता है। परन्तु इसमें कुछ अन्तर्निहित कमियां है जैसे हम नहीं जानते कि दोनों किस प्रकार के रिश्ते को साझा करते हैं, अन्य प्रासंगिक चर हस्तक्षेप कर सकते है, इसके अतिरिक्त किसी की गोपनीयता से हस्तक्षेप करने में नैतिक मुद्दे भी सम्मिलित हैं।

4) **प्रश्नावली विधि** – इस विधि में व्यक्तियों को एक स्थिति की कल्पना करनी होती है और मूल्यांकन करना होता है कि क्या वे उस स्थिति में असहज महसूस करते है। एक उदाहरण कम्फटेबिल इन्टर पर्सनल डिस्टेंस स्केल (सीआईडीएस) (डयूक एवं नौउची, 1972), जिस पर प्रतिभागियों को उस स्थिति का मूल्यांकन करना होता है, जिसमें वे असहज महसूस करते हैं जिसकी वे कल्पना कर रहे है। लेकिन संभावना है कि कोई व्यक्ति स्थिति को

न ही समझ सकता है या वह झूठ बोल सकता है। इस भांति, वैयक्तिक स्थान को मापने के विभिन्न प्रकार हैं और प्रत्येक का अपना सकारात्मक एवं संकेत होता है। चूंकि विषय बहुत ही वैयक्तिक नकारात्मक और संवेदनशील है इसलिए माप का कोई एक आदर्श तरीका नहीं है। लेकिन वे हमें यह समझने में सहायक होते हैं कि वैयक्तिक स्थान क्या हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

1) वैयक्तिक स्थान के चारों क्षेत्रों को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

2) वैयक्तिक स्थान का अध्ययन करने की एक विधि के रूप में सतत् अनुकरण विधि की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

3) वैयक्तिक स्थान में सांस्कृतिक कारकों की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

5.10 सारांश

इस इकाई के अन्तर्गत हमने जो कुछ भी सीखा है, उसे संक्षेप में बताने के लिए यहाँ त्वरित संक्षिप्तीकरण प्रस्तुत है –

- मनुष्यों में क्षेत्रीयता भौतिक स्थान, वस्तुओं तथा विचारों के नियंत्रण (आमतौर पर अहिंसक साधनों जैसे व्यवसाय, कानून, प्रथा तथा वैयक्तिकरण) से संबंधित व्यवहार और अनुभव का एक प्रतिरूप है।

- क्षेत्र प्रयोग और क्षेत्र अध्ययन व्यवहार का अध्ययन करने हेतु उत्तम साधन है, परन्तु क्षेत्र की अनुभूति का सबसे अच्छा अध्ययन साक्षात्कार एवं प्रश्नावली द्वारा किया जाता है।

- स्वामित्व, सकारात्मक सामाजिक वातावरण संसाधन प्रतिस्पर्धा, सामाजिक वर्ग और कार्य ऐसे सामाजिक कारक है जो क्षेत्रीयता को बढ़ाते प्रतीत होते है।

- वैयक्तीकरण, चिन्हन तथा प्रतिष्ठा का शारीरिक आक्रामकता की अपेक्षा अधिकतर अधिक उपयोग किया जाता है। क्षेत्रीयता के सिद्धांत इसके आयोजक क्रिया, व्यवहार व्यवस्थापन सिद्धांत और उद्विकास पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

- रचनाकारों को घरों, कार्यालयों, और संस्थानों के उत्तम निर्माण हेतु क्षेत्रीयता का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। समग्र लक्ष्य व्यक्तियों को ऐसे क्षेत्र प्रदान करना है जो उन्हें उतना ही नियंत्रण प्रदान करते हैं जितना वे जिम्मेदारी के साथ निभाने में सक्षम हैं और जैसा कि संगठनात्मक संदर्भ अनुमति देता है। क्षेत्र धारकों को आत्मनिर्णय, अस्मिता और शायद बचाव की अधिक भावना से लाभ होगा।

- वैयक्तिक स्थान एक व्यक्ति के आस-पास का क्षेत्र है जिसे मनोवैज्ञानिक रूप से अपना मानता है। यदि कोई शारीरिक रूप से अधिक नजदीक आता है तो उसे असहजता का अनुभव होता है। 1960 में, एडवर्ड हॉल ने 'प्रॉक्सिमिक्स' शब्द को उन तरीकों के संदर्भ में प्रस्तुत किया जिनमें व्यक्ति सामाजिक अन्तःक्रियाओं को विनियमित करने हेतु भौतिक स्थान का उपयोग करते है।

- वैयक्तिक स्थान के निर्धारकों में शारीरिक कारक, सांस्कृतिक कारक, जनसंख्या घनत्व तथा वैयक्तिक कारक जैसे– लिंग, आयु, प्रस्थिति, पसंद और व्यक्तित्व एवं स्थितिजन्य कारक शामिल हैं।

- गोपनीयता का तात्पर्य सूचना प्रबंधन या किसी के इर्द-गिर्द के सामाजिक सम्पर्क के विनियमन से है। वैयक्तिक स्थान का अध्ययन करने की मुख्य विधियां सतत् अनुकरण विधि, प्रयोगशाला विधि, प्राकृतिक या क्षेत्र विधियां एवं प्रश्नावली विधि हैं।

5.11 मुख्य शब्द

क्षेत्रीयता – इसका तात्पर्य क्षेत्रीय स्थिति से है अर्थात किसी विशेष क्षेत्र के लिए एक स्थायी लगाव। यह किसी क्षेत्र के बचाव से जुड़े व्यवहार के प्रतिमान को भी संदर्भित करता है।

समुदाय रचना – यह एक एकात्मक औद्योगिक या आवासीय समुदाय रचना है जो एक विशेष समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें पंजीकृत एवं अपंजीकृत दोनों रूप हैं।

वैयक्तिक स्थान – एक शारीरिक प्रतिरोधी क्षेत्र, जिसे व्यक्ति अपने एवं दूसरों के मध्य बनाये रखते हैं।

गोपनीयता – यह एक पारस्परिक सीमा प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति दूसरों के साथ वार्तालाप को नियंत्रित करते है।

5.12 समीक्षा प्रश्न

1) क्षेत्रीयता क्या है? इसे प्रभावित करने वाले कारक क्या है?

2) विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों का वर्णन करें।

3) क्षेत्रीयता के मापन की विवेचना करें। क्षेत्रीयता को मापने के लिए कौन-कौन सी विधियां हैं?

4) क्षेत्रीयता के तीन प्रमुखों सिद्धांतों को प्रस्तुत करें।

5) पड़ोस या अस्पताल बनाते समय हम किन महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखते हैं?

6) वैयक्तिक स्थान की अवधारणा का विस्तृत वर्णन करें।

7) क्या आपके विचार में क्षेत्रीयता आक्रामकता से संबंधित है?

8) वैयक्तिक स्थान एवं क्षेत्र में क्या अन्तर है?

9) वैयक्तिक स्थान के विभिन्न निर्धारकों की विवेचना कीजिए।

10) वैयक्तिक कारक वैयक्तिक स्थान से कैसे संबंधित है?

5.13 संदर्भ एवं अन्य पाठ्य सामग्री

Bonnes, M., & Secchiaroli, G. (1995). *Environmental Psychology: A Psycho-social Introduction*. Sage.

Brown, B. B. (1987): Territoriality, In D. Stokols & I. Altman (Eds.), Handbook of environmental psychology. New York: Wiley.

Gifford, R. (1997): Environmental Psychology Principle and Practice, Allyn and Bacon; MA 02194.

Malhotra, N. K. (2007). *Environmental Psychology: Principles and Practices*. Sumit Enterprises

Nagar, D. (2006). *Environmental Psychology*. Concept Publishing Company.

Moser, G. and Uzzell, DL (2003). 'Environmental Psychology', in Millon, T., & Lerner, M.J.(Eds.), Comprehensive Handbook of Psychology, Volume 5: Personality and Social Psychology, New York: John Wiley & Sons. pp 419 – 445.

Steg, L. E., Van Den Berg, A. E., & De Groot, J. I. (2013). *Environmental Psychology: An Introduction*. BPS Blackwell.

Taylor, R. B. (1988): Human territorial functioning: An empirical, evolutionary perspective on individual and small group territorial cognitions, behaviours, and consequences, New York Cambridge University Press.

Tewari, R. & Mathur, A. (2014). *Environmental Psychology*. Pointer Publishers

Berger, E., Israel, G., Miller, C., Parkinson, B., Reeves, A., & Williams, N. (2016). World History: Cultures, States, and Societies to 1500.

Taylor, R. B., Gottfredson, S. D., & Brower, S. (1981). Territorial cognitions and social climate in urban neighborhoods. Basic and Applied Social Psychology, 2(4), 289-303.

Sommer, R. (1987). Crime and vandalism in university residence halls: A confirmation of defensible space theory. Journal of Environmental Psychology, 7(1), 1-12.

Ruback, R. B., Pape, K. D., & Doriot, P. (1989). Waiting for a phone: Intrusion on callers leads to territorial defense. Social Psychology Quarterly, 232-241.

5.14 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

SKYLINE | Prevention through Design (substack.com)
https://www.jstor.org/stable/2786718
accounts.pdf (jthomasniu.org)

Trade and reciprocity among the River Bushmen of northern Botswana on eHRAF World Cultures (yale.edu)

Newman, Oscar: Defensible Space Theory (udayton.edu)

http://djjr-courses.wdfiles.com/local--files/soc153:space-and-everyday-life/Notes%20on%20Sociology%20and%20Space.pdf

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY